लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–9

इल पैन्टामिरोन–3

जियामबतिस्ता बासिले

1634–36

अंग्रेजी अनुवाद सर रिचर्ड बरटन – **1893**

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series No-9
Book Title: Il Pentamerone Ki Kathayen (Tales of Il Pentamerone)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Italy

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5

इल पैन्टामिरोन–3 7

1 1–1 गुल की कहानी 9

2 1–10 बुढ़िया की खोज 24

3 2–8 नौजवान दासी 42

4 2–9 ताला 54

5 2–10 दोस्त 64

6 3–2 हाथकटी पैन्टा 75

7 3–3 चेहरा 96

8 3–4 भूखी सैपिया 115

9 3–5 बड़ी जूँ, चूहा और मकड़ा 127

10 3–6 लहसुन का जंगल 146

11 3–9 रोज़ैला 157

12 3–10 तीन परियाँ 172

13 4–2 दो भाई 191

14 4–4 सूअर के माँस के सात टुकड़े 213

15 4–6 तीन ताज 226

16 4–10 घमंडी को सजा 245

17 5–1 बतख 259

18 5–6 बुद्धिमान स्त्री 268

19 5–7 पाँच बेटे 278

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

इल पैन्टामिरोन–3

लोक कथाओं के इतिहास में तीन मुख्य काल हैं – प्राचीन काल, मध्यकाल और आधुनिक काल।[2] मध्य काल में लिखी गयी तीन पुस्तकें बहुत मशहूर हैं – इल डैकामिरोन–1351, स्ट्रापरोला की रातें–1550–1553, इल पैन्टामिरोन–1634–1636। तीनों इटली के लेखकों ने लिखीं थीं। इसी समय में छपाई भी शुरू हुई सो ये तीनों पुस्तकें लिखने के बाद ही छप गयीं पर दुर्भाग्य से इनका अनुवाद करने में कुछ समय लग गया। इन पुस्तकों का जब तक अंगेजी में अनुवाद नहीं किया गया ये दुनियाँ में नहीं फैल पायीं।

इल पैन्टामिरोन प्रकाशित होने वाली पुस्तकों में तीसरी सबसे पुरानी पुस्तक है। अपनी इस "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" की पुस्तकों को हिन्दी में अनुवाद करने में यह नवीं पुस्तक आपके हाथों में प्रस्तुत है। ये कथाऐं इटली में इटली के एक कवि और दरबारी ने लिखी थीं। ये लोक कथाऐं अरेबियन नाइट्स की कहानियों की शैली पर आधारित है।

इसके लेखक हैं जियामबतिस्ता बासिले और इन्होंने इसको नैपिल्स में नैपोलिटन भाषा में 17वीं सदी में यानी 1634–1636 में लिखा था। ये एक दरबारी और कवि थे। इसकी भाषा ने इसको दुनियाँ से 200 साल तक छिपा कर रखा। इसमें 50 कहानियाँ हैं जिन्हें 10 स्त्रियों ने 10–10 कहानियाँ 5 दिनों तक रोज सुनायी हैं। दुर्भाग्य से ये कथाऐं उनके जीवन काल में प्रकाशित नहीं हो सकी थीं। उनकी मृत्यु के बाद में इनको उनकी बहिन ने प्रकाशित करवाया। इनकी सारी कहानियों का अंग्रेजी अनुवाद एक साथ नहीं मिलता।

परियों की कथाओं के नाम से तो बहुत सारी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं पर केवल यही एक पुस्तक ऐसी है जिसकी सारी कहानियाँ इस श्रेणी में रखी जा सकती हैं और यह ऐसी कहानियों का पहला संग्रह है। ग्रिम ब्रदर्स[3] जिनका नाम कहानियों की दुनियाँ में बच्चा बच्चा जानता है उन्होंने भी इस संग्रह को पहला परियों की कहानियों का संग्रह बताया है और इसकी भूरि भूरि प्रशंसा की है। यह संग्रह दुनियाँ में बहुत दिनों तक सबसे अच्छा संग्रह माना जाता रहा था।

इसका पहला अनुवाद जर्मन भाषा में 1846 में हुआ था। फिर इसके दो अनुवाद अंग्रेजी में हुए। एक अनुवाद सन् 1847 में जौन ऐडवर्ड टेलर ने किया जिसमें उन्होंने 32 बेतरतीबवार चुनी हुई कथाऐं दीं। इसके अलावा इसमें केवल कथाऐं ही हैं। दूसरा अनुवाद 1893 में सर रिचर्ड फ्रान्सिस बरटन[4] ने किया जिसमें इस पुस्तक की सारी कथाऐं हैं और पूरी हैं। इसका तीसरा अनुवाद इटैलियन भाषा में 1925 में हुआ। उसके बाद इटैलियन भाषा के अनुवाद से एक और अनुवाद अंग्रेजी में 1934 में नौरमैन एन पैनज़र[5] ने किया। फिर एक नया अनुवाद अंग्रेजी में 2007 में वेन स्टेट यूनिवर्सिटी अमेरिका ने प्रकाशित किया। इसके बाद इसको पैनगुइन बुक्स ने इसे 2017 में प्रकाशित किया। हमारा यह अनुवाद 1893 में सर रिचर्ड बरटन द्वारा किये गये अंग्रेजी अनुवाद से लिया गया है।

हिन्दी में इसका यह पहला अनुवाद है।

---

[2] Read a brief history of folktales of the world at : http://www.sushmajee.com/folktales/1-introduction.htm

[3] Grimm Brothers

[4] Sir Richard Francis Burton. "Il Pentamerone". London : Henry & Co. 1893. 2 vols. Available at : https://burtoniana.org/books/1893-Pentamerone/burton-1893-Pentamerone-2in1-fixed.pdf

[5] Norman N Penzer, 1934.

इस पूरे कहानी संग्रह का लोक कथाओं या परियों के कहानी संग्रहों मे बहुत बड़ा महत्व है। वह ऐसे कि जब तुम ये कहानियॉ पढ़ोगे तो तुम्हें हर कहानी पढ़ कर यही लगेगा कि "अरे ऐसी कहानी तो हमने पढ़ी है।" इस प्रकार यह कहानी संग्रह आने वाले कहानीकारों के लिये एक आधार बना और बहुत सारी कहानियॉ इन कहानियों के आधार पर लिखी गयीं।

इन कहानियों की एक खासियत और है वह यह कि इसकी हर कहानी उस कहानी के एक बहुत ही छोटे से परिचय से शुरू होती है और एक कहावत से खत्म होती है। हमें कहानी कहने वाले का नाम नहीं पता चल सका है क्योंकि टेलर ने उसे कहीं दिया हुआ ही नहीं है।

इसकी दूसरी खासियत है इसके अंग्रेजी रूप में इसकी भाषा बहुत ही सुन्दर है जिसमें कई नयी कहावतें कई नयी उपमाऐं और किसी बात को कहने के कई नये ढंग मिलते हैं जिनसे कहानी की शैली में चार चॉद लग जाते हैं। यह कहानी को थोड़ा सा साहित्यिक रूप देने में सहायता करती है। पर इसके साथ ही एक बात और ध्यान देने योग्य है कि इन कहानियों की बहुत सारी उपमाऐं और रूपक और कहावतें हमारे भारत के ऐसे अलंकारों से बहुत ही भिन्न हैं और भारतीयों के लिये अनजाने हैं इसलिये उन्हें समझने की आवश्यकता नहीं है उसे भाषा और संस्कृति का भेद समझ कर स्वीकार कर लेना चाहिये।

इस विषय में हम एक बात और कहना चाहेंगे। विकीपीडिया में पैन्टामिरोन की सारी कहानियों की लिस्ट मिलती है। वही लिस्ट हमने यहॉ इस पुस्तक में सबसे पीछे दे रखी है। टेलर ने इस पुस्तक से केवल **32** कथाऐं अनुवाद की हैं जो उन्होंने बीच बीच में से चुनी हैं। इस पुस्तक के पहले दो भाग हम पहले ही प्रकाशित कर चुके हैं जिनमें उसकी **16–16** कहानियॉ दी गयी थीं। क्योंकि उस पुस्तक में उसकी केवल **32** कहानियॉ ही दी गयी थीं इसलिये उसकी शेष **18** कहानियों के लिये हमें उसका यह तीसरा भाग और बनाना पड़ा है जिसमें उसकी शेष **18** कहानियॉ दी जा रही हैं — "इल पैन्टामिरोन की कथाऐं–**3**"। ये कथाऐं सर रिचर्ड बरटन की अनुवाद की हुई पुस्तक से ली गयी हैं। इस तरह से इसकी सारी **50** कहानियॉ तीन पुस्तकों में दी गयी हैं।

इन कहानियों का शीर्षक देते समय दो नम्बर दिये गये हैं। एक तो कहानी का सामान्य नम्बर जैसे **1 2 3 4** आदि। और दूसरा नम्बर दिन का नम्बर और कहानी का नम्बर बताता है जैसे **4–5**। इसमें **4** नम्बर दिन का है और **5** नम्बर पॉचवीं कहानी का। इसलिये यह नम्बर ऐसे लिखा हुआ है — **9 1–9**। यानी इस पुस्तक कीं यह कहानी नवीं कहानी है जबकि पैन्टामिरोन में यह कहानी पहले दिन नवीं कहानी सुनायी गयी है।

आशा है कि लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें की सीरीज़ में **386** साल पुरानी यह पुस्तक आपको हिन्दी में पढ़ कर बहुत अच्छा लगेगा। तो लीजिये पढ़िये इटली की ये पुरानी लोक कथाऐं अब पहली बार हिन्दी में। इस पुस्तक में राजकुमारी ज़ोज़ा का नाम ज़ीज़ा दिया हुआ है।

सुषमा गुप्ता
2022

1 1–1 गुल की कहानी[6]

क्योंकि मैरेगलियानो का ऐन्टोनी हॅसोड़ और कुछ बेवकूफ किस्म का था सो उसकी मॉ ने उसको बाहर निकाल दिया था। उसने एक गुल की सेवाऐं लीं। गुल की इच्छा के अनुसार वह उसके घर गया तो वहॉ उसका उसके पैरों के तलवों की पीट पीट कर अच्छी तरह से स्वागत किया गया। एक सराय के मालिक से लड़ने के बाद आखिर उसको एक डंडा दिया गया जिसने उसे उसकी अज्ञानता को सजा दी और सराय के मालिक को उसकी चाल की सजा दी। इस तरह से उसने खुद को और अपने परिवार को अमीर बनाया।

जो यह कहते हैं कि किस्मत अन्धी होती है वे यह ठीक ही कहते हैं क्योंकि वह कुछ ऐसे लोगों को तो इतनी ऊपर उठा देती है कि जिनको बीन्स के खेत से धक्का मार कर बाहर कर देना चाहिये और जो बहुत अच्छे हैं उनको उठा कर जमीन पर फेंक देती है। जैसा कि अब मैं आपको बताने जा रही हूॅ।

ऐसा कहा जाता है कि एक बार मैरेगलियानो देश[7] में मसैला नाम की एक भली स्त्री रहती थी। जिसके छ कुॅआरी बेटियॉ थीं और एक बेटा था जो एक आलसी और हॅसोड़ किस्म का था। इतना कि उसको तो बर्फ के खेल खेलने भी नहीं आते थे।

कोई दिन ऐसा नहीं जाता था जिस दिन उसकी मॉ उसे यह न कहती हो कि "तू घर में ही क्यों बैठा रहता है और रोटी तोड़ता रहता है। जा ओ आलसी। गन्दे मैकाब्यूस[8]। नींद उड़ाने बाले। इधर उधर बुरी खबरें ले जाने वाले। चेस्टनट को उबालने वाले।

---

[6] The Story of the Ghul. Tale No 1 (Day 1, Diversion 1) Told by Zeza

[7] Massella Hight lived in Maregliano country

[8] Macabeus

लगता है कि तुझे मेरे लिये किसी ने पालने में ही बदल दिया होगा। क्योंकि उसने किसी सुन्दर से प्यारे से बच्चे को रखने की बजाय इस सूअर के बच्चे को रख दिया।"

जब मसैला उसको ऐसा बोलती थी तो वह सीटी बजाता रहता था। वह यह दिखाता रहता था कि अब कोई आशा नहीं है कि ऐन्टोनी[9] का दिमाग कुछ ठीक हो जायेगा।

ऐसे ही दिनों में से एक दिन ऐसा हुआ कि उसकी मॉ ने बिना साबुन के उसका सिर धोया और एक डंडी ले कर उसे बहुत पीटा।

ऐन्टोनी को उस समय इसकी बिल्कुल आशा नहीं थी। जब वह काफी पिट गया तो जैसे ही उसको उसके हाथों से वहॉ से बच निकलने का मौका मिला वह वहॉ भाग लिया और चौबीस घंटे भागता ही रहा जब तक तारे नहीं निकलने लगे।

उस समय वह एक ऐसे पहाड़ की तलहटी में पहुॅच गया था जो

इतना ऊॅचा था कि उसकी चोटी बादलों को छू रही थी। वहॉ एक पोपलर के पेड़ों की एक कतार लगी थी जिसके शुरू में ही झॉवे के पत्थर[10] के बने हुए मकान में एक गुल[11] बैठा हुआ था।

ओ मेरी मॉ। वह कितना भयंकर था। उसका सिर तो किसी हिन्दुस्तानी काशीफल से भी बहुत बड़ा था।

[9] Antony – name of the son

[10] Translated for the words "Pumice stone". This stone is very light and can float on the water.

[11] Ghul is a Rakshas type species. They eat human beings

उसके सारे माथे पर बड़े बड़े गूमड़े पड़े हुए थे। उसकी भौंहें आपस में जुड़ी हुई थीं। उसकी ऑखें टेढ़ी थीं। उसकी नाक चौरस थी। उसके नथुने गुफा की तरह से थे। और उसका मुॅह एक ओवन की तरह था जहॉ से उसके दॉ दॉत सूअर के दॉतों की तरह से बाहर की तरफ को निकले हुए थे।

उसकी छाती पर बहुत बाल थे। उसकी बॉहें धागे की रील जैसी थीं। उसकी टॉगें झुकी हुई थीं। वह बतख की तरह से चौरस पैरों वाला था। थोड़े में कहो तो वह एक भयानक राक्षस था जिसे देखने से ही डर लगता था।

वह रोलैंड[12] की तरह से मुस्कुराता था। वह भयानक से भयानक को भी डरा सकता था। पर ऐन्टोनी को उसकी बदसूरती की या किसी और चीज़ की भी कोई परवाह नहीं थी सो उसने उसके अपना सिर थोड़ा सा झुका कर उससे कहा — "गुड डे मालिक। आप यहॉ क्या कर रहे हैं। आप कैसे हैं। आपको कुछ चाहिये। यहॉ से वह जगह कितनी दूर है जहॉ मुझे जाना है।"

गुल ऐसी बेवकूफी भरे सवाल सुन कर बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा। और क्योंकि वह उस हॅसोड़ जीव से ऐसी बात सुन कर बहुत ही खुश हो गया सो उसने पूछा — "मेरे लिये काम करोगे।"

ऐन्टोनी ने पूछा — "और तुम मुझे हर महीने क्या दोगे।"

---

[12] Roland : a legendary hero famous for his strength, courage, and chivalrous spirit who appears in the *Chanson de Roland* and other stories of the Charlemagne cycle.

गुल बोला — “ध्यान रखना वफादारी से मेरी सेवा करना तो मजदूरी के बारे में हमारी कोई लड़ाई नहीं होगी।”

यह सौदा होने पर ऐन्टोनी उस गुल की सेवा करने के लिये वहीं रह गया। अब उसके पास खाने को तो बहुत था और काम कुछ नहीं था सो चार दिनों में ही ऐन्टोनी की हालत इतनी अच्छी हो गयी कि वह तुर्क जैसा तन्दुरुस्त हो गया बैल की तरह से गोल हो गया शिकारी मुर्गे की तरह से बहादुर हो गया लौब्सटर की तरह से लाल हो गया लहसुन की तरह से हरा हो गया और व्हेल मछली की तरह से चौरस हो गया।

पर दो साल बाद ही वह अपनी इस खुश खुश ज़िन्दगी से तंग आ गया। वह अब दुखी रहने लगा। उसके दिल को तकलीफ होने लगी। वह घर के बारे में सोचता रहता और उसकी यह इच्छा उसको उसकी पुरानी हालत में ले आयी।

गुल ने जो उसका दिमाग केवल उसकी नाक को देख कर और उसके पीछे के हिलने से ही पढ़ सकता था उसको अपने पास बुलाया और कहा — “मेरे ऐन्टोनी। मैं देख रहा हूॅ कि अपने लोगों को देखने की इच्छा में तुम कुछ बीमार होते जा रहे हो और क्योंकि मैं तुम्हें अपने बच्चे की तरह से प्यार करता हूॅ तो मैं तुम्हें तुम्हारे घर जाने की इजाज़त देता हूॅ। खुश रहो।

मैं तुम्हें यह गधा देता हूँ जो तुम्हें यात्रा में थकने से बचायेगा। पर इस बात का खास ध्यान रखना कि तुम इससे यह कभी मत कहना "अर्से शिट"[13] वरना मेरे बाप दादों की कसम तुम बहुत पछताओगे।"

ऐन्टोनी ने गधा लिया और बिना नमस्ते किये ही वह वहाँ चल दिया। उसने अपनी जीन अपने गधे पर कसी उस पर बैठा और चल दिया।

वह अभी 100 गज भी नहीं गया था कि उसने गधे से उतर कर उससे कहना शुरू कर दिया "अर्से शिट"। जैसे ही उसने अपना मुँह खोला कि गधे ने अपने पिछवाड़े से मोती लाल हीरे निकालने शुरू कर दिये। उन सबका साइज़ एक अखरोट जैसा था।

ऐन्टोनी तो मुँह फाड़े यह आश्चर्य देखता का देखता रह गया। गधे के इस तरह जवाहरात बाहर निकालने से वह बहुत खुश हुआ। उसने अपने थैले निकाले और उन्हें उनसे भरना शुरू कर दिया। उन्हें भर कर वह फिर से गधे पर चढ़ा और फिर आगे चल दिया।

शाम तक वह एक सराय में आया। वहाँ आ कर पहली बात उसने सराय के मालिक से यह कही कि "इस गधे को बाँधने की जगह ले जाओ और देखो इसे बहुत अच्छी तरह खाना खिलाना। पर ध्यान रखना भूल कर भी इससे "अर्से शिट" नहीं कहना वरना

---

[13] "Arse Shit"

तुम बहुत पछताओगे। और हॉ ये मेरी चीज़ें कहीं सुरक्षित जगह रख देना।"

सराय के मालिक भी चालाकी में कम नहीं था। जब उसने थैलों में चमकते हुए जवाहरात देखे तो उसकी उत्सुकता बढ़ गयी। वह अब उन शब्दों का मतलब जानने के लिये उत्सुक हो गया जिनको ऐन्टोनी ने उसे कहने के लिये मना किया था।

सो उसने ऐन्टोनी का बहुत सारा खाना खिलाया और बहुत सारी शराब पिलायी। फिर तब तक इन्तजार किया जब तक वह गहरी नींद सो न जाये।

उसके सोते ही वह गधा बॉधने की जगह गया और बोला "अर्से शिट"। जैसे ही उसने यह कहा गधे ने फिर से जवाहरात निकालने शुरू कर दिये।

इस बात ने उसको यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि वह ऐन्टोनी को आसानी से बेवकूफ बना सकता था। वह लालटेन की जगह एक जुगनू को ले सकता है। वह बहुत सीधा है जो आज उसके हाथ लग गया है। सो वह इस गधे से कोई दूसरा गधा बदल कर ऐन्टोनी को बेवकूफ बना दे।

जब सुबह होने को थी पूर्व की खिड़की पर लाली छायी तो जैसे ही ऐन्टोनी सो कर उठा उसने सराय के मालिक को पुकारा — "इधर आओ दोस्त। छोटा हिसाब और लम्बी दोस्ती। हम लोग दोस्त हैं। तुम मुझे मेरे पैसे बताओ ताकि मैं उन्हें तुम्हें दे सकूँ।"

और यह हो गया – इतना रोटी का, इतना शराब का, इतना सूप का, इतना मॉस का, पॉच गधे को रखने का और दस बिस्तर का और पन्द्रह धन्यवाद के लिये। उसने अपने पैसे दिये और गधे को झॉवे के पत्थरों से लदा ले कर वह अपने घर की तरफ चल दिया।

घर में घुसने से पहले ही वह चिल्ला कर बोला — "मॉ जल्दी आओ जल्दी आओ। हम अमीर हो गये। तौलिये बिस्तर की चादरें ले कर आओ मॉ और खजाना देखो।

यह सुन कर मॉ बड़ी खुशी से बाहर आयी। वह अपना वह बक्सा खोल आयी थी जिसमें वह अपनी बेटियों के बिस्तरों की चादरें रखती थी और उनको उनमें से बाहर निकाल कर जमीन पर बिछा आयी थी।

ऐन्टोनी अपना गधा वहॉ तक लाया और चिल्लाया "अर्रे शिट"। पर उसने यह कितनी ही बार कहा पर गधे ने कोई जवाहरात निकाल कर नहीं दिये। लगता था जैसे कि गधे ने उन शब्दों पर कोई ध्यान ही नहीं दिया। जैसे उसके कानों में केवल संगीत बज कर रह गया हो। ऐन्टोनी ने कई बार वे शब्द कहे पर जैसे वे हवा में उड़ गये हों।

उसको लगा कि गधा जिद्दी हो गया है सो उसने एक लम्बी सी डंडी उठायी और उसको उससे मारना शुरू कर दिया और उसे इतना

मारा कि बेचारे ने उसकी नीचे बिछी हुई सफेद चादर ही खराब कर दी।

नाखुश मसैला ने जब गधे का यह हाल देखा तब तक उसकी बू तो सारे घर में फैल गयी थी जबकि वह यह आशा कर रही थी कि वह अमीर हो जायेगी। इससे उसको बहुत गुस्सा आ गया। उसने भी एक डंडा उठाया और झॉवे के पत्थरों को देखे बिना ही उससे ऐन्टोनी को मारना शुरू कर दिया।

अपना यह स्वागत देख कर ऐन्टोनी फिर से वहॉ से भाग लिया। गुल ने जब उसे उससे भी ज़्यादा बदहवास भागते हुए आते देखा जितनी तेज़ कि वह वहॉ से भाग कर गया था तो वह समझ गया कि क्या हुआ होगा क्योंकि वह तो एक जादूगर[14] था। उसने उसको बहुत डॉटा।

उसने खुद ने सराय के मालिक के मन में उस गधे को बदलने की इच्छा जगायी थी। उसने ऐन्टोनी को अस्काडियो[15], बेवकूफ, सीधा, भद्दा, और बिना दिमाग का कहा कि एक खजाने वाले गधे के लिये उसने गोबर वाले गधे को ले लिया।

ऐन्टोनी को यह कड़वी गोलियॉ निगलनी पड़ीं। उसने कसम खायी कि अब वह कभी भी लोगों को अपने ऊपर हॅसने का मौका नहीं देगा।

---

[14] Translated for the word “Sorceror”

[15] Ascadeo

एक साल बीत गया तो उसके दिल में फिर एक बार अपने घर वालों से मिलने की इच्छा पैदा हुई। गुल ऐसे तो किसी के ऊपर कृपा नहीं करता था पर वह दिल का बहुत अच्छा था। उसने उसको फिर से घर जाने की इजाज़त दे दी।

अबकी बार घर जाते समय उसने एक बहुत सुन्दर रूमाल दिया और कहा — "लो तुम इसको अपनी माँ के लिये ले जाओ। अबकी बार इसकी देखभाल ठीक से करना और सीधे मत बने रहना जैसे तुम पिछली बार गधे के साथ बने रहे थे।

और जब तक तुम अपने घर न पहुँच जाओ तब तक ध्यान रखना कि तुम यह नहीं कहना "ओ रूमाल बन्द हो जा और खुल जा"। क्योंकि इससे तुम्हारे ऊपर कोई बड़ी मुसीबत आ सकती है। और फिर जो भी नुकसान होगा वह तुम्हारा ही होगा। अब जाओ। जल्दी से चले जाओ और जल्दी ही वापस लौट कर आओ।"

इस तरह से ऐन्टोनी उससे विदा ले कर अपने घर की तरफ चल दिया। पर वह गुफा से ज़्यादा दूर नहीं गया था कि उसने वह रूमाल जमीन पर बिछाया। वह तो देखने में ही बहुत सुन्दर लग रहा था। फिर वह बोला "ओ रूमाल बन्द हो जा और खुल जा"। रूमाल ने तुरन्त ही बहुत आश्चर्यजनक चीज़ें प्रगट कर दीं।

जब ऐन्टोनी ने कहा "बन्द हो जा रूमाल" तो सब कुछ उसी में बन्द हो गया। जाते समय वह फिर से उसी सराय में रुका। वहाँ पहुँचने पर उसने वह रूमाल सराय के मालिक को दिया और कहा

कि वह उसे सँभाल कर रख दे। और भूले से भी यह न कहे कि “ओ रूमाल बन्द हो जा और खुल जा”।

होशियार मेजबान जो एक दो बातें जानता था बोला — “ठीक है मैं यह काम आपके लिये कर देता हूँ।”

उसने उसको पहले की तरह से खूब खाना खिलाया खूब शराब पिलायी और उस पर तब तक नजर रखी जब तक वह गहरी नींद सो नहीं गया। फिर उसने रूमाल उठाया और बोला “ओ रूमाल बन्द हो जा और खुल जा” तो उसके सामने बहुत सारी कीमती चीज़ें प्रगट हो गयीं। वे तो देखने में ही बहुत अच्छी लग रही थीं।

पहले की तरह से उसने वह रूमाल अपने पास रख लिया और दूसरा एक मामूली वैसा ही रूमाल उसके लिये रख दिया।

जब ऐन्टोनी सुबह को उठा तो उसने अपने मेजबान को धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चला गया। वह घर आया और आ कर बोला — “इस बार माँ हमारी गरीबी जरूर दूर हो जायेगी। हमारी सब जरूरतों की दवा हमारे पास है।”

इतना कह कर उसने रूमाल निकाल कर नीचे बिछा दिया और बोला “ओ रूमाल बन्द हो जा और खुल जा”। पर कुछ नहीं हुआ रूमाल ने कुछ भी नहीं दिया। उसने कितनी ही बार कहा पर रूमाल से फिर भी कुछ भी प्रगट नहीं हुआ।

जब उसने देखा कि उसकी सब कोशिशें बेकार जा रही हैं तो वह अपनी माँ से बोला — “मुझे लगता है कि उस सराय के मालिक

ने मुझे फिर से बेवकूफ बनाया है। पर चिन्ता मत करो। मैं और वह हम दो हैं। उसके लिये यही अच्छा होगा कि वह अबकी बार ऐसा न करे। उसके लिये यही अच्छा होगा कि वह किसी गाड़ी के पहिये के नीचे आ जाये।

भगवान करे कि जब मैं उधर से निकलूँ तो अगर मैं अपने जवाहरात देने वाले गधे और कीमती चीज़ें देने वाले रूमाल के बदले में उसकी सारी चीज़ें तहस नहस न कर दूँ तो मैं अपने घर का सबसे अच्छा फर्नीचर खो दूँ"

माँ ने जब उसकी यह दूसरी नयी बेवकूफी की बात सुनी तो वह और गुस्सा हो गयी और बोली — "ओ बेवकूफ लड़के जल्दी से भाग जा। अपनी गर्दन तोड़ और जा यहाँ से। तू यहाँ से एकदम चला जा इस घर के बारे में बुरा नहीं सोचना यह घर बिल्कुल ठीक है। मैं अपने कपड़ों से इसकी धूल झाड़ दूँगी और सोचूँगी कि मैंने तुझे कभी जन्म ही नहीं दिया।"

इस तरह ऐन्टोनी के साथ जब बुरा व्यवहार किया गया तो उसे उसमें बिजली की चमक दिखायी दी। उसने गरज का इन्तजार नहीं किया। उसने चोर की तरह अपनी गर्दन झुकायी और गुल के घर की तरफ चल दिया।

गुल ने देखा कि इस बार ऐन्टोनी असाधारण रूप से चुप था तो उसने उसको बहुत ज़ोर से डाँटा — "मुझे नहीं मालूम कि मैं तुझे

मार क्यों नहीं पाता ओ गधे, जानवर, घाव, मुँह से बदबू निकालने वाले, सड़े हुए गले तू अपने मुँह में एक बीन भी नहीं रख सकता।

अगर तू सराय में न बोला होता तो यह सब कुछ भी न होता। पर अगर तेरी हवा की चक्की की तरह से जबान होती तो आज तू मैंने जो चीज़ें तुझे दी थीं उनसे खुशियाँ मना रहा होता।"

अभागा ऐन्टोनी अपनी पूँछ अपनी टाँगों के बीच में दबा कर यह सब सुन रहा था। इसके बाद वह गुल के यहाँ तीन साल तक और रहा। यहाँ वह एक ऐसे मकान में रहता था जो किसी अर्ल[16] के लिये होना चााहिये था।

पर यह समय भी आखिर खत्म हुआ जिसके अन्त में उसके फिर लगने लगा कि अब उसे अपने घर जाना चाहिये। उसने फिर अपने मालिक से इस बारे में पूछा तो इस बार भी इसे मालिक ने जाने की इजाज़त दे दी।

पर इस बेअक्ल से बचने लिये इस बार उसने उसे बहुत अच्छी कटी हुई गदा दे दी और कहा — "लो यह एक गदा इसे मेरी याद में बहुत अच्छी तरह से रखना। इससे भूल कर भी यह नहीं कहना "ओ गदा ऊपर उठ" या "ओ गदा लेट जा" क्योंकि मैं तुझसे अलग होना नहीं चाहता।"

ऐन्टोनी ने वह भेंट उससे ली और बोला — "आप निश्चिन्त रहिये अब मेरे अक्ल के दाँत निकल आये हैं। अब मुझे पता है कि

---

[16] Earl is higher status in Imperial society

तीन बैलों से कितने जोड़े बनते हैं। अब मैं बच्चा नहीं हूँ। अब तो जो कोई ऐन्टोनी को धोखा देना चाहता है वह अपनी कोहनी चूम कर दिखाये।"

यह सुन कर गुल बहुत खुश हुआ — "काम करने वाले का काम उसकी प्रशंसा करता है। शब्द स्त्री लिंग होते हैं और काम पुल्लिंग। हम इन्तजार करते हैं और देखते हैं। तूने मुझसे एक बहरे आदमी की तरह बहुत कुछ सुन लिया है। जिस आदमी को पहले ही चेतावनी मिल जाती है वह आदमी पहले ही तैयार हो जाता है।"

जब उसके मालिक ने इस तरह बोलना शुरू किया तो ऐन्टोनी अपने घर की तरफ चल दिया। पर वह अभी आधा मील दूर भी नहीं गया होगा कि वह उस गदा से बोला — "ओ गदा ऊपर उठ।"

पर अच्छा होता कि उसने ये शब्द न कहे होते। यह सुन कर गदा तुरन्त ही ऊपर उठी और उसने ऐन्टोनी को उसके कन्धे पर मारना शुरू कर दिया। और इतनी जल्दी जल्दी मारा कि आसमान से तूफान में ओले भी नहीं बरसते।

बदकिस्मत आदमी ने इस तरह अपने आपको पिटते देख कर गदा से कहा "ओ गदा लेट जाओ।" वह गदा लेट गयी और उसने ऐन्टोनी को मारना बन्द कर दिया।

इस तरह अपने खर्चे पर यह सीख सीखने के बाद उसने मन में सोचा "भगवान करे कि वह लॅगड़ा हो जाये जो इससे बच कर

भागना चाहे। अब मैं इस गदा को एक पल के लिये भी नहीं छोड़ूँगा तो भी जिसको अपनी शाम बुरी बितानी होगी वह इसको नहीं ले पायेगा।"

ऐसा सोचते हुए वह अपनी पहले वाली सराय में आ पहुँचा। यहाँ उसका पहले की तरह से बहुत ज़ोर शोर से स्वागत हुआ।

जैसे ही ऐन्टोनी सराय में घुसा उसने सराय के मालिक से कहा — "लो यह गदा लो और ज़रा इसको किसी सुरक्षित जगह रख दो। और ध्यान रखना कि इससे यह कभी नहीं कहना कि "ओ गदा उठ जाओ" कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी मुसीबत में फँस जाओ।

ठीक से समझ जाओ जो मैं तुमसे कह रहा हूँ। उसके बाद तुम्हारा क्या होगा उसके लिये बाद में मुझे दोष मत देना। मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ और सलाह भी दे रहा हूँ।"

सराय का मालिक इस तीसरी चीज़ को जाँचने के लिये बहुत उत्सुक था। उसने उसके लिये बहुत बढ़िया खाना शराब आदि भेजी और जैसे ही उसने देखा कि वह खा पी कर गहरी नींद सो गया उसने गदा उठायी और बोला "ओ गदा उठ जाओ"।

जैसे ही उसने यह कहा कि गदा उठी और उसने आदमी और उसकी पत्नी के कन्धों पर बिजली की सी तेज़ी के साथ मारना शुरू कर दिया। अपने को इस खराब दशा में पा कर वे "ऐन्टोनी ऐन्टोनी" चिल्लाते हुए भागे। उनके साथ साथ उनको मारती हुई गदा भी भागी।

ऐन्टोनी जब जागा तो उसने देखा कि मैकेरोनी तो चीज़ में गिर गयी है और बन्द गोभी घी में गिर गयी है इसलिये बोला — "अब इसका तो कोई उपाय नहीं है। अब जब तक आप मुझे मुझसे चुरायी हुई चीज़ें मुझे वापस नहीं करेंगे आप लोग इसकी मार से तो मर ही जायेंगे।"

सराय के मालिक ने अब तक काफी मार खा ली थी सो बोला — "तुम मेरा सब कुछ ले लो पर इस गन्दी चीज़ से मुझे तुरन्त छुटकारा दिलाओ।"

और ऐन्टोनी को अपने अच्छे इरादों का विश्वास दिलाने के लिये उसने तुरन्त ही ऐन्टोनी से चुरायी हुई सब चीज़ें मॅगवा दीं। जैसे ही ऐन्टोनी ने उन्हें अपने हाथ में लिया और गदा से उसने कहा "ओ गदा लेट जाओ" तो गदा शान्त हो कर लेट गयी।

अपना गधा रूमाल और खजाना ले कर वह अपने घर की तरफ चल दिया जहाँ उसने अपनी माँ को अपने खजाने का सच्चा सबूत दिया। उसने अपने लिये अच्छे रसोइये रखे और शाही तरीके से रहने लगा। उसने अपनी बहिनों की शादियाँ भी शाही तरीके से कीं। उसने अपनी माँ को भी अमीर बना दिया और यह कहावत सच कर दी —

भगवान पागलों और बच्चों की सहायता करता है

2 1–10 बुढ़िया की खोज[17]

रोकाफोर्ट[18] का राजा एक बुढ़िया की आवाज सुन कर अपनी सुधबुध खो बैठता है। एक उँगली से धोखा खा जाता है। उसके साथ सोता है। पर जब उसको इस धोखे का पता चलता है तो वह अपने आदमियों को उसे उठा कर बाहर फेंक देने के लिये कहता है। जब वह गिरती है तो एक पेड़ में अटक जाती है। वहाँ उसे सात परियाँ देख लेती हैं तो उसे एक ताबीज देती हैं जिससे वह एक बहुत सुन्दर लड़की बन जाती है। राजा उसको अपनी पत्नी स्वीकार कर लेता है। उसकी दूसरी बहिन उसकी खुशकिस्मती से बहुत जलती है और उसी जैसी सुन्दर बनना चाहती है तो वह अपनी खाल भी उधड़वा देती है। और ऐसा करने में वह मर जाती है।

सारे लोग सियोमैटैला[19] की कहानी सुन कर बहुत खुश थे और कैनैलेरो की सुरक्षा और गुल के ऐसे कामों के लिये उसकी सजा के बारे में जान कर तो बहुत ही खुश थे।[20]

राजकुमार थैडियस[21] ने सबको चुप रहने का इशारा किया और घियाकोवा[22] से अपनी कहानी सुनाने के लिये कहा तो उसने शुरू किया —

---

[17] The Old Woman Discovered. Tale No 2. (Day 1, Diversion 10) Told by Ghiakova
This tale is similar to “Three Crones” given in my book “Italy Ki Lok Kathayen-2” under the title “Teen Budhiyen”.

[18] Roccaforte

[19] Ciommetella – a storyteller

[20] Previous to this story was the “Charmed Hind” (Jaaduee Hirni) you may find this story in “Il Pentamerone 1-16) by Sushma Gupta

[21] Prince Thaddeus

[22] Ghiakova – another storyteller

शान बघारने की आदत हम स्त्रियों के साथ साथ ही पैदा होती है। और सुन्दर दिखायी देने की इच्छा में हम अपने चेहरे बिगाड़ लेते हैं। अपनी खाल को गोरा करने के लिये हम अपने दाँत बिगाड़ लेते हैं। अपने शरीर को सुन्दर बनाने के लिये हम अपनी आँखें बन्द कर लेते हैं।

इस तरह हम "समय" को टैक्स देने के लिये समय से पहले ही अपनी आँखों की दृष्टि धुँधली कर लेते हैं चेहरे पर एक पर्त चढ़ा लेते हैं खाल मुरझा लेते हैं।

अगर किसी नौजवान लड़की को इस खालीपन के लिये दोष दिया जाता है तो ठीक है पर उस बुढ़िया का क्या जो अपने आपको नौजवान दिखाने के लिये सब देखने वालों की हँसी का पात्र बनती है और अपने आपको बर्बाद कर लेती है। जैसा कि मैं अभी आप सबको बताने जा रही हूँ आप ध्यान दे कर सुनें।

एक बार की बात है कि रौकाफोर्ट शहर में एक महल के सामने एक बागीचा था जहाँ दो बुढ़ियें बैठी हुई थीं जो इतनी बदसूरत थीं कि शायद ही किसी ने इतनी बदसूरत स्त्री देखी हों।

उनको बाल उलझे हुए थे। उनके माथे पर झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं। उनकी भौंहें टेढ़ी मेढ़ी और तनी हुई थीं। उनकी आँखें लाल थीं और पानी से भरी हुई थीं।

शरीर की खाल पीली और झुर्रियाँ पड़ी थी। बड़े और टेढ़े मुँह थे। छाती पर बहुत बाल थे। वे दोनों ही कुबड़ी थीं। उनकी बाँहें

निचुड़ी हुई थीं। दोनों ही लॅगड़ी थीं। उनके पैर फटे हुए थे। वे राजा के महल की एक खिड़की के पास पेड़ों के नीचे छिपी हुई थीं।

राजा उनकी बिना जानकारी के कुछ भी नहीं कर सकता था क्योंकि ये दोनों ही बातें कर रही थीं और राजा पर नजर रखे थीं। कभी कभी वे यह कह रही थीं कि एक बार एक चमेली का फूल उनके सिर पर गिर पड़ा जिससे उनके सिर में दर्द हो गया।

दूसरी बार एक चिट्ठी उनके कन्धों पर गिर पड़ी तो उसी ने उनको बहुत परेशान कर दिया। किसी और समय धूल ने ही उनका दम घोट दिया।

राजा उनकी ये सब बातें सुन रहा था। उसको लगा कि नीचे दो बहुत सुन्दर स्त्रियॉ बैठी हुई हैं जैसे दो ताजा कटे हुए फूल हों मीठे में सबसे ज़्यादा मीठी हों। यह सोचते हुए उसकी यह बहुत ज़ोर की इच्छा होने लगी कि वह इन छिपी हुई सुन्दरियों को देखे। उनका जादू देखे।

यह सोच सोच कर वह गहरी गहरी सॉसें भरने लगा और बिना जुकाम के ही खॉसने लगा। आखीर में वह बोला "तुम कहॉ छिपी हो इतने कीमती जवाहरात। सामने आओ ओ दुनियॉ की सबसे सुन्दर सुन्दरी। ओ सूरज उठो। ओ एक राजा के लायक सबसे कीमती जवाहरात। मुझे अपनी चमकती रोशनी देखने दो जो प्रेम के राज्य में आग लगा देती है।

ओ सुन्दरता के फूल। क्या तुम्हें अपनी अच्छाइयों का पता नहीं है। एक गरीब फाख्ता के लिये अपने दरवाजे खोल दो और चाहो तो उसे पिंजरे में बन्द कर लो। मुझे अपना मुँह तो देखने दो जिसके होठों से यह आवाज निकली है।

मुझे वह घंटी देखने दो जिसकी यह आवाज है। मैं उस चिड़िया को देखना चाहता हूँ जिसका इतना मीठा गाना मैं सुन रहा हूँ। मुझे तुम पौन्टो की उस भेड़ की तरह से मत छोड़ दो जिसे बन्द गोभी खिलायी जाती है। मुझसे अपने सुन्दर रूप को देखने के आनन्द को मत छीनो।"

राजा ने ये और और भी बहुत कुछ कहा जिसके लिये उस बुढ़िया के कान बहरे थे। इससे तो आग में घी पड़ गया था।

राजा की इच्छाऐं और बढ़ने लगीं और उसके विचारों ने उसकी एक मूर्ति गढ़ ली और उसका दिल उस मूर्ति का गुलाम बन कर रह गया। वह सोचने लगा कि उसको उस बक्से की चाभी मिल जाये जिससे वह वह बक्सा खोल कर उस छिपी हुई राजकुमारी को निकाल सके जिसको पाने की निराशा में वह मर जायेगा।

पर उसके शान्त रहने के बीच उसको कोई आवाज नहीं आयी फिर भी वह बिना रुके बराबर प्रार्थना करता रहा।

कि एक दिन उन घमंडी बुढ़ियों ने राजा की अपने लिये प्रशंसा भरी बातें सुन कर अपने घमंड में भर कर आपस में सलाह की कि इतनी सुन्दर चिड़िया को फॉसने के इतने अच्छे मौके को हाथ से नहीं

गॅवाना चाहिये जो अपने आप ही उनके जाल में फॅसने के लिये आना चाहती है।

सो एक दिन जब राजा अपनी आदत के अनुसार खिड़की में खड़ा हो कर मीठी मीठी बातें कर रहा था तो वे पेड़ों के बीच से अपनी सबसे मीठी बोली में बोलीं कि उसकी प्रार्थनाओं के बदले में वह उसको आठ दिन में अपनी एक ॲगली दिखायेंगी।

अब राजा तो एक बहुत ही होशियार सिपाही था। वह जानता था कि यदि किसी किले पर कब्जा करना हो तो उसे इंच ब इंच ही लिया जाता है सो इस आशा में कि कदम ब कदम वह उसे जीत ही लेगा जिसकी वह इतने दिनों से इच्छा कर रहा था उसने उनका यह प्रस्ताव मना नहीं किया।

पुरानी कहावत को मानते हुए कि "पहले ले लो मॉगो बाद में" उसने उनकी सब शर्तें मान लीं और दुनियॉ के आठवें आश्चर्य को देखने की आशा में आठ दिन तक इन्तजार किया।

इस बीच दोनों बुढ़ियों ने सिवाय अपनी ॲगलियों को सॅवारने के और कुछ नहीं किया ताकि जब नियत समय आये जिसकी ॲगली सबसे चिकनी और सुन्दर हो वह राजा को अपनी ॲगली दिखा दे।

उधर राजा भी बड़े सब्र के साथ उस दिन का इन्तजार करता रहा। रात रात भर चक्कर काटता रहता। घंटे गिनता रहता। सूरज से विनती करता रहा कि उसका समय जल्दी ही निकल जाये ताकि वह जल्दी से जल्दी अपने उद्देश्य तक पहुॅच सके।

वह रात से कहता रहा कि वह जल्दी से सारा अँधेरा दूर कर दे ताकि वह वह रोशनी देख सके जो हालाँकि दिखायी तो नहीं देती पर उसको प्यार की भट्टी में तपा रही है। उसने समय से कहा कि वह एक लंगड़े की तरह से चल रहा है उसको जल्दी चलने वाले बूट पहन लेने चाहिये ताकि वह समय जल्दी आ जाये।

आखिर वह समय आया। राजा अपने बागीचे में उतरा दरवाजे पर खट खट की तो उनमें से जो ज़्यादा बूढ़ी और जो ज़्यादा बदसूरत स्त्री थी उसने यह देख कर कि उसकी उँगली तो बहुत ही चिकनी और सुन्दर है कहा "आओ आओ।" और अपनी चिकनी उँगली चाभी वाले छेद में से बाहर निकाल कर राजा को दिखा दी।

राजा के लिये तो यह केवल उँगली नहीं थी बल्कि एक तीर था जो उसके दिल को छेदता हुआ निकल गया। बल्कि एक तीर ही नहीं था एक गदा थी जो उसके सिर पर बहुत ज़ोर से पड़ी थी।

पर मैं उसे क्या कहूँ तीर या गदा। वह तो उसकी इच्छाओं में लगने वाली तीली थी जिसने उसके दिल में आग लगा दी थी और उसमें लपटें उठा दी थीं। पर मैं क्या कह रही हूँ तीर या गदा या फिर जलती हुई तीली। वह तो उसके विचारों में एक काँटा सा जा कर चुभ गया था जिससे उसके मुँह से सैंकड़ों आहें निकल पड़ीं।

उसने उसकी उँगली पकड़ी उसे चूमा जो एक बढ़ई की रेगमार से चिकनी की गयी थी और बोला — "ओ सुन्दर प्यार की कमान। ओ खुशी देने वाली। ओ सारे प्यार की भेंट देने वाली। जिसके

लिये मैं दुखों से भर गया हूँ क्या यह सम्भव है कि तुम इतनी कठोर और बेरहम बन जाओ कि तुम मुझ पर दया ही न दिखाओ।

ओ मेरी प्यारी। अगर तुमने मुझे चाभी के छेद से अपनी पूँछ दिखायी है तो वहीं अपने होंठ भी रख दो तो हम लोग बहुत खुश होंगे। अगर तुमने मुझे अपनी मिठाई का एक हिस्सा दिखाया है तो ओ सुन्दरता की नदी तो तुम मुझे अपना सारा शरीर ही देखने दो न।

तुम मुझे अपनी चील की सी चमकती ऑखें देखने दो और मेरे दिल को उनकी नजर से घायल होने दो। किसने तुम्हारे सुन्दर चेहरे को कैदी बना कर रखा हुआ है। किसने इस सुन्दर जहाज़ को अलग रखा हुआ है। यह सुन्दर बारहसिंगा किसके काबू में सूअरों के घर में बन्द है।

उस गड्ढे में से बाहर आओ, कूदो, अपना हाथ कोला के हाथ में दो और मुझे वह दो जिसके मैं योग्य हूँ। तुम्हें मालूम है कि मैं एक राजा हूँ। मैं कोई खीरा नहीं हूँ। मैं किसी से कुछ भी कह सकता हूँ और किसी को कुछ भी करने से रोक सकता हूँ।

पर वल्कैन और वीनस[23] जो सबके ऊपर राज करते हैं उन्होंने मुझे तुम्हारा गुलाम बना दिया है। ताकि मैं तुमसे भीख माँग सकूँ जबकि मैं तुमसे टैक्स माँग सकता था। मैं वैसा ही कर रहा हूँ जैसा

[23] Vulcan and Venus – Greek God and Goddess

कि पुराने लोगों ने कहा है कि वीनस को बातों से नहीं बल्कि सहला कर जीता जाता है।

बुढ़िया जो अच्छी तरह जानती थी कि शैतान की पूँछ कहाँ रखी रहती थी। जैसे कि एक बूढ़ी लोमड़ी, एक धोखा देने वाली बिल्ली, एक बूढ़ा कौआ, एक बूढ़ा उल्लू भी यह जानता है कि जब कोई तुम्हारा बौस तुमसे कुछ माँग रहा है तो वह तुम्हारे लिये उसका हुक्म है और जब राजा का हुक्म नहीं माना जाता तो वह मालिक का गुस्सा बढ़ाता है जो तुम्हारी बर्बादी की वजह भी बन सकता है।

सो वह बिल्ली बोली — "ओ माई लौर्ड। जैसी कि तुम्हारी इच्छा है कि जो तुम्हारे नीचे हैं तुम उन्हें समर्पण कर दो। तुम अपने राजदंड से उतर कर चरखे पर आ जाओ, शाही कमरे से घुड़साल में आ जाओ, शानो शौकत से उतर कर साधारण कपड़ों में आ जाओ, शान से उतर कर फटेहाल में आ जाओ, घोड़े से गधा बन जाओ राजकुमार और राजा की गाँठ बाँधी जाये तो मैं इतने बड़े राजा की इच्छा का विरोध नहीं कर सकती और मुझे करना भी नहीं चाहिये।

इसलिये अगर तुम्हारी यही इच्छा है कि तुम राजकुमार की गाँठ एक सरदार से बाँधो तो जैसे एक पोपलर के पेड़ की लकड़ी में हाथी दाँत जड़ा हुआ हो, काँच के टुकड़ों के साथ हीरे लगे हों तो मैं तुम्हारी मर्जी करने के लिये तैयार हूँ पर फिर भी मैं तुमसे एक प्रार्थना करूँगी कि तुम मुझे अपने प्यार की एक निशानी दो कि मैं

रात को तुम्हारे बिस्तर में बिना रोशनी के सो सकूँ क्योंकि मैं बिना कपड़ों के दिखायी देना सहन नहीं कर सकती।"

राजा इस बात के लिये खुशी खुशी तैयार हो गया। उसने हाथ पर हाथ रख कर कसम खायी कि वह उसकी इच्छा खुशी से पूरी करेगा।

और चीनी जितना मीठा चुम्बन एक हींग भरे मुँह को देते हुए वह अपने घर चला गया। जब तक सूरज गया तब तक का समय काटना उसके लिये बहुत मुश्किल हो गया। सूरज जब आसमान के मैदान में हल चलाते चलाते थक गया तो तारों के बीज बोने से पहले वह कुछ और नहीं सोच रहा था सिवाय उस खेत के जो वह टनों खुशी से जोतेगा।

पर जब रात अँधेरी होने लगी और लुटेरे रास्ता चलते लोगों की जेबें खाली करने के लिये निकल पड़े तो राजा का एक नौकर एक मोटे से परदे में ढकी हुई बुढ़िया को अँधेरे में राजा के कमरे तक ले कर आया। कमरे में पहुँचते ही उस स्त्री ने अपने कपड़े उतारे और तुरन्त ही बिस्तर में लेट गयी।

राजा जो आग लगाने के लिये एक तीली के समान इन्तजार कर रहा था जब उसने उन दोनों के आने की आहट सुनी तो उसने अपने शरीर में कस्तूरी की खुशबू लगायी अपनी दाढ़ी में खुशबूदार तेल मला और आ कर बिस्तर में लेट गया।

बुढ़िया को यह बहुत अच्छा लगा कि वह खुशबूदार हो रहा था क्योंकि इससे उसे बुढ़िया के मुॅह की बदबू और बगल के सिरके की बू नहीं आ रही होगी।

पर जैसे ही उसने शरीर को छुआ तो उसको लगा कि उसे तो धोखा दिया गया था। वह शान्त रहा ताकि वह उसे और ज़्यादा अच्छे तरीके से समझ सके। उसे वह सब करना पड़ा जिसके करने की उसे कोई इच्छा नहीं थी।

पर जब बुढ़िया सो गयी तो राजा ने अपने ऐबोनी की लकड़ी के बक्से में से चॉदी लगा एक काले चमड़े का थैला निकाला और एक छोटी से लालटेन निकाली जिसे उसने जलाया और एक बार फिर से बुढ़िया को देख कर पक्का किया कि वहॉ वह एक लड़की की बजाय एक बुढ़िया ही थी वीनस की बजाय मडूसा ही थी।

यह देख कर वह बहुत गुस्सा हो गया उसने सोचा कि वह उस रस्सी को ही काट देता है जिससे उसकी ज़िन्दगी का जहाज़ बॅधा हुआ था।

उसके मुॅह से फेन निकलने लगा और उसी मुॅह से उसने अपने नौकरों को पुकारा सारे घर को पुकारा। जब नौकरों ने उसकी चिल्लाहट सुनी तो उन बेचारों ने मुश्किल से अपनी कमीज पहनी होगी कि वे सब उसके पास भागे हुए आये।

उसने उनसे कहा — "देखो इस शैतान ने मेरे साथ क्या चाल खेली है। यह सोचते हुए कि मैं एक दूध पीता बच्चा हूॅ मुझे एक

बूढ़ी भैंस मिल गयी और यह सोचते हुए कि मेरे हाथ में एक फाख्ता है मुझे तो उल्लू मिल गया।

मुझे लग रहा था कि मैं राजा के जैसा कोई कौर खा रहा था पर मेरे मुॅह में तो यह गन्दा खाना आ गया जिसने मेरा स्वाद ही खराब कर दिया।

पर यह उसी के लिये ठीक है जो बिल्ली को बन्द थैले में खरीदता है। इसने मुझे बहुत ज़्यादा परेशान किया है सो इसके लिये इसे तप करना पड़ेगा। इसे इसी हालत में ले जाओ जिसमें यह है और इसे खिड़की के बाहर फेंक दो।"

यह हुक्म सुन कर बुढ़िया रोने लगी ठोकर मारने लगी काटने लगी और बोली — "मैं इस सजा के लिये अपील करती हॅू। तुम्हारे बुलाने पर मैं यहॉ आयी और अपने बचाव के लिये मैं सौ डाक्टर ले कर आऊॅगी।"

वह आगे बोली — "एक बूढ़े उल्लू का सूप अच्छा बनता है और जो पुरानी चीज़ों के लिये नयी को अपना लेता है उसके साथ तो और ज़्यादा बुरा ही होता है।"

पर यह सब कहने के बावजूद उसको उठा लिया गया और उसे खिड़की से बाहर फेंक दिया गया। यही उसकी किस्मत थी। जब वह नीचे गिर रही थी तो एक अंजीर के पेड़ में उसके बाल अटक गये और वह उसी में लटकी रह गयी। भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि उसकी गर्दन नहीं टूटी।

सुबह सवेरे ही कुछ परियाँ उस बागीचे से गुजरीं। वे कुछ दुखी थीं सो कुछ समय से न तो वे बोली थीं न मुस्कुरायी थीं। उन्होंने पेड़ से लटका एक साया सा देखा तो उसको देख कर वे बहुत ज़ोर से हँस पड़ीं और फिर तो वे बहुत सारी बातें भी करने लग गयीं।

उस बुढ़िया से उनको जो खुशी मिली थी उसके बदले में उसे कुछ देने के लिये हर परी ने उसे एक एक वरदान दिया। पहली परी बोली "तुम हमेशा जवान रहोगी।" दूसरी परी ने कहा "तुम बहुत सुन्दर हो जाओगी।"

तीसरी परी बोली "तुम अमीर हो जाओ।" चौथी परी बोली "तुम कुलीन बन जाओ।" पाँचवीं परी बोली "तुम बहुत गुणवान बन जाओ।" छठी परी बोली "भगवान करे सब तुम्हें प्यार करें।" और आखिरी परी बोली "तुम्हारी किस्मत बहुत अच्छी हो।"

यह कहने के बाद वे वहाँ से चली गयीं। उनके जाने के बाद बुढ़िया ने अपने आपको उसी पेड़ के नीचे एक मखमल की कुर्सी पर बैठे पाया जिसमें सोने के तारों की झालर लगी थी। वह पेड़ भी अब हरे रंग की मखमल की एक छतरी बन चुका था जिसमें सोने का काम हो रहा था।

उसका चेहरा पन्द्रह साल की एक नौजवान लड़की की तरह से हो गया था और इतना सुन्दर कि और दूसरी सब सुन्दरियाँ उसके सामने ऐसी लगती थीं जैसे साटिन के जूतों के सामने पुरानी जूतियाँ

लगें। अगर वह किसी की तरफ देख ले मुस्कुरा दे और उससे बातें कर ले तो लगे कि उसके सामने सब खेल में हार रही हों।

उसने बहुत कीमती कपड़े पहन रखे थे जिनमें सबमें रत्न जड़े हुए थे। जिन फूलों से वह सजी हुई थी उनमें से बहुत खुशबू उड़ रही थी। बहुत सारे नौकर चाकर उसके चारों तरफ खड़े थे। और वह हर तरफ से एक रानी लग रही थी।

इस बीच राजा अपने चारों ओर एक कम्बल लपेटे और स्लिपर पहने खिड़की से बाहर देखने के लिये आया कि वह देखे कि बुढ़िया का क्या हुआ। तो उसने तो वह देखा जो बहुत ही बढ़िया दृश्य था और जिसके देखने की उसने आशा भी नहीं की थी।

वह देख कर उसका मुँह तो खुला का खुला ही रह गया। पन्द्रह सोलह साल की एक लड़की मखमल की कुर्सी पर बैठी हुई थी। वह उस लड़की की सुन्दरता को देखता का देखता ही रह गया। उसके सुनहरे बाल उसके कन्धों पर लटक रहे थे। उसके घुँघराले बाल एक सुनहरी डोरी से बँधे थे जिसकी चमक सूरज की किरनों को भी लजा रही थीं।

उसकी बारीक भौंहें तो बस ऐसी थीं जैसे कोई कमान हों जिनसे निकला तीर उसके दिल को छेद गया हो। उसकी ऑखें ऐसी थीं कि उसके दिल से आहें ही आहें निकल रही थीं। और उसका मुँह तो बस जादू डालने वाला जैसा हो रहा था। फिर उसने उसके कपड़े और गहने देखे तब तो वह अपने आपे से ही बाहर हो गया।

वह बुदबुदाया "यह क्या मैं सपना देख रहा हूँ या जाग रहा हूँ। क्या मेरी इन्द्रियाँ ठीक काम कर रही हैं या मैं पागल हो गया हूँ। क्या मुझे मालूम है या नहीं मालूम है कि यह गेंद मुझे कहाँ से मारने के लिये आयी जिसने मुझे इतना पागल कर दिया।

मैं जरूर ही पत्थर होऊँगा अगर मैं इतनी बढ़िया चीज़ के बारे में पता नहीं करता। यह सूरज कहाँ से निकला। यह फूल कहाँ से खिला। यह चिड़िया यहाँ कहाँ से आयी जिसने मेरी इच्छाओं को चुम्बक की तरह खींच लिया।

कौन सा जहाज़ इसे इस देश में ले कर आया। किस बादल ने इसको यहाँ बरसाया। सुन्दरता का यह फव्वारा तो मेरे लिये बहुत सारी मुसीबतें ले आया है।"

यह कहता हुआ वह सीढ़ियाँ उतरता नीचे बागीचे में गया और वहाँ गया जहाँ वह जवान बनायी गयी बुढ़िया बैठी हुई थी। वह उसके पैरों पर गिर कर बोला — "ओ मेरी फाख्ता। ओ सुन्दर गुड़िया। ओ वीनस की सवारी के कबूतर। प्रेम की जीत। तूने तो मेरा दिल सारनो नदी के पानी में भिगो दिया है। मैं तेरी सुन्दरता देख कर जो आहें भर रहा हूँ वह तुझे जरूर सुनायी दे रही होंगी।

जो आग मेरे सीने में धधक रही है जिससे मेरा चेहरा पीला पड़ गया है जो उसाँसें मेरे दिल से निकल रही हैं क्या उनको देख कर भी तुझे विश्वास नहीं होता। तू जो अच्छी समझ वाली है तू जो

ठीक से फैसले लेने वाली है क्या तू यह नहीं समझ रही कि तेरे ये सुनहरे बाल मुझे कैसे सुनहरी जंजीरों में जकड़ रहे हैं।

तेरी काली काली ऑखें कैसे मेरे अन्दर का कोयला जला रही हैं। कामदेव के कमान की तरह से तेरे लाल लाल होठ मेरी तरफ कैसे तीर फेंक रहे हैं। इसलिये मेरे ऊपर दया कर। तू अपनी दया का पुल ऊपर मत खींच।

अगर तू मुझे अपनी सुन्दरता के लायक नहीं समझती तो कम से कम दया के कुछ शब्दों से मुझे रास्ता तो दिखा। अगर तूने ऐसा नहीं किया तो मैं मर जाऊँगा और तेरी यह सुन्दरता चली जायेगी।"

राजा ने ये शब्द अपने दिल के अन्दर से कहे और ये लड़की के दिल को छू गये। आखिर उसने राजा को अपना पति मान लिया। वह अपनी कुर्सी से उठी तो राजा ने उसका हाथ थाम लिया और उसे महल में ले गया। उसने अपने लोगों को एक दावत का इन्तजाम करने के लिये और उसमें अपने देश के सब कुलीन लोगों को बुलाने के लिये कहा।

अब बुढ़िया की बहिन भी इस दावत में आयी थी पर सारे लोग उसको ढूँढ ही नहीं पा रहे थे। वह बहुत दुखी और डरी हुई थी और जाना नहीं चाहती थी। वह बड़ी सॅभाल कर छिपी हुई थी पर किसी तरह लोगों ने उसे ढूँढ ही लिया और उसे दावत में ले गये।

वह अपनी बहिन के पास बैठी हुई थी। काफी देर के बाद तो वह उसे पहचान सकी और जब उसने दूसरी को पहचान लिया तो दोनों बहुत खुश हुईं।

पर दुलहिन की बुढ़िया बहिन कुछ खा नहीं सकी क्योंकि उसकी भूख तो उसकी जवान बहिन ने ले ली थी। उसका दिल अपनी बहिन की जवानी और सुन्दरता देख कर जला जा रहा था।

इस जलन की वजह से वह कभी कभी उसकी पोशाक की आस्तीन खींच लेती थी और उससे पूछती — "तूने यह कैसे किया ओ मेरी बहिन। तू तो यह शादी कर के बहुत अच्छी रही।" तो उसकी बहिन कहती — "अभी तो तू आराम से खा। हम बाद में बात करेंगे।"

उनको इस तरह से फुसफुसाते देख राजा ने अपनी दुलहिन से पूछा कि इन्हें क्या चाहिये तो दुलहिन ने कहा कि इन्हें थोड़ी सी हरी चटनी चाहिये। राजा ने तुरन्त ही उसके लिये लहसुन की चटनी मिर्च की मस्टर्ड और कई तरह की चटनियाँ मँगवा दी।

पर बुढ़िया को तो हर चटनी कड़वी लग रही थी। उसने फिर अपनी बहिन की पोशाक की आस्तीन खींची और पूछा — "तूने यह कैसे किया ओ बहिन बता न तूने यह कैसे किया। मैं भी ऐसे ही करना चाहती हूँ।"

दुलहिन बहिन बोली — "चुप रह न। हमारे पास पैसे की बजाय बहुत सारा समय होगा। अभी तो तू खा। मैं तुझे बाद में बताऊँगी। हम बाद में बात करेंगे।"

राजा उनकी फुसफुसाहट सुन कर अपने आपको रोक न सका और बोला कि अब इन्हें क्या चाहिये। दुलहिन कुछ परेशान हो गयी वह इस बात का कोई जवाब देना नहीं चाहती थी पर फिर बोली कि उसकी बहिन को थोड़ी सी मिठाई चाहिये। तो राजा ने उसके लिये बहुत सारी मिठाई मँगवा भेजी।

पर वुढ़िया बहिन को चैन कहाँ था उसने फिर से अपनी बहिन से वही सवाल पूछा तो अबकी बार दुलहिन चुप न रह सकी वह बोली — "मैंने उनको छील दिया।"

बुढ़िया बहिन ने यह सुन कर अपने आपसे कहा "तू भी अपना रास्ता ढूँढ ले। मैं भी अपनी किस्मत आजमाऊँगी और एक साहसी हिम्मतवाले को चुनूँगी। और अगर मैं इस काम में सफल हो गयी तो तू अकेली ही ऐसी खुशियाँ नहीं भोगेगी। उसमें मेरा भी हिस्सा होगा।"

इतना कह कर किसी जरूरी काम से मेज छोड़ने का बहाना कर के वह वहाँ से एक नाई की दूकान पर चली गयी। वहाँ उसने नाई को ढूँढा और उसे एक तरफ ले गयी और बोली — "ये लो पचास डकैट। और तुम मेरी खाल सिर से ले कर पैर तक छील दो।"

नाई को लगा कि यह स्त्री पागल है सो वह बोला — “ओ बहिन। अपने रास्ते जाओ। तुम तो बहुत ही अजीब सी बात कर रही हो। मुझे विश्वास है कि तुम्हें कोई साथी जल्दी ही मिल जायेगा।”

बुढ़िया लाल चेहरे से बोली — “तुम पागल हो क्योंकि तुम्हें मालूम नहीं है कि कब किसी की किस्मत जागती है। क्योंकि अगर मेरी यह कोशिश सफल रही तो इन पचास डकैट के अलावा तुम खुद बहुत मशहूर हो जाओगे। इसलिये वैसा ही करो जैसा कि मैं कहती हूँ। घबराओ नहीं तुम्हारी किस्मत जागने वाली है।”

नाई ने बहुत मना किया बहुत लड़ा उसे मारा भी पर वह जब नहीं मानी तो उसी कहावत के अनुसार कि “मालिक को वहीं बाँधो जहाँ गधा कहे।” उसने उसे एक बैन्च पर बिठा लिया और उसकी खाल छीलने लगा।

खून बहने लगा पर वह अपने इरादे की पक्की थी सो वह बार बार यही कहती रही “जो सुन्दर होना चाहता है उसे थोड़ी सी मुश्किलें तो सहनी ही होंगी।” पर जब नाई उसकी नाभि तक पहुँचा तब उसकी ताकत खत्म हो गयी और वह मर गयी।

यह कहानी यहाँ खत्म हो गयी पर सूरज के छिपने में अभी एक घंटा बाकी था सो राजकुमार थैडियस ने मेज पर मिठाई लगाने का हुक्म दिया।

3 2–8 नौजवान दासी[24]

लिसा गुलाब की पंखुरी से पैदा होती है और एक परी के शाप से मरती है। उसकी माँ उसे एक कमरे में लिटा देती है और अपने भाई से कहती है कि वह उस कमरे का दरवाजा न खोले। पर उसके भाई की पत्नी बहुत जलती है कि देखूँ इस कमरे में क्या है। वह दरवाजा खोलती है तो उसमें लिसा को ठीक ठाक पाती है। वह उसको दासियों के कपड़े पहना कर उससे दासियों जैसा काम लेती है और उसको बहुत ही बेरहमी से रखती है। एक दिन लिसा का मामा उसे पहचान लेता है। वह अपनी पत्नी को उसके रिश्तेदारों के घर भेज देता है और अपनी भानजी की शादी कर देता है।

राजकुमार बोला — "खुशी देने वाली कहानियों में हर आदमी को वही काम करना चाहिये जो उसे आता हो जैसे लौर्ड को लौर्ड का काम करना चाहिये। दुलहे को दुलहे का काम करना चहिये। सिपाही को सिपाही का काम करना चाहिये।

और जैसे कि कोई भिखारी का लड़का अगर ऐसे बात करने लगे जैसे कोई राजकुमार करता है तो वह हँसी का पात्र बन जायेगा। इसी तरह से एक राजकुमार का भी यही हाल होगा अगर वह किसी भिखारी लड़के का काम करे तो।

फिर वह पाओला[25] की तरफ घूमा और उससे कहा — "अब तुम अपनी कहानी सुनाओ।" अपने होंठ चूसते हुए और अपना सिर खुजलाते हुए उसने अपनी कहानी कहनी शुरू की —

---

[24] The Young Slave. Tale No 3. (Day 2, Diversion 8) Told by Paola

[25] Paola – the storyteller woman

“ईर्ष्या एक बहुत ही डरावनी बुराई है। वास्तव में यह एक तरह का चक्कर है जो आदमी के दिमाग को घुमा देती है। नसों में जलन पैदा कर देती है। एक दुर्घटना है एक अचानक लगने वाला धक्का है जो आदमी के शरीर के अंगों को बिल्कुल बेकार कर देता है जैसे उन्हें लकवा मार गया हो।

एक पेट की खराबी है जो सारे शरीर को ढीला कर देती है। एक बीमारी है जो आदमी की रातों की नींद हर लेती है। सब खानों के स्वाद को कड़वा कर देती है। शान्ति नष्ट कर देती है। हमारी ज़िन्दगी के दिन कम कर देती है।

यह एक सॉप की तरह है जो काटता है। एक मौथ की तरह है जो धीरे धीरे कुतरता रहता है। एक बर्फ की तरह है जो हमको जमा देता है। कुछ करने नहीं देता। एक कील की तरह है जो आदमी के अन्दर जा कर हमेशा तकलीफ देती रहती है। शादियॉ तोड़ देती है। प्यार के आनन्द को नष्ट कर देती है। कभी किसी ठीक और अच्छे काम को करने के लिये नहीं उकसाती।

इस कहानी को सुनने के बाद आप सब अपनी जबान से भी यही कहेंगे जो मैंने कहा है।

यह बहुत पुरानी बात है कि बहुत पहले सर्वा स्कूरा का एक बैरन[26] रहा करता था। उसके एक छोटी बहिन थी। वह असाधारण रूप से सुन्दर थी।

---

[26] Baron (female Baroness) of Serva-Skura – Baron is a respectable status in Imperial system.

वह अपनी उम्र की सहेलियों के साथ खेलने के लिये अक्सर बागीचे में जाया करती थी। एक दिन जब वह रोज की तरह बागीचे गयी हुई थी तो वहाँ उन्होंने एक झाड़ी के ऊपर पूरा खिला हुआ गुलाब देखा।

तो उन्होंने शर्त लगयी कि जो कोई उस झाड़ी के ऊपर से उस झाड़ी और गुलाब को बिना छुए कूद जायेगा उसको फलाँ फलाँ चीज़ मिलेगी।

इस शर्त के बाद लड़कियों ने कूदना शुरू किया एक के बाद एक लड़की कूदती गयी पर कोई भी लड़की बिना पेड़ को छुए हुए उस पेड़ के ऊपर से नहीं कूद सकी। अब सिलिया[27] की बारी थी। वह कुछ दूरी से भागती आयी तेज़ी से दौड़ी और बिना झाड़ी को छुए हुए उसके ऊपर से कूद गयी।

पर इस कूद में उससे गुलाब के फूल की एक पंखुरी गिर पड़ी। किसी दूसरे के देखने से पहले ही उसने उसे उठाया और निगल लिया। और इस तरह वह शर्त जीत गयी।

इस घटना के तीन दिन बाद ही उसे लगा कि उसको तो बच्चे की आशा हो गयी है। यह पता लगते ही वह तो दुख के मारे मर ही गयी। हालाँकि वह जानती थी कि उसने ऐसा कोई पाप नहीं किया था फिर भी वह यह नहीं जान सकी कि यह सब कैसे हुआ।

[27] Cilia – name of Baron’s sister

सो वह कुछ परियों के घर जो उसकी दोस्त थीं भागी गयी और जा कर उनसे अपना हाल कहा। उन सबने यही कहा कि इसमें कोई शक नहीं है कि यह बच्चा उसी गुलाब की पत्ती को खाने से हुआ है। सिलिया ने यह सुन कर जितने दिन तक हो सकता था अपने हालात छिपा कर रखे।

पर बच्चे को तो एक दिन आना ही था सो एक दिन उसने एक बहुत ही प्यारी सी बच्ची को जन्म दिया। उसका चेहरा बिल्कुल चौदहवीं के चॉद की तरह था। उसने उसका नाम रखा लिसा।[28] और उसे बड़ा होने के लिये परियों के पास रख दिया।

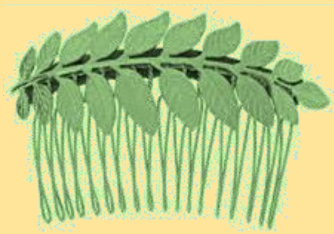

हर परी ने लिसा को एक एक टोटका दिया पर उनमें से आखिरी वाली परी जब उसको देखने के लिये भागी तो उसका पैर मुड़ गया। इस दर्द में उसने उस बच्ची को शाप दिया कि "जब वह सातवें साल में होगी तो इसकी मॉ इसके बालों में कंघी करते समय कंघी बालों में भूल जायेगी और इससे यह मर जायेगी।"

समय निकलता रहा। बच्ची का सातवॉ साल आया और यह बुरी घटना घटी। वह बेचारी अभागी मॉ अब क्या करे। रोते चिल्लाते उसने सात क्रिस्टल के ताबूत बनवाये जो एक के अन्दर एक आ जाते थे।

---

[28] Lisa – name of the Baron's sister Cilia's daughter

सातवें ताबूत में उसके शरीर को रख कर उसने महल के एक कोने में रखवा दिया। और उसकी चाभी उसने अपने पास रख ली।

पर इस दुख से रोज ब रोज उसकी तन्दुरुस्ती गिरने लगी। जब उसे लगा कि अब उसका अन्तिम समय आ गया तो उसने अपने भाई को बुलवाया और उससे कहा — "भैया। अब मेरा अन्त आ गया है इसलिये अब मैं अपनी सारी चीज़ें तुम्हें सौंप जा रही हूँ। अब तुम्हीं इनके मालिक हो।

मेहरबानी कर के मेरे सामने एक प्रतिज्ञा करो कि तुम महल के उस दूर वाले कमरे को कभी नहीं खोलोगे। यह उस कमरे की चाभी है और इसको तुम सॅभाल कर अपनी मेज के अन्दर रखना।"

इस विश्वास के साथ बहिन ने उससे विदा ली और यह दुनियॉ छोड़ कर चली गयी। उसका भाई उसको बहुत प्यार करता था। उसने उसी के सामने यह प्रतिज्ञा की वह वह कमरा कभी नहीं खोलेगा।

एक साल के बाद बैरन ने शादी कर ली। एक दिन उसके दोस्तों ने उसको शिकार के लिये न्यौता दिया तो उसने अपने महल की जिम्मेदारी अपनी पत्नी के ऊपर छोड़ी और शिकार पर चल दिया। जाते समय उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह महल का वह दूर वाला कमरा न खोले।

पर स्त्री का स्वभाव तो ऐसा ही होता है कि जिस काम को उसको मना किया जाता है वह उस काम को जरूर करती है।

जैसे ही बैरन शिकार पर गया उसकी पत्नी के मन में कुछ शक पैदा हुआ कि उसके पति ने उसको वह कमरा खोलने से क्यों मना किया सो उसने बैरन की मेज से चाभी निकाली और वह कमरा खोलने चल दी।

वहॉ जा कर उसने दरवाजा खोला तो देखा कि उसमें सात क्रिस्टल के बक्से रखे हुए हैं। और उनमें से सबसे छोटे बक्से के अन्दर एक बहुत सुन्दर बच्ची सो रही है।

वह बच्ची अपनी उम्र के साथ साथ बड़ी हो रही थी और सो उसके साथ साथ बड़े हो रहे थे उसके वे बक्से भी।

उस बच्ची को देख कर वह जल गयी और उसने चिल्लाना शुरू किया — "ओह मेरे भगवान, चाभी कमर के नारे में और भैंसा उसके अन्दर। तो यह वजह थी मेरे इस कमरे का दरवाजा न खोलने की ताकि मैं मुहम्मद को न देख सकूँ जिसको वह इतने दिनों से पूजता रहा है।"

यह कहते हुए उसने उस बच्ची को उसके बालों से पकड़ कर उस क्रिस्टल के बक्से से बाहर खींच लिया। उसके बालों के इस तरह खींचने में उस बच्ची की मॉ ने जो कंघी उसके बालों में लगी छोड़ दी थी वह निकल कर बाहर आ गयी और वह बच्ची ज़िन्दा हो गयी।

ज़िन्दा होते ही वह बच्ची चिल्लायी — "ओ मेरी मॉ। ओ मेरी मॉ।"

बैरन की पत्नी बोलाी — "आ मैं तुझे देती हूँ तेरी मॉ और तेरे पिता जी।" कह कर उसने गुस्से में आ कर उसकी खूब पिटायी की।

उसने उसको एक दासी की तरह के कपड़े पहना दिये और उस बच्ची के सुन्दर बाल कटवा दिये। अब वह उस पर कड़ी नजर रखने लगी।

बैरन जब शिकार पर से वापस लौट कर आया तो इतनी छोटी सी बच्ची के साथ इतना बुरा बर्ताव करते देख कर उसने अपनी पत्नी से पूछा कि वह उसके साथ इतना बेरहम और बुरा बर्ताव क्यों कर रही थी।

उसकी पत्नी ने बताया कि वह एक दासी थी जिसको उसकी एक चाची ने उसके पास भेजा था। और यह दासी इतनी खराब थी कि उसको डॉट कर रखना बहुत जरूरी था ताकि वह ठीक से काम कर सके।

कुछ समय बाद वह बैरन गॉब के एक मेले में गया और क्योंकि वह एक बहुत ही दयावान और बहुत ही अच्छा भला कुलीन आदमी था उसने अपने घर में सबसे बड़े से ले कर सबसे छोटे तक, यहॉ तक कि अपनी बिल्लियों से भी, सभी से यह पूछा कि वह उस मेले से उनके लिये क्या ले कर आये।

किसी ने कुछ कहा तो किसी ने कुछ। आखीर में नम्बर आया उस दासी लड़की का।

पर उसकी पत्नी बोली — "इस दासी को छोड़ो। हमको अपने सारे काम अपने नियमों में रह कर ही करने चाहिये जैसे हम सब अपना खाना एक ही बर्तन में बनाते हैं। तुम इसको छोड़ दो। इसको बहुत ज़्यादा बिगाड़ने की जरूरत नहीं है।"

पर बैरन क्योंकि बहुत ही दयावान था वह उससे पूछता ही रहा कि वह उसके लिये मेले से क्या ले कर आये।

आखिर उस बच्ची ने जवाब दिया — "मुझे एक गुड़िया चाहिये, एक चाकू चाहिये और थोड़ा सा प्यूमिस पत्थर[29] चाहिये। और अगर आप यह लाना भूल जायें तो आपके रास्ते में जो नदी पड़ती है आप उसे पार न कर सकें।"

यह सुन कर बैरन चला गया। वहाँ जा कर उसने जिस जिसके लिये जो भी सामान खरीदना था खरीद लिया पर वह वह सामान खरीदना भूल गया जो उसकी बहिन की लड़की ने उसको लाने के लिये कहा था।

जब घर आते समय वह नदी के किनारे आया तो नदी ने पत्थर फेंकने शुरू कर दिये और वह पहाडों से पेड़ बहा कर ले जाने लगी। यह देख कर बैरन डर गया और आश्चर्य में पड़ गया।

[29] Pumice stone is lighter than the water and thus can float on it. It is believed that Shree Raam built His bridge to Lankaa by those stones only. See its picture above.

तब उसको उस नौजवान दासी का शाप याद आया। वह तुरन्त ही मेले वापस लौट गया और उस बच्ची की तीनों चीज़ें ले कर आया। तब कहीं जा कर वह नदी पार कर सका और अपने घर लौट सका।

घर आ कर उसने सबकी चीज़ें सबको दे दीं। जैसे ही उस बच्ची को उसकी चीज़ें मिलीं वह रसोईघर में चली गयी। उसने वह गुड़िया अपने सामने रख ली और रोने लगी।

वह उस बेजान लकड़ी की गुड़िया से अपनी कहानी ऐसे कह रही थी जैसे किसी जानदार आदमी से कह रही हो।

उसने देखा कि वह गुड़िया तो कोई जवाब नहीं दे रही थी तो उसने अपना चाकू उठाया, उसको प्यूमिस पत्थर पर तेज़ किया और उस गुड़िया से बोली — "अगर तू मुझसे नहीं बोली तो मैं अपने आपको मार लूँगी और इस तरह अपना अन्त कर लूँगी।"

यह सुन कर वह लकड़ी की गुड़िया बैग पाइप[30] बाजे की तरह फूल गयी और बोली — "मैं तुझे सुन रही हूँ मैं कोई बहरी नहीं हूँ।" ऐसा कई दिनों तक चलता रहा।

बैरन की एक तस्वीर रसोईघर के पास ही लटक रही थी। तो एक दिन बैरन जब उधर से गुजर रहा था तो उसने रसोईघर से आती उस नौजवान दासी की ये रोने और बातें करने की आवाजें

[30] Bag Pipe is kind of wind music instrument. See its picture above.

सुनी तो उसको यह जानने की उत्सुकता हुई कि वह किससे बात कर रही थी।

उसने चाभी के छेद में से देखा तो देखा कि लिसा के सामने वह गुड़िया रखी है जो वह उसके लिये मेले से लाया था और वह उसको बता रही थी कि कैसे उसकी माँ उस गुलाब के पेड़ के ऊपर से कूद गयी थी, फिर कैसे उसने उस गुलाब के फूल की पत्ती खा ली थी और फिर कैसे वह पैदा हुई थी।

फिर कैसे सारी परियों ने उसको जादू दिये और फिर कैसे आखिरी परी ने उसको शाप दिया कि उसकी माँ उसके बालों में कंघी लगी छोड़ कर भूल जायेगी और वह मर जायेगी।

फिर कैसे उसको सात क्रिस्टल के बक्सों के अन्दर रखा गया और उन बक्सों को महल के दूर के कमरे में रखवा दिया गया। फिर कैसे उसकी माँ मर गयी और वह उस कमरे की चाभी अपने भाई के पास छोड़ गयी।

फिर उसने उस गुड़िया को यह भी बताया कि किस तरह बैरन शिकार पर गया और कैसे उसकी पत्नी ने जल कर अपने पति का हुक्म नहीं माना।

फिर कैसे वह उस दूर वाले कमरे में घुसी और फिर कैसे उसके बाल काटे। फिर कैसे उसको दासी की तरह रखा और फिर किस तरह उसको बेरहमी से पीटा।

आखीर में वह रोते हुए बोली — "अब बता मेरी गुड़िया, तू क्या कहती है? क्या मैं इस चाकू से अपनी जान न ले लूॅ?"

यह कहते हुए वह पास में रखे प्यूमिस पत्थर पर चाकू तेज़ करने लगी। चाकू तेज़ कर के वह अपने आप को मारने ही वाली थी कि बैरन ने पैर से एक ठोकर मार रसोईघर का दरवाजा तोड़ दिया और उस बच्ची के हाथ से चाकू छीन लिया।

उसने उसको अपनी कहानी सुनाने के लिये कहा। जब उसने अपनी कहानी उसको सुना दी तो बैरन ने उसको अपने गले से लगा लिया और उसको महल से बाहर अपने एक रिश्तेदार के घर भेज दिया।

वहॉ जा कर उसने अपने उस रिश्तेदार से कहा कि बुरे बर्ताव की वजह से वह लड़की शरीर और मन दोनों से बहुत ही बीमार है और अपनी सुन्दरता खो चुकी है।

सो वे उसका इतने अच्छे तरीके से ख्याल रखें कि वह शरीर और मन दोनों तरीके से तन्दुरुस्त हो जाये और उसके चेहरे की ताजगी वापस आ जाये।

लिसा को वहॉ बहुत अच्छे से रखा गया और कुछ ही महीनों में वह एक बहुत सुन्दर देवी की तरह दिखायी देने लगी। उसके बाद उसके मामा ने उसको अपने महल में बुला लिया और उसके आने की खुशी में एक बहुत बड़ी दावत दी।

बैरन ने उस दावत में आये हुए लोगों से अपनी भान्जी[31] के रूप में लिसा का परिचय कराया और बाद में उसको सबके सामने अपनी कहानी सुनाने के लिये कहा। सब लोग लिसा के साथ बैरन की पत्नी बेरहम बर्ताव सुन कर रो पड़े।

बैरन को उसकी पत्नी का वह जलन भरा बर्ताव बिल्कुल अच्छा नहीं लगा था सो उसने अपनी पत्नी को उसके घर भेज दिया। कुछ दिनों बाद उसने अपनी भानजी की शादी एक बहुत ही अच्छे लायक नौजवान से कर दी जिसको वह पसन्द करती थी।

[31] Translated for the word “Niece” – here it means “sister’s daughter”.

4 2–9 ताला[32]

लूसीला एक फव्वारे पर पानी भरने जाती है तो वहाँ एक दास से मिलती है जो उसे एक बहुत ही शानदार महल में ले जाता है जहाँ वह एक रानी की तरह से घुसती है। उसकी बहिनें जलन की वजह से उसको सलाह देती हैं कि वह कैसे उस आदमी को देख सकती है जिसके साथ वह रात को रहती है। वह वैसा ही करती है जैसा वे कहती हैं। उसको पता लगता है कि उसका साथी तो एक बहुत ही सुन्दर नौजवान है पर वह फिर उसके साथ नहीं रह पाती और महल से निकाल दी जाती है। वह दुनियाँ भर में घूमती फिरती है। उसको बच्चे की आशा होती है। वह अनजाने में अपने प्रेमी के घर पहुँच जाती है जहाँ वह एक बेटे को जन्म देती है। कई प्रकार की मुश्किलों को झेलने के बाद वह उसकी पत्नी बन जाती है।

अब तक लिसा के दुखों का हाल सुन कर लोग बहुत दुखी हो चुके थे। उनमें से चार लोगों की ऑखें तो रो रो कर लाल हो गयी थीं। किसी का भी दिल अभी तक किसी और कहानी ने इतना न छुआ होगा जितना कि यह कहानी छू गयी थी। अब सिओमैटैला की बारी थी लोगों के दिमाग का पहिया घुमाने की और सूत कातने की। सो उसने कहना शुरू किया —

जो आदमी ईर्ष्यालु होता है उसकी सलाह हमेशा दुर्भाग्य को जन्म देती है क्योंकि उसकी मुस्कुराहट और हमारा शुभ सोचने के मुखौटे के नीचे हमारे नाश का उसका असली चेहरा छिपा रहता है।

और अगर किसी को अपने हाथ में एक बाल बराबर भी खुशकिस्मती मिल जाये तो उसको तो हर समय अपने लिये सैकड़ों

[32] The Padlock. Tale No 4. (Day 2, Diversion 9) Told by Ciommetella

दुश्मनों की आशा रखनी चाहिये जो उसको गिराने के लिये जाल बिछाने में लगे हुए हों।

ऐसा ही बेचारी एक लड़की के साथ हुआ जिसको अपनी बहिनों की नीच सलाह की वजह से खुशी की आखिरी सीढ़ी से नीचे गिर जाना पड़ा। यह तो बस भगवान की कृपा थी कि इस गिरने में उसकी गर्दन नहीं टूट गयी।

एक बार की बात है कि एक माँ थी जिसके तीन बेटियाँ थी। वह बहुत गरीब थी। खाने के लिये वे सब भीख माँगा करती थीं और लोगों के फेंके हुए बन्द गोभी के पत्ते इकट्ठे करती फिरती थीं।

एक सुबह माँ किसी घर में भीख माँगने के लिये गयी हुई थी तो वहाँ के रसोइये ने उसको कुछ हरे पत्ते और कुछ और चीज़ें दे दीं। सो वह तुरन्त ही घर वापस आ गयी और अपनी बेटियों को पास वाले फव्वारे से पानी लाने के लिये भेजा।

पर वे एक दूसरे से कहती रहीं कि "पानी लाने तू जा।" "पानी लाने तू जा।" पर उनमें से कोई पानी लाने नहीं गया। माँ ने देखा कि उसकी कोई भी बेटी पानी लाने नहीं जाना चाहती तो वह गुस्से से बोली — "अगर तुम्हें कुछ चाहिये तो तुम्हें उसे खुद करना चाहिये।"

हालाँकि वह इतनी बुढ़िया थी कि वह ठीक से चल भी नहीं पाती थी फिर भी यह कह कर उसने एक जग उठाया और पानी

लेने जाने ही वाली थी कि लूसीला[33] उसकी सबसे छोटी बेटी बोली — "माँ मुझे दो यह जग मैं तुम्हारे लिये पानी भर कर लाती हूँ। हालाँकि मैं इतनी ताकतवर नहीं हूँ कि मैं वहाँ से पानी ला सकूँ पर मुझमें कम से कम इतनी ताकत तो है ही जो मैं तुम्हारे लिये पानी ला सकूँ। मुझे यह अच्छा नहीं लगता कि तुम यह काम करो।"

यह कह कर वह शहर से फव्वारे की तरफ चल दी। वह फव्वारा यह नहीं चाहता था कि डर से फूल मुरझा जायें इसलिये वह हमेशा उनके ऊपर पानी फेंकता रहता था।

लूसीला जब फव्वारे पर पानी भरने गयी तो वहाँ उसको एक बहुत सुन्दर नौकर मिला। लूसीला को देख कर वह उससे बोला — "ओ सुन्दर लड़की। क्या तुम मेरे साथ चलोगी। मैं तुम्हें एक गुफा से हो कर ले जाऊँगा। वहाँ मैं तुम्हें घर दूँगा जो यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं है। और मैं तुम्हें और भी अच्छी अच्छी चीज़ें दूँगा।"

लूसीला जिससे न कोई कभी कुछ मीठा बोलता था और ना ही कोई उससे अच्छा व्यवहार करता था बोली — "ठीक है। मैं ज़रा यह पानी अपनी माँ को दे आऊँ उनको पानी की जरूरत है फिर मैं तुम्हारे पास आती हूँ।"

कह कर वह पानी देने के लिये घर चली गयी। वहाँ जा कर उसने अपनी माँ से कहा कि "माँ मैं भीख माँगने जा रही हूँ।"

[33] Luceilla – the name of the youngest daughter

कह कर वह फिर फव्वारे के पास गयी जहॉ वह नौकर उसका इन्तजार कर रहा था। वहॉ से वह उसके साथ उसके घर चली गयी। उसका घर आइवी[34] और दूसरी तरह की बेलों से ढका हुआ था। जब वह वहॉ पहुॅची तो वह उसको नीचे बने हुए एक महल में ले गया जो बहुत शानदार बना हुआ था और जिस पर सोने की खुदाई का काम हुआ था।

उनके वहॉ पहुॅचते ही तुरन्त ही एक मेज लगा दी गयी जिस पर बहुत बढ़िया बढ़िया खाना लगा दिया गया था। जब उसने खाना खा लिया तो कुछ नौकरानियॉ वहॉ आयीं और उन्होंने उसके फटे कपड़े उतार कर उसे बहुत बढ़िया कपड़े पहनाये।

शाम को वे उसे एक कमरे में ले गयीं जहॉ एक सोने का मोती जड़ा पलॅग पड़ा हुआ था। उसको वहॉ लिटा कर जब उसकी मोमबत्तियॉ बुझा दी गयीं तो कोई उसके पास आ कर लेट गया। ऐसा कुछ दिनों तक चलता रहा।

कुछ दिन बाद लड़की को अपनी मॉ से मिलने की इच्छा हुई तो उसने यह बात उस नौकर से कही तो वह अन्दर के कमरे में गया वहॉ जा कर किसी से बात की और एक थैला भर कर सोना ले कर वहॉ से निकला।

वह थैला उस लड़की को दे कर कहा — "लो यह अपनी मॉ को दे देना और देखो रास्ता मत भूलना और जल्दी ही वापस

[34] Ivy is a kind of creeper which people normally grow on their walls.

आना। उनको यह मत बताना कि तुम कहाँ से आयी हो और कहाँ जा रही हो।”

लूसीला वह थैला ले कर अपने घर चली गयी। जब वह अपने घर पहुँची तो उसकी बहिनों ने देखा कि वह बहुत सजी बजी है सो वे तो उसके देखते ही जलन के मारे मर ही गयीं।

वह वहाँ कुछ घंटे ठहरी और जब वह वहाँ से वापस आने लगी तो उसकी माँ और बहिनों ने उससे जिद की कि वे भी उसके साथ चलेंगी पर उसने उनको साथ आने से मना कर दिया। वह उसी रास्ते से गुफा से हो कर अपने महल में आ गयी।

वह वहाँ दो महीने शान्ति से रही पर उसके बाद फिर उसकी अपने घर जाने की इच्छा होने लगी तो उसने नौकर से फिर कहा कि वह अपनी माँ को देखने जाना चाहती है। इस बार भी नौकर ने उसे वहाँ जाने की इजाज़त दे दी और उसको एक सोने भरा थैला दे कर विदा किया।

ऐसा तीन चार बार हुआ तो उसकी बहिनें उससे बहुत ज़्यादा जलने लगीं। आखिर उन बहिनों ने आपस में मिल कर यह निश्चय किया कि वे उसके बारे में एक गुल से बात करेंगी जिसको कि वे जानती थीं। उसने उनसे पूछा कि वह कैसी है।

सो अबकी बार जब लूसीला घर आयी तो उन्होंने उससे कहा — “हालाँकि तू हमें अपनी खुशियों के बारे में नहीं बता नहीं रही है पर तुझे पता होना चाहिये कि हमें सब पता है। हम जानते हैं कि तू

हर रात एक सुन्दर नौजवान के साथ सोती है जिसको कि तूने कभी देखा नहीं क्योंकि वे लोग तेरे पीने में कुछ मिला देते हैं और फिर तू गहरी नींद सो जाती है।

अगर तूने यह पहेली नहीं सुलझायी तो तू वैसी की वैसी ही रहेगी जैसी कि तू है सो तू उनकी सलाह मान जो तुझे प्यार करते हैं। आखीर में क्योंकि हम तेरा खून हैं तो हम तो तेरे भले की और खुशी की ही इच्छा रखते हैं न।

जब रात हो और तू सोने के लिये अपने पलंग पर जाये और तेरा नौकर तेरे लिये कुछ पीने के लिये ले कर आये तेरे मुँह धोने के लिये पानी ले कर आये तो तू उससे मुँह पोंछने के लिये तौलिया लाने के लिये जाने के लिये कहना। और जब वह चला जाये तो वह पीने वाला पेय फेंक देना इससे तू रात भर जाग पायेगी।

और जब तू देखे कि तेरा पति सो गहरी नींद सो गया है तो यह ताला ले इसको खोलना तो उसके न चाहते हुए भी उसका जादू टूट जायेगा और फिर तू दुनियाँ की सबसे ज़्यादा खुश और खुशकिस्मत लड़की होगी।"

बेचारी लूसीला नहीं जानती थी कि मखमल की गद्दी के नीचे कॉटे रखे हैं फूलों में जहरीला सॉप सो रहा है और सोने के कटोरे में जहर है। सो उसने अपनी बहिनों का विश्वास कर लिया और वह ताला ले कर गुफा में हो कर महल में चली गयी।

जब रात हुई तो जैसा उसकी नीच बहिनों ने उससे करने के लिये कहा था वैसा ही किया। उसने नौकर का लाया पेय फेंक दिया और उस आदमी के सोने का इन्तजार करने लगी।

जब सब जगह शान्त हो गया उसने एक मोमबत्ती जलायी तो उसने देखा कि उसके बिस्तर पर तो एक सुन्दर फूल पड़ा है – एक नौजवान जो लिली और गुलाब के फूल से भी सुन्दर है। इतनी सुन्दरता को देख कर उसके मुँह से निकला — "मेरे भगवान की कसम तुम मुझसे कभी भी बच कर नहीं जा सकते।"

उसने अपना ताला निकाला और उसे खोल दिया और लो उसने कुछ स्त्रियाँ अपने दोनों के ऊपर अपने हाथ में धागे की लच्छियाँ लिये हुए दिखायी दीं।

इन स्त्रियों में से एक स्त्री ने एक लच्छी उसके ऊपर गिरा दी और लूसीला जो बहुत ही दयालु थी यह न समझते हुए कि वह कहाँ थी बहुत ज़ोर से चीख पड़ी — "मैम अपना धागा उठा लो।"

उसके इस चिल्लाने की आवाज सुन कर वह नौजवान जाग गया और इस तरह से लूसीला के उसको देखे जाने पर इतना गुस्सा और परेशान हुआ कि उसने तुरन्त ही अपने नौकरों को बुलाया और उसको वही फटे कपड़े पहनाने के लिये कहा जिनमें वह उसको ले कर आया था। फिर उसने उसको उसकी माँ और बहिनों के पास छुड़वा दिया।

उसके नौकरों ने ऐसा ही किया। जब वह घर पहुँची तो उसका चेहरा पीला पड़ा हुआ था और दिल डर के मारे कॉप रहा था। उन्होंने उसको झिड़कते हुए कहा कि वह अब अपने रास्ते जाये उसका उनके पास अब कोई काम नहीं था।

अब उसको पता ही नहीं था कि वह किधर जाये सो वह इधर उधर भटकती रही। उसको बच्चे की आशा थी। काफी इधर उधर भटकने के बाद वह दुखी लड़की टौरेलौंगा[35] शहर आ गयी।

वहॉ वह महल चली गयी और राजा के अस्तबल की तरफ चली गयी। वहॉ जा कर वह भूसे के बिस्तर पर आराम करने के लिये लेट गयी। यहॉ उसको एक शाही दासी ने देख लिया तो उसने उसको बहुत अच्छी तरह से रखा। कुछ दिनों में जब उसके बच्चा होने का समय आया तो उसने एक बेटे को जन्म दिया।

वह बच्चा तो ऐसा लग रहा था जैसे कोई सोने की पोटली हो। जिस दिन वह पैदा हुआ उसी रात को एक सुन्दर नौजवान वहॉ आया जहॉ मॉ और बच्चा लेटे हुए थे उसने बच्चे को अपनी गोद में उठाया और बोला — "ओ मेरे सुन्दर बेटे। अगर मेरी मॉ तेरे बारे में जानती तो वह तुझे सोने के पानी में नहलाती और सुनहरे कपड़ों में लपेटती। और मैं? अगर मुर्गा न बोलता तो मैं तुझे कभी छोड़ कर न जाता।"

[35] Torre-Longa

जब वह यह सब कह रहा था कि तभी मुर्गा बोला और वह वहॉ से पारे की तरह गायब हो गया। नौजवान नौकरानी उसके बिस्तर के पास ही बैठी थी सो उसने यह सब देखा। उसके जाने के बाद उसने उस लड़की से वह सब कहा जो उसने देखा।

वह नौकरानी रोज लड़की के बिस्तर के पास बैठती और रोज उस नौजवान को वहॉ आते और बच्चे को उसे अपनी बॉहों में लेते देखती। फिर वह उसको वही शब्द कहते हुए देखती और उसके बाद मुर्गे की पहली बॉग के साथ गायब हो जाते हुए देखती।

जब ऐसा होते हुए कई दिन बीत गये तो उसने यह बात रानी से जा कर कही।

तो रानी ने एक होशियार डाक्टर की तरह जैसे सूरज निकलने पर आसमान में से तारों को भगा देता है उसी तरह उसने भी सब मुर्गों को कटवाने की मुनादी पिटवा दी। इससे बेचारी सारी मुर्गियॉ विधवा हो गयीं और बहुत दुखी हो गयीं पर रानी को इस बात की कोई चिन्ता नहीं थी।

शाम को रानी ने नौकरानी को भी उसकी जगह से हटा दिया और वह खुद जा कर उस लड़की के पास बैठ गयी और उस नौजवान के आने का बेसब्री से इन्तजार करने लगी।

वह नौजवान उसी समय वहॉ आया तो उसने उसे पहचान लिया कि वह तो उसी का बेटा था। वह अपनी जगह से उठी और उसने उसको गले लगा लिया।

उसके ऊपर एक गुल ने शाप डाल रखा था कि वह तब तक बस बाहर ही घूम कर अपना समय काटता रहे जब तक कि उसकी माँ उसको न देख ले उसको गले न लगा ले और उस समय मुर्गे बाँग न दें। सो जैसे ही उसकी माँ ने उसको गले लगाया उसका यह जादू टूट गया और उसकी बाहर घूमने की सजा भी खत्म हो गयी।

इस तरह से माँ ने अपना बेटा भी पा लिया और अपना नाती भी पा लिया जो एक रत्न की तरह था और लूसीला ने अपना पति पा लिया। उसकी बहिनों को जब उसकी खुशी का पता चला तो वे भी उसके पास आयीं पर उनका भी उसी तरह स्वागत हुआ जैसे कि उन्होंने अपनी बहिन का जब किया था जब उन्होंने उसको उसके महल से निकाले जाने पर किया था।

इसलिये बुरे का बुरा हुआ और वे बहुत दुखी हो कर वहाँ से लौट आयीं। अब उनको सीख मिल गयी थी कि "जलन से आदमी का दिल खराब होता है।"

5 2–10 दोस्त[36]

कोला जैकोपो का एक दोस्त है जो उसका खून चूसता है और उसी के ऊपर ज़िन्दा रहता है पर जैकोपी उससे किसी तरह भी छुटकारा नहीं पा सकता न तो किसी होशियारी से और न ही किसी चालाकी से। आखिर जब वह उसके लिये बिल्कुल असहनीय हो जाता है तो वह उसे बहुत ही बुरे बुरे शब्द कह कर घर से बाहर निकाल देता है।

इससे पहले की कहानी[37] बहुत ही सुन्दर तरीके से कही गयी इसलिये लोगों ने उसे ध्यान से सुना। लेकिन क्योंकि हर बार वे अपनी कहानियों के बीच में थोड़ा रुकते थे तो नौकर को ऐसा लगता था जैसे कि वह कॉटों पर बैठा हो।

राजकुमार थैडियस ने जैकोमा[38] से कहा कि अब वह अपनी कहानी सुनाये। सो जैकोमा ने अब अपनी कहानी सुनानी शुरू की —

स्त्रियों। जब निर्णय लेने की ताकत नहीं होती तो वहॉ निर्णय का मापदंड सौदागर के हाथ से नीचे गिर जाता है। इन्जीनियर ठीक कम्पास को भी गलत पढ़ने लगता है। और नाविक की अपनी तर्क करने ताकत भी खत्म हो जाती है।

---

[36] The Gossip. Tale No 5. (Day 2, Diversion 10) Told by Jacoma

[37] The Padlock.

[38] Prince Thaddeus asked Jacoma to tell her story

वह अज्ञानता की मिट्टी में जड़ पकड़ कर केवल शर्म के फल को जन्म देता है जैसा कि हम अपनी रोजमर्रा की ज़िन्दगी में देखते हैं और यह एक खास तरह की बात को जन्म देता है जैसा कि मैं अभी आप लोगों को इस कहानी में बताऊँगी।

एक बार की बात है कि पोमैगलिआनो में कोला जैकोपो[39] नाम का एक आदमी रहता था। उसकी पत्नी का नाम मासैला कार्नेचिया था और वह रैसीना की रहने वाली थी।

आदमी समुद्र की तरह बहुत ही अमीर था। उसको खुद को भी यह पता नहीं था कि उसके पास क्या था। उसके सूअरखाने में सूअर रोज सारा दिन भूसा खाते रहते थे।

पर क्योंकि उसके पास न तो कोई मुर्गे का बच्चा था और न कोई अपना ही बच्चा था और टनों पैसे थे फिर भी वह एक क्राउन को बचाने के लिये सौ सौ मील जाता आता था। वह बहुत ही गरीब तरीके से रहता था ताकि कुछ पैसा बचा सके।

जब भी वह अपनी पत्नी के साथ खाने की मेज पर बहुत थोड़ा सा खाना खाने के लिये भी बैठता तो उसका एक दोस्त आ जाता जो उसको अपने बिना एक चम्मच भी नहीं हिलाने देता।

ऐसा लगता था जैसे उसके शरीर में कहीं घड़ी लगी हो या फिर दाँतों में घड़ी लगी हो कि वह हर खाने के समय उसके दरवाजे पर आ कर खड़ा हो जाता ताकि वह उनके साथ खाना खा सके।

---

[39] Cola Jacopo – name of a person, liven Pomegliano. His wife's name was Masella.

वह वहाँ आ कर गरीब सा चेहरा लिये आ कर खड़ा हो जाता और फिर वैसा ही करता जैसा कि वे लोग करते। वे उससे पीछा नहीं छुड़ा सकते थे। वह वहीं रह कर उनके कौर गिनता रहता और कुछ कुछ कहता रहता कि उनको यह कहने पर मजबूर होना ही पड़ता "क्या तुम भी कुछ खाना पसन्द करोगे।"

इस बुलावे को वह उनको दोबारा नहीं कहने देता तुरन्त ही वह पति पत्नी के बीच में बैठ जाता और भूखों की तरह से खाने पर टूट पड़ता। भूखे शिकारी कुत्ते की तरह से उसे खाने लगता। जैसे वह किसी भेड़िये की तरह भूखा हो।

वह अपने हाथों का इस्तेमाल बहुत जल्दी जल्दी करता और विदेशी बिल्ली की तरह से अपनी ऑखें घुमाता। उसके दॉत चक्की की तरह से चलते और वह अपने खाने को पूरा का पूरा ही निगल जाता। एक कौर को वह खा नहीं पाता कि दूसरा कौर फिर वहाँ पहुँच जाता।

जब उसका पेट भर जाता तो उसका पेट खूब फूल जाता तब वह खाली प्लेटों की तरफ देखता शराब की बोतल उठाता और उसको एक घूँट में ही खाली कर देता। वह तब तक नहीं रुकता जब तक उसको उसकी तली नहीं दिखायी दे जाती। फिर वह कोला जैकोपो और उसकी पत्नी को आश्चर्य में भरा छोड़ कर चला जाता।

अब दोस्त को निर्णय करने की ताकत तो थी नहीं सो वह बिना तली के थैले के समान जो भी मेज पर रखा रहता खाता निगलता खाली करता बिगाड़ता और उन दोनों पति पत्नी को यह समझ में नहीं आता कि वे ऐसा क्या करें जिससे वे ऐसे नीच अनचाहे मेहमान आदमी से छुटकारा पा कर सन्तोष से खाना खा सकें।

एक सुबह उन्होंने सुना कि आज उनका वह दोस्त किसी काम से कहीं बाहर गया हुआ है। कोला जैकोपो तो यह खुशी की खबर सुन कर बहुत खुश हुआ।

वह बोला — "भगवान सूरज का भला करे आज हम लोग फिर से ठीक से खाना खा सकेंगे। अब हमें खाने के समय कोई परेशान करने वाला नहीं रहेगा। और अब हम क्योंकि आजाद हैं तो आज हम स्वादिष्ट दावत खायेंगे।"

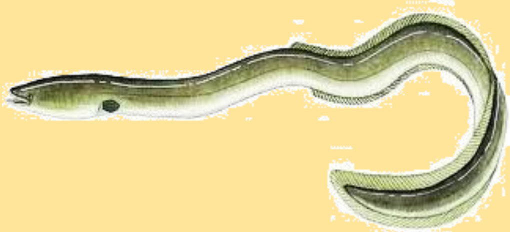

यह कह कर वह बाजार से एक बहुत बड़ी ईल मछली एक किलो बढ़िया आटा और एक बोतल शराब लाने के लिये चला गया। यह सब खरीद कर वह वापस आया।

तुरन्त ही उसकी पत्नी एक बढ़िया पिज़ा[40] बनाने के लिये बैठ गयी। पिज़ा बना कर उसने उसे ओवन में रखा और फिर ईल

[40] Pizza – a dough cake decorated with tomato sauce and cheese and some other things. See its picture above.

मछली तलने लगी। और जब सब कुछ तैयार हो गया तो उन्होंने उसे मेज पर सजाया और वे उसे खाने बैठे।

अभी उन्होंने एक कौर ही खाया होगा कि लो वह पैरैसाइट[41] दोस्त उनका दरवाजा खटखटा रहा था। मासैला ने बड़े दुख के साथ बाहर की तरफ देखा तो उसे अपनी खुशियों को नष्ट करने वाला नजर आया तो वह अपने पति से बोली —

"प्रिय। आज तो तुम कसाई के यहाँ से बहुत ही बुरा माँस खरीद कर लाये हो। काश तुम जोड़ वाली हड्डी खरीद कर लाये होते। आज तक कभी भी किसी को भी पूरी सन्तुष्टि नहीं मिली है कुछ न कुछ अड़चन तो लगी ही रहती है। और यह कड़वा पेय तो तुम नाली में ही फेंक दो और आज सूखा सूखा खाना ही गले में फँसाओ।"

कोला जैकोपो बोला — "इन सबको उठा कर रख दो। मेज साफ कर दो और खुद भी गायब हो जाओ। इन्हें कहीं ठूँस दो। इनका एक टुकड़ा भी नहीं दिखायी नही देना चाहिये। उसके बाद दरवाजा खोलना। तब शायद वह यह समझ जायेगा और यहाँ से चला जायेगा। उसके बाद हमें यह जहरीला खाना खाने का समय और जगह मिल जायेगी।"

जब वह दोस्त दरवाजे की घंटी बजा रहा था तो मासैला ने ईल एक आलमारी में रख दी शराब की बोतल बिस्तर के नीचे रख दी

---

[41] Parasite is that living being which does not make its own food and depends for his life on others.

और पिज़ा गद्दों के बीच में रख दिया। कोला जैकोपो मेज के ऊपर का मेजपोश नीचे को खिसका कर मेज के नीचे छिप गया और एक छेद में से झाँकने लगा।

पर उसके दोस्त ने यह सब बाहर के दरवाजे की चाभी के छेद से देख लिया था। सो जब दरवाजा खोला गया तो वह मुस्कुराते हुए घर के अन्दर घुसा और मासैला से यह कहते हुए पूछा कि क्या हुआ था — "तुमने तो मुझे बाहर ही छोड़ दिया था और जब मैं दरवाजा खुलने का इन्तजार कर रहा था तो एक साँप आ कर मेरे पैरों से लिपट गया। ओह माँ। वह तो कितना बड़ा था। ऐसे समझ लो जैसे कि वह ईल जिसे तुमने आलमारी में रखा है।

मैंने उसे अपनी आँखों से देखा। मैं तो उसे देख कर हवा से हिलायी गयी पेड़ की डाल की तरह काँप गया। मेरे शरीर में तो जैसे कीड़े चलने लगे हों। मैंने उसी शराब की बोतल के बराबर का पत्थर उठाया जैसी कि तुमने अभी अभी बिस्तर के नीचे छिपायी है और उसे उसके सिर पर दे मारा।

इससे मैंने उसका पिज़ा बना डाला जैसा कि तुमने अभी अभी अपने गद्दों के बीच में छिपाया है। और जब वह मर गया तब मुझे दिखायी दिया कि वह मुझे मेरे दोस्त जैकोपो की तरह देख रहा है जो इस समय मेज के नीचे छिपा हुआ है। मेरे शरीर में से तो डर के मारे जैसे सारा खून ही खत्म हो गया था।"

यह सुन कर कोला जैकोपो अब चुप नहीं रह सका सो उसने मेज के नीचे से अपना सिर बाहर निकाला जैसे कोई हँसोड़ अपना रोल अदा कर रहा हो चिल्लाया —

“अगर ऐसा है तो अब हम पेस्ट्री खायेंगे। गिलास शराब से भरेंगे और रोटी बनायेंगे। अब हमने अपना मुकदमा जीत लिया है। देखो अगर अब हमें तुम्हारा कुछ देना नहीं है तो तुम हमें अदालत में ले चलो। और अगर तुम हमसे नाखुश हो तो हमें टकसाल ले जा कर हमारे ऊपर झूठा इलजाम लगाओ। अगर हमने तुम्हारा कोई अपमान किया हो तो हमें बाँध दो।

पर यह किस तरह का मुकदमा है। तुम इसका अन्त कब करोगे। इसका मतलब यह है कि तुमको निर्णय लेना नहीं आता। तुमको हमारी चीज़ें बराबर चाहिये। एक उँगली काफी होनी चाहिये बजाय इसके कि तुम सारा हाथ लो।

अब यह हमको हमारे घर से नहीं निकाल सकता। जिसको निर्णय लेना नहीं आता वह समझता है कि सारी दुनियाँ उसकी है। पर जो अपने आपको नहीं तौलता उसे कोई दूसरा तौलता है। और अगर तुम्हारे पास कोई मापदंड नहीं है तो हमारे पास ऐसे औजार हैं जो तुमको तौल देंगे।

जैसा कि तुम्हें मालूम है हर हैजहौग के पास अपना भूसे का एक बिस्तर होता है इसलिये तुम हमें हमारी मुसीबतों के साथ हमें अकेला छोड़ दो।

अगर तुम आज से आगे इस बात को बढ़ाना चाहते हो तो तुम अपना रास्ता भूल जाओगे और फिर तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। अगर तुम यह सोचते हो कि मेरा घर तुम्हारे लिये एक सराय है जिसका दरवाजा सड़े हुए गलों हुओं के लिये खुला हुआ है और तुम जब चाहो आ कर यहाँ खा सकते हो तो भूल जाओ इस बात को। अपने दिमाग से निकाल दो इसे।

मुझे तुम्हारी कोई चिन्ता नहीं है। अब तुम्हें पता चल गया है कि किसका अपमान होना चाहिये। अब तुम्हारी आँखों में रोशनी आ गयी है। तुमने देख लिया है कि तुमने गधे को कबूतर समझ लिया है।

अब तुम अपने घर वापस जा सकते हो। अब और आगे तुम ऐसा नहीं कर सकोगे। तुम इस घर पर निशान बना सकते हो कि अब तुम्हें इस कुँए से पानी और नहीं मिलेगा।

तुम खाने पर निगाह रखने वाले हो। तुम रोटी चुराने वाले हो। तुम मेज लगा कर उन्हें ठीक से सजाने वाले हो। तुम रसोईघर में झाड़ू लगाने वाले हो। बर्तन खुरचने वाले हो। कटोरे साफ करने वाले हो। भूखे हो। भेड़िये की तरह से खाना खाने वाले हो। तुम्हारा पेट बहुत बड़ा है। तुम किसी गधे जैसे हो।

तुम तो किसी राजकुमार का भालू तक खा लोगे और वह तुम्हारा पेट भी खराब नहीं करेगा। तुम तो पी पी कर टाइबर नदी[42]

[42] Tiber River is the famous river of Italy.

भी खाली कर दोगे और फिर भी तुम्हारा पेट नहीं भरेगा। तुम और चर्चों में चले जाओ वहाँ जा कर अपना जाल बिछाओ।

जा कर चिथड़े इकट्ठे करो। खाने के लिये कूड़ेदानों से माँस के टुकड़े इकट्ठा करो। जाओ और मरे हुओ की जगहों से मोम इकट्ठा करो। पीने के लिये पानी की बड़ी बड़ी टंकियाँ खाली करो। और भगवान करे अब तुम्हें यह घर आग की तरह लगे।

हर एक की अपनी अपनी मुश्किलें होती हैं और हर आदमी जानता है उनकी जड़ कहाँ है और कहाँ उनका पेट दर्द करता है। जो इससे बच सकते हैं उनको इससे बचने दो। अब समय आ गया है कि अब तुम माँ का दूध पीना छोड़ दो।

ओ बेकार के आदमी। कुछ काम करो। कोई कला सीखो और फिर अपने लिये कोई नया मालिक ढूँढ लो।"

अभागा दोस्त अपने दोस्त के मुँह से यह लम्बा भाषण सुन कर तो बस पत्थर की तरह ठंडा और जमा हुआ खड़ा रह गया। जैसे कोई चोर चोरी करता पकड़ा गया हो। या फिर जैसे कोई यात्री रास्ता भूल गया हो।

या फिर जैसे किसी नाविक का जहाज़ बीच समुद्र में टूट गया हो। या फिर जैसे कोई वेश्या अपना हिसाब किताब भूल गयी हो। या फिर जैसे किसी बच्चे ने अपना बिस्तर गन्दा कर दिया हो।

अपनी जीभ अपने दाँतों के बीच में ही रख कर, सिर लटका कर, दाढ़ी को छाती तक लटकाये, आँखों में आँसू लिये, सुड़कती

नाक लिये, खाली हाथ, बीमार सा, पूँछ अपनी टाँगों में दबाये बिना एक बार भी पीछे देखे चुपचाप वापस लौट गया।

यही समय अच्छा था उसको सजा देने का। कहते हैं न —

कुत्ता जिसे शादी की दावत में नहीं बुलाया गया हो
उसे वहाँ नहीं जाना चाहिये नहीं तो उसे हंटर पड़ेंगे

वहाँ बैठे सभी लोग दोस्त को मिली हुई डाँट को सुन कर बहुत ज़ोर से हँस पड़े। उनको यह भी पता नहीं चला कि अब सूरज के बैंक में रोशनी बहुत कम रह गयी है और दरवाजे के नीचे की झिरी से सुनहरी चाभी फेंक कर सूरज वहाँ से चला गया है।

दूसरा दिन समाप्त

तीसरा दिन

जैसे ही सूरज की किरनें फिर से वहाँ आयीं कि सब लोग राजकुमार और उसकी पत्नी भी दूसरी स्त्रियों के साथ सुबह के नाश्ते और रात के खाने तक का समय खुशी से बिताने के लिये फिर उसी जगह वापस आ गये।

उन्होंने संगीत बजाने वालों को बुला भेजा और बहुत खुश खुश नाचना शुरू किया। कुछ लोगों ने खेल खेलने शुरू किये जैसे – "रोजर" "नौजवान किसान लड़की" "गुल की कहानी" "स्टीफ़ैनिया" "चालाक किसान" "सारा दिन फाख्ता के साथ" "जिप्सी" "मेरा चमकीला तारा" आदि आदि। उन्होंने अपना नाच "लूसी द बिच" से खत्म किया। और यह सब उन्होंने उस दासी को खुश करने के लिये किया।

और इस तरह समय बढ़ चला और उन्हें इस बात का पता ही नहीं चला जब तक खाने का समय नहीं आ गया। बहुत तरह के बढ़िया बढ़िया खाने मेज पर लगाये गये थे। लगता था जैसे वे सब स्वर्ग से आये हों। वे इतने स्वादिष्ट थे कि लोग उसे अभी तक खा ही रहे थे। खाने के बाद मेज साफ की गयी और ज़ीज़ा जो कॉटों पर बैठी थी ने अपनी कहानी सुनायी और फिर बारी आयी सीका[43] की —

[43] Cecca – name of the Storyteller

6 3–2 हाथकटी पैन्टा[44]

पैन्टा अपने भाई की शादी अपने आपसे करने का विरोध करती है और अपने हाथ काट कर उनको उसे भेंट में भेज देती है। वह हुक्म देता है कि उसे एक बक्से में बन्द कर के समुद्र में फेंक दिया जाये। समुद्र की लहरें उस बक्से को समुद्र के एक किनारे पर छोड़ देती हैं जहाँ एक नाविक को वह बक्सा मिल जाता है और वह उसे घर ले जाता है पर उसकी पत्नी उसे फिर से उसी बक्से में बन्द कर के फिर से समुद्र में फेंक देती है। अबकी बार वह एक राजा को मिल जाती है तो वह उसको अपनी पत्नी बना लेता है। पर उसी स्त्री की नीचता की वजह से उसको राज्य निकाला दे दिया जाता है। काफी कठिनाइयों के बाद वह अपने पति और भाई को मिल जाती है।

ज़ीज़ा की कहानी[45] सुनने के बाद लोगों का यह सोचना था कि कैनैटैला के साथ जो कुछ हुआ वैसा उसके साथ होना ही चाहिये था क्योंकि वह अंडे में बाल ढूँढ रही थी। फिर भी वे खुश थे कि वह इतने सारे दुखों से बच पायी थी।

लोगों का विचार था कि यह जानते हुए भी कि उसके लिये सारे आदमी लोग खराब थे वह इतना नीचे आ गयी थी कि उसको एक लोहार के आगे झुकना पड़ा ताकि वह उसे इतनी सारी मुश्किलों से बचा सके।

पर राजकुमार ने सीका[46] से कहा कि अब वह अपनी कहानी शुरू करे। सो उसने तुरन्त ही अपनी कहानी शुरू की —

---

[44] Penta the Handless. Tale No 6. (Day 3, Diversion 2) Told by Cecca

[45] Zeza told the Story of Cannetella – read this story in “Il Pentamerone 16-32” in Hindi translated by Sushma Gupta

[46] Cecca – another storyteller

गुण मुश्किलों की सूली पर परखे जाते हैं। अच्छाइयों की मोमबत्ती सबसे ज़्यादा वहीं चमकती है जहाँ सबसे ज़्यादा अँधेरा होता है मेहनत का फल हमेशा अच्छा होता है।

जो आलस में बैठा रहता है वह नहीं जीतता बल्कि जो चमचा घुमाता रहता है बल्कि वही जीतता है जैसा कि प्रेता–सीका[47] के राजा की बेटी ने किया जिसने अपना खून और मौत के खतरे को उठा कर अपने लिये एक बड़े भाग्यशाली के जैसा सन्तोष का घर बनवाया जैसा कि मैं अभी आपको बताने वाली हूँ। —

प्रेता–सीका के राजा की पत्नी मर गयी थी तो उसके दिमाग के अन्दर शैतान घुस गया। उसने सोचा कि वह अपनी बहिन पैन्टा से शादी कर लेता है।

यह सोच कर एक दिन उसने उसे बुला भेजा और उससे अकेले में बात की — "ओ मेरी बहिन। यह मामला कोई ऐसा नहीं है कि कोई आदमी जिसकी तर्क करने की ताकत ठीक हो वह भी इसमें ठीक से निर्णय ले सके। इसके अलावा वह यह भी नहीं जानता कि जब किसी अनजाने के पैर इस घर में पड़ेंगे तब कैसा होगा।

सो इस मामले पर ठीक से विचार करने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि मैं तुमसे शादी कर लूँ क्योंकि तुम मेरी साँस से बनी हो और मैं तुम्हारा स्वभाव भी जानता हूँ। तुम भी इस गाँठ को बाँध कर मेरे साथ रह कर सन्तुष्ट रहोगी। तो इस काम को होने दो।"

---

[47] Preta-secca – name of a place

पैन्टा ने यह सलाह पाँचवीं बार सुनी तो उसका तो दिमाग ही घूम गया उसके चेहरे पर रंग आने जाने लगा। उसको अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ। यह सोचते हुए कि यह काम नामुमकिन है और उसका भाई इतना नीचे गिर जायेगा कि वह उसको दो सड़े हुए अंडे बेचेगा जबकि उसे सौ ताजा अंडों की जरूरत थी।

कुछ देर तक तो वह चुप खड़ी रही और सोचती रही कि वह उसको इस गन्दे सवाल का जवाब कैसे दे। उसका धीरज छूट गया और वह बोली — "अगर तुमने अपनी बुद्धि खो दी है तो खोओ पर मैंने अपनी शर्म नहीं खोयी है। मुझे तो तुम्हारे ऊपर आश्चर्य हो रहा है कि तुमने अपने मुँह से ऐसे शब्द निकालने की हिम्मत कैसे की जो अगर मजाक में भी कहे जाते तो भी उन्हें कोई गधा भी नहीं कह सकता था।

और अगर यह समझ बूझ कर कहे जा रहे हैं तो इनमें से बहुत बुरी बू आ रही है। मुझे बहुत अफसोस है कि अगर तुम ऐसे शब्द बोल सकते हो तो मेरे पास इनको सुनने के लिये कान नहीं हैं।

मैं और तुम्हारी पत्नी? हॉ हॉ और तुम्हारी इच्छा पूरी होगी? इतनी गन्दी हरकतें तुम कबसे करने लगे हो? क्या तुम्हें मालूम भी है कि हम कहॉ हैं? क्या बर्फ में? जा कर अपने पादरी से कहो कि वह तुम्हें ठीक करे और आगे से फिर कभी ऐसी बात मुँह से मत निकालना नहीं तो फिर मैं कुछ भयानक कर बैठूँगी।

तब तुम मुझे अपनी बहिन समझना या नहीं पर मैं तुम्हें वह नहीं मानूँगी जो तुम मेरे अब हो।"

ऐसा कह कर वह वहाँ से चली गयी और दूसरे कमरे में घुस कर उसका दरवाजा बन्द कर के उसे अन्दर से ताला लगा दिया। फिर उसने एक महीने से भी ज़्यादा तक अपने भाई का चेहरा तक नहीं देखा।

उसने उस नीच राजा को आश्चर्यचकित छोड़ दिया जैसे किसी बच्चे को डाँट कर छोड़ देते हैं जब वह कोई छोटा सा बर्तन तोड़ देता है या फिर रसोईघर की नौकरानी को यह कहने पर छोड़ देते हैं कि रसोई का माँस बिल्ली चुरा कर ले गयी।

कुछ दिनों बाद राजा ने अपनी इच्छा फिर से जाहिर की तो बहिन ने यह जानना चाहा कि ऐसी क्या इच्छा थी जो उसको यह बात बार बार कहने पर मजबूर कर रही थी सो वह अपने कमरे से निकल कर राजा के कमरे में गयी।

वहाँ जा कर वह उससे बोली — "ओ राजा। जब भी मैं अपने आपको शीशे में देखती हूँ तो मैं अपने आपको बहुत किस्मत वाला समझती हूँ कि मेरे चेहरे में ऐसी किसी तरह की कोई चीज़ नहीं है जो तुम्हें आकर्षित करे। मैं कोई इतनी सुन्दर भी नहीं हूँ कि लोग मेरी तरफ आकर्षित हों या मेरे लिये आहें भरें।"

राजा बोला — "मेरी पैन्टा। तुम बहुत सुन्दर हो और तुम्हारे अन्दर सब गुण हैं। पर तुम्हारे हाथ खास कर के इतने सुन्दर हैं कि

वे मुझे तुम्हारी ओर आकर्षित करते हैं। उनके देख कर मैं अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठता हूँ और मैं बेहोश सा हो जाता हूँ।

यह तुम्हारा हाथ एक ऐसे कॉटे[48] की तरह है जो मेरी छाती में से मेरा दिल निकाल लेता है। वह एक ऐसे हुक की तरह से है जो मेरी ज़िन्दगी की गागर में से मेरी आत्मा को एक बालटी की तरह खींच लेता है।

उफ़ तुम्हारा हाथ। तुम्हारा सुन्दर हाथ एक चम्मच की तरह है जो सूप का मीठा स्वाद चखाता है वह एक सॅड़ासी की तरह है जो मेरी इच्छाओं को पकड़ लेता है वह एक फावड़े की तरह है जो मेरे दिल पर मिट्टी छिड़कता है।”

वह इससे आगे भी कुछ और कहता कि पैन्टा बोली — “तुम जा सकते हो। मैंने तुम्हें सुन लिया है। हम फिर मिलेंगे।” कह कर वह अपने कमरे में चली गयी।

वहॉ पहुँच कर उसने अपनी एक बहुत ही बेवकूफ दास को वहॉ बुलाया उसे मुट्ठी भर कर सिक्के दिये और उसे एक बड़ा चाकू दे कर कहा — “मेरे अली। तुम मेरे ये हाथ काट दो। मैं इनको छिपे तौर पर बहुत सुन्दर बनाना चाहती हूँ और फिर कहीं चली जाऊॅगी।”

दास ने उसका विश्वास करते हुए कि वह अपनी मलकिन की खुशी के लिये यह कर रहा है दो वार में ही उसके हाथ काट दिये।

[48] Translated for the word “Fork”

पैन्टा ने उनको एक बर्तन में रखा उनको एक रेशमी कपड़े से ढका और राजा के पास भेज दिया। साथ में एक सन्देश भी भेज दिया कि उसे विश्वास था कि वह उन्हें बहुत पसन्द करेगा जिन्हें वह इतना चाहता था। भगवान उसको तन्दुरुस्त रखे। और उसे सलाम किया।

राजा ने जब यह देखा तो वह तो गुस्से के मारे पागल हो गया। गुस्से में भर कर उसने तुरन्त ही एक बक्सा बनाने का हुक्म दिया जिसे बाहर से अच्छी तरह से कोल तार से लीप दिया जाये। फिर उसमें उसकी बहिन को उसमें बन्द कर के समुद्र में फेंक दिया जाये।

ऐसा ही किया गया। बक्सा समुद्र की लहरों पर झूलता हुआ समुद्र के किनारे जा कर लग गया। वहाँ कुछ नाविक जाल डाल रहे थे तो उन्होंने उस बक्से को निकाल लिया और उसे खोल कर देखा तो उसमें से तो पैन्टा निकली जो चाँद से भी अधिक सुन्दर थी।

मसीलो[49] जो उनका सरदार था और उन सबसे अधिक साहसी था उसे अपने घर ले गया। घर पहुँच कर उसने अपनी पत्नी नूचा से कहा कि वह उसका ठीक से ख्याल रखे।

पर जैसे ही उसका पति वहाँ से चला गया तो वह जो धोखा देने और शक करने में बहुत तेज़ थी फिर से पैन्टा को उसी बक्से में

[49] Masiello – name of the Chief of sailors, and Nuccia was the name of his wife.

बन्द कर देती है और फिर से समुद्र में फिंकवा देती है। वह बक्सा फिर से समुद्र की लहरों पर सवार इधर उधर घूमता रहता है।

इत्तफाक से एक बहुत बड़ा जहाज़ उसे देख लेता है जिस पर टैरा–वरडे का राजा[50] यात्रा कर रहा होता है। इस बक्से को पानी पर तैरते हुए देख कर राजा नाविकों को एक छोटी नाव उतारने का हुक्म देता है।

जब वे उस बक्से को ले आते हैं तो वे उसे खोलते हैं तो उसमें एक दुखी लड़की को देखते हैं। उस ताबूत में इतनी सुन्दर लड़की को ज़िन्दा देख कर राजा को लगता है कि उसको तो खजाना मिल गया। पर यह देख कर उसे दुख होता है कि उस बक्से में हालाँकि बहुत सारे रत्न थे पर उसको पकड़ने के लिये कोई हैन्डिल नहीं था।

वह उसे अपने राज्य ले जाता है और उसे अपनी रानी की सेवा में दे देता है। वह रानी की हर तरह से सेवा करती – जैसे सिलाई, सुई में धागा डालना, कौलरों में कलफ लगाना, रानी के बालों में कंघी करना। यह सब काम वह अपने पैरों से करती। इन सब अच्छाइयों की वजह से रानी उसको अपनी बेटी की तरह से प्यार करती।

एकाध महीने बाद रानी को उसकी किस्मत ने न्याय करने के लिये उसे ऊपर बुला लिया। उसने मरते समय राजा को अपने पास बुलाया और कहा — "अब मेरे शरीर में आत्मा बहुत थोड़ी देर के

[50] King of Terra-Verde

लिये ही रह गयी है। आप अपने दिल शरीर और आत्मा सबको मजबूत रखें। पर अगर आप मुझे प्यार करते हैं और यह चाहते हैं कि मैं सन्तुष्टि से दूसरी दुनियॉ में जाऊॅ तो आप मेरी एक इच्छा पूरी कीजिये।"

राजा रोते हुए बोला — "कहो मेरी रानी कहो। अगर मैं अपने प्यार का सबूत तुम्हें अपनी ज़िन्दगी में न दे सका तो मैं कम से कम तुम्हें मरने का बाद तो इस बात की पहचान दे ही सकता हूॅ।"

रानी बोली — "तो फिर अब आप मेरी बात सुनिये जैसा कि आपने वायदा किया है जब मेरी ऑखें बन्द हो जायें आप पैन्टा से शादी कर लीजियेगा। हालॉकि हमें यह पता नहीं है कि वह कौन है और न यह पता है कि वह कहॉ से आयी है पर लगता है कि वह किसी अच्छे कुल की है और अच्छे आचरण वाली है इसलिये वह दौड़ के लिये एक अच्छा घोड़ा है।"

यह सुन कर राजा ने जवाब दिया — "भगवान करे तुम हजार साल जियो पर अगर तुम्हें मुझसे गुड बाई कहनी ही पड़ी तो मैं पैन्टा से शादी कर लूॅगा यह मैं तुमसे वायदा करता हूॅ। मुझे इस बात की कोई चिन्ता नहीं है कि उसके हाथ नहीं हैं और वह बहुत ही पतली दुबली सी है क्योंकि बुरे लोगों से कम से कम लेना चाहिये।"

पर शायद रानी राजा की यह बात न सुन सकी। जैसे ही रानी की ज़िन्दगी की मोमबत्ती बुझी राजा ने पैन्टा से शादी कर ली। कुछ दिनों में उसे बच्चे की आशा हो गयी। इत्तफाक से कुछ दिनों बाद

ही राजा को ऐन्टो-स्कूगलियो जाना पड़ा। उसने पैन्टा को विदा कहा और जहाज़ ने अपना लंगर उठा लिया।

नौ महीने बाद पैन्टा ने एक बहुत ही सुन्दर बेटे को जन्म दिया। नये बच्चे के आने की खुशी में सारे शहर में रोशनी की गयी और दावतें की गयीं। राजा के मन्त्रियों और सलाहकारों ने तुरन्त ही राजा को एक नाव के द्वारा यह सन्देश भेजा कि उसके पीछे क्या हुआ है।

रास्ते में तूफानी मौसम होने की वजह से एक पल में तो ऐसा लगता जैसे नाव तारों को छूने के लिये ऊपर बढ़ रही है तो दूसरे ही पल ऐसा लगता कि नाव समुद्र की तली तक पहुँच गयी है।

भगवान की कृपा से वह नाव उसी किनारे पर पहुँच गयी जहाँ पैन्टा पहली बार लोगों को मिली थी और वहाँ के नाविकों का सरदार उसको दया कर के अपने घर ले गया था और फिर उसकी पत्नी की बेरहमी की वजह से उसे उसी समुद्र में फेंक दिया था।

अब जैसा कि किस्मत में लिखा था उस दिन वही स्त्री नूचा अपने बच्चे के कपड़े वहाँ धो रही थी। दूसरे लोगों के बारे में उसे जानने की इच्छा थी जैसा कि स्त्रियों का स्वभाव होता है सो उसने उस नाव के मालिक से पूछा कि वह कहाँ से आ रहा था और उसे किसने भेजा था।

नाव का मालिक बोला — "मैं टैरा–वरडे से आया हूँ और ऐन्टो–स्कुओगलियो[51] वहाँ के राजा के पास उनके लिये एक चिट्ठी ले कर जा रहा हूँ। मैं इसी वजह से वहाँ जा रहा हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि यह चिट्ठी उसकी पत्नी ने ही उसे लिखी है। पर मैं तुम्हें यह नहीं बता सकता कि उसमें क्या लिखा है।"

नूचा ने पूछा — "और उसकी पत्नी कौन है।"

नाव का मालिक बोला — "मैंने कुछ ऐसा सुना है कि उनकी पत्नी एक बहुत सुन्दर लड़की है और हाथ कटी पैन्टा के नाम से जानी जाती है क्योंकि उसको दोनों हाथ नहीं है।

साथ में मैंने यह भी सुना है कि वह समुद्र में किसी बक्से में बन्द मिली थी और अपनी खुशकिस्मती की वजह से राजा की रानी बन गयी। मुझे नहीं पता कि वह इतनी जल्दी में राजा को क्या लिख रही है कि मुझे उसे बहुत जल्दी पहुँचाने का हुक्म है।"

यह सुन कर नूचा ने उसे अपने घर कुछ पीने के लिये निमन्त्रित किया। अपने घर ले जा कर उसने उसे इतनी शराब पिलायी कि वह बिल्कुल ही बेहोश हो गया।

फिर उसने उसकी जेब से रानी पैन्टा की दी हुई चिट्ठी निकाली और एक चिट्ठी लिखने वाले को बुला कर उससे वह चिट्ठी पढ़वायी। जितनी देर तक वह चिट्ठी पढ़ता रहा वह उसे सुन सुन

[51] I have come from Terra-verde and I am going to Anto-Scuoglio.

कर जलती भुनती रही। चिट्ठी पढ़ने वाले के हर शब्द पर उसके मुँह से एक आह निकल जाती।

आखीर में उसने चिट्ठी लिखने वाले से कहा कि वह उसकी हर बात को झूठा लिख दे। उसने उससे कहा कि वह लिखे कि रानी ने एक कुत्ते को जन्म दिया है और अब वे उसके हुक्म का इन्तजार कर रहे हैं कि उसका क्या करना है। यह लिखने के बाद उन्होंने चिट्ठी बन्द की और फिर से नाविक की जेब में रख दी।

कुछ देर बाद नाविक की ऑख खुली तो उसने देखा कि अब मौसम साफ हो गया है सो उसने लंगर उठाया और ऐन्टो-स्कुओगलियो की तरफ अपनी यात्रा पर चल दिया।

वहॉ पहुॅच कर उसने वह चिट्ठी राजा को दी। राजा ने कहा कि वे लोग रानी को खुश रखें ताकि उसे कोई परेशानी न हो क्योंकि ऐसे काम तो भगवान की इच्छा के अनुसार होते हैं और भले लोगों को इसमें दखलन्दाजी करने का कोई अधिकार नहीं है।

यह सुन कर नाव का मालिक वापस चल दिया और फिर वही उसी जगह आया जहॉ उसे नूचा मिली थी। नूचा ने एक बार फिर उसे खूब पिलायी और उसकी आवभगत की। एक बार फिर नाव का मालिक पी कर बेहोश हो गया।

एक बार फिर नूचा ने उसकी जेब से चिट्ठी निकाली। चिट्ठी लिखने बाले को बुलवाया चिट्ठी पढ़वायी उस जवाब को फिर से उलटा लिखवाया।

उसने टैरा–वरडा वाले मन्त्रियों और सलाहकारों के लिये लिखवाया कि वे रानी और उसके बेटे को तुरन्त ही जला दें। जब वहाँ मन्त्रियों और सलाहकारों ने इसे पढ़ा तो वे तो सन्न रह गये। वे आपस में कानाफूसी करने लगे।

उन सबने इस मामले पर बहुत सोच विचार किया और इस नतीजे पर पहुँचे कि या तो राजा पागल हो गया है या किसी ने उसके ऊपर जादू टोना कर दिया है क्योंकि उनकी मोती जैसी पत्नी है और एक रत्न जैसा बेटा है तो उनको ऐसे मारने का हुक्म वह कैसे दे सकते हैं।

तो उन्होंने बीच का रास्ता अपनाने का सोचा। उन्होंने रानी और उसके बेटे को शहर से दूर कहीं भेज दिया जहाँ से उनकी कोई खबर न सुनी जा सके। सो उन्होंने उसको कुछ पैसे दिये ताकि वह बस ज़िन्दा रह सके। उन्होंने उसे अमीरी के घर से दूर रोशनियों के शहर से दूर पति से दूर भेज दिया।

दुखी पैन्टा को पता चल गया कि उसे राज्य से बाहर निकाल दिया गया है। हालाँकि वह कोई बेईमान स्त्री नहीं थी और न ही उसका किसी डाकुओं के गिरोह से कोई सम्बन्ध था फिर भी... ।

अपने बच्चे को अपनी बांहों में सँभाले रोती हुई वह लैगो–ट्रुवोलो[52] की तरफ चल दी। वहाँ एक जादूगर रहता था। उसने इस सुन्दर लड़की को देख कर जिसे देख कर दिल में दया आती थी

[52] Lago-Truvolo

वह लड़की जिसने बिना हाथों के कई लड़ाइयाँ लड़ी थीं उससे कहा कि वह उसको अपनी पूरी कहानी बताये।

तब उसने उसे बताया कि किस तरह से उसका भाई उससे शादी करना चाहता था और वह उससे शादी कर नहीं सकती थी सो उसने उसे मछलियों के खाने के लिये छोड़ दिया। उसके बाद उसने उसे अपनी पूरी कहानी सुना दी।

यह दुखभरी कहानी सुन कर जादूगर तो रो पड़ा और उसका रोना तो रुका ही नहीं। जो दया उसका हाल अपने कानों से सुन कर उसके दिल में उपजी उससे उसके मुँह से तो बस आह ही निकलती रही।

उसने उसे बहुत तरीके से तसल्ली दी — "बेटी। तसल्ली रखो। क्योंकि आत्मा का यह घर कितना भी सड़ जाये फिर भी आशा इसको बनाये रखती है इसलिये तू अपनी हिम्मत बनाये रख। भगवान कभी कभी बहुत बड़ी बड़ी मुश्किलें इसलिये भेजता है ताकि आगे आने वाली छोटी छोटी सफलताऐं भी आदमी को बड़ी बड़ी लगें।

तू इस बात में कोई शक नहीं करना कि तुझे यहाँ माता पिता दोनों मिल गये हैं। मैं तेरी दम रहते तक सहायता करूँगा।"

दुखी पैन्टा ने उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और कहा — "मैं अब किसी भी चीज़ की ज़रा सी भी परवाह नहीं करती। अब चाहे भगवान मुझे कितनी भी मुश्किलें क्यों न दे मुझे कितना ही

बरबाद क्यों न करे अब तो मैं आपकी शरण में हूँ। जहाँ तक आपके वश में होगा आप ही मेरी रक्षा करेंगे। मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे मेरा बचपन लौट आया हो।”

एक तरफ से बहुत सारे शब्द दया के और दूसरी तरफ से धन्यवाद के कहने सुनने के बाद जादूगर ने पैन्टा के लिये अपने महल में एक बहुत ही शानदार कमरे का इन्तजाम कर दिया और सबसे कह दिया कि सब लोग उसे उसकी बेटी की तरह मानें।

अगली सुबह जादूगर ने एक ढिंढोरा पीटने वाले को बुलवाया और उससे कहा कि वह सारे शहर में यह ढिंढोरा पीट दे कि जो कोई भी अपना दुर्भाग्य आ कर उसे बतायेगा तो उसको सोने का एक ताज और एक दंड जो एक राज्य की कीमत के बराबर होगा दिया जायेगा।

यह खबर यूरोप भर में फैल गयी। बहुत सारे लोग इस खजाने को लेने के लिये वहाँ आये। एक ने बताया कि वह सारी उम्र दरबार में काम करता रहा कि उसको पता चला कि उसका पानी और साबुन खो गया है। उसकी जवानी और तन्दुरुस्ती जा चुकी है। उसको केवल चीज़[53] ही दी गयी है।

एक और आया तो उसने कहा कि उसे अपने ऊपर वाले औफीसर से अन्याय मिला है जिसका वह विरोध नहीं कर सका पर

[53] Cheese – processed paneer

फिर भी उसको वह कड़वी गोली निगलनी पड़ी और वह किसी से अपने गुस्से को भी नहीं कह सका।

एक बोला कि उसने अपना सारी चीज़ें एक जहाज़ में रख दी थीं पर हवा उलटी बहने की वजह से उसका सब कुछ नष्ट हो गया।

एक और ने शिकायत की कि उसने अपनी सारी ज़िन्दगी लिखने में लगा दी जिससे उसे बहुत थोड़ी सी आमदनी हुई। उससे उसे कोई खास फायदा नहीं हुआ। यह देख कर कि कलम और स्याही के काम लोगों के लिये कितने भाग्यशाली थे उसने यह काम लिया था पर उसके लिये यह काम कुछ अच्छा साबित नहीं हुआ वह अपने आपसे बहुत निराश हो गया था।

इस बीच टैरा–वरडे का राजा घर लौटा तो घर में देखा कि यह सब क्या हो गया था। यह देख कर तो वह पागल सा ही हो गया। उसने ऐसा बर्ताव करना शुरू कर दिया जैसे किसी पागल शेर को खोल दिया गया हो।

वह तो अपना सारे मन्त्रियों और सलाहकारों को जला देता अगर उन्होंने उसे उसकी चिट्ठी न दिखायी होती। यह देख कर कि इस चिट्ठी को बदला गया है उसने उस नाव के मालिक को बुलवाया जो उस चिट्ठी को उसके पास से ले कर आया था। उसने उससे पूछा कि रास्ते में क्या हुआ था।

जब उसने सारा हाल बताया तो राजा को विश्वास हो गया कि मासीलो की पत्नी ने ही यह सब किया होगा। उसने अपने हथियार लिये और उस किनारे की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने उस स्त्री को ढूँढा और पा लिया।

उससे नम्रता से बात करने पर राजा ने उससे सब उगलवा लिया और निश्चय किया कि द्वेष और जलन की वजह से ही उसने रानी के साथ ऐसा किया। उसने हुक्म दिया कि उस स्त्री को सजा दी जाये। सो उन्होंन उस स्त्री के सारे शरीर पर मोम मला जलती हुई लकड़ियों के ऊपर फेंक दिया।

राजा भी उसे तब तक खड़ा वहाँ देखता रहा जब तक उसके शरीर के सारे हिस्से जल कर खाक नहीं हो गये। उसके बाद ही उसने नाविक को वहाँ से लंगर उठाने और वापस घर जाने के लिये कहा।

जब वह वापस घर जा रहा था तो रास्ते में उसको एक बड़ा जहाज़ मिला। पता करने पर पता चला कि वह जहाज़ तो प्रेता–सीका के राजा का जहाज़ था और वह राजा खुद उस पर मौजूद था सो दोनों में बहुत देर तक बात हुई।

बातों बातों प्रेता–सीका के राजा ने टैरा–वरडे के राजा को बताया कि वह लैगो–ट्डुवोलो जा रहा था क्योंकि वहाँ के राजा ने एक ढिंढोरा पिटवा रखा था कि जो कोई सबसे ज़्यादा बड़े दुर्भाग्य का मारा होगा उसको वह सोने का एक ताज और दंड देगा सो वह

उसी के लालच में जा रहा था। वरना वह तो दुनियाँ का सबसे ज़्यादा खराब किस्मत वाला था।

टैरा–वरडे के राजा ने कहा — "अगर तुम केवल इसी लिये वहाँ जा रहे हो तो मेरी किस्मत तो तुमसे भी ज़्यादा खराब है। और ज़्यादा नहीं तो कम से कम तुम्हारे जैसी तो है ही। मैं **12** के **15** दे सकता हूँ और सबसे ज़्यादा अभागे से भी आगे निकल सकता हूँ चाहे वह कोई भी हो।

और जहाँ लोग छोटी सी लालटेन ले कर अपनी चीज़ें ढूँढते हैं मैं उसे कब्र में से भी निकाल लाऊँगा।

इसलिये मैं भी तुम्हारे साथ ही चलता हूँ। हम लोगों को भले लोगों की तरह से बर्ताव करना चाहिये। हम दोनों में से कोई भी जीते वह दूसरे से उसे आधा आधा बाँट लेगा – सौंफ के एक दाने के बराबर भी।"

प्रेता–सीका के राजा ने कहा ठीक है और दोनों लैगो–ट्रुवोलो चल दिये। वहाँ उतर कर वे शाही महल की तरफ चल दिये और जादूगर के पास पहुँच गये।

जब जादूगर को यह पता चला कि वे दोनों कौन थे तो उसने उनका वैसा ही स्वागत किया जैसा कि किसी राजा का किया जाता है और उनको चबूतरे के नीचे की तरफ बिठाया और बोला — "आप दोनों का हजार बार स्वागत है।"

यह सुन कर कि वे भी अपनी बदकिस्मती बताने आये हैं जादूगर ने उनसे पूछा कि उन लोगों के ऊपर ऐसी क्या मुसीबत आ पड़ी है जिसने उनके मुँह से लम्बी लम्बी साँसे निकलवा दी हैं।

पहले प्रेता–सीका के राजा ने उसे अपनी मुसीबत बतायी कि किस तरह से उसे अपनी बहिन से प्यार हो गया था। उसके लिये तो यह काम गलत था पर उसकी बहिन ने जो एक बहुत भली स्त्री थी इज़्ज़त वाला काम किया। उसके कुत्ते जैसे दिल ने उसे एक बक्से में बन्द कर के समुद्र में फिंकवा दिया था।

कहते कहते वह बहुत दुख से रो पड़ा जैसे उसकी आत्मा उसे इस काम के लिये कचोट रही हो। उसको अपनी बहिन के खो जाने का बहुत दुख था। एक तरफ से तो वह शर्म के मारे मरा जा रहा था और दूसरी तरफ उसको अपने बहिन के खो जाने का दुख था।

उसके दुख के सामने दूसरों का दुख तो लालटेन के सामने नरक की तुलना करना था। यह दुख उसके दिल को कचोटे जा रहा था।

अब इसके बाद टैरा–वरडे के राजा की बारी आयी तो वह बोला — "अफसोस तुम्हारा दुख तो मेरे दुख के सामने छोटे छोटे चीनी के केक के या मिठाई के टुकड़े हैं क्योंकि वह हाथकटी पैन्टा जिसके बारे में अभी तुमने कहा है और जिसको मैंने बक्से में बन्द पाया था वह मेरी पत्नी है।

उससे मेरा एक बहुत सुन्दर बेटा है पर एक जलन और द्वेष से भरी हुई चुड़ैल ने उन दोनों को मार दिया है। मैं अब दुनियाँ में कोई

शान्ति और सुख नहीं पा सकता। उन दोनों को मेरे राज्य से बाहर निकाल दिया गया है। मुझे अब कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती। और मुझे नहीं मालूम कि मेरी ज़िन्दगी का गधा इतना बड़ा बोझा कैसे ढोयेगा।"

जादूगर ने जब दोनों की कहानी सुन ली तो वह समझ गया कि उनमें से एक पैन्टा का भाई है और दूसरा उसका पति है। उसने बेटे नूफ्रीलो[54] को बुलाया और उससे कहा — "बेटा आओ अपने पिता और मालिक के पैर चूमो।"

बच्चे ने जादूगर का कहा माना। पिता ने उसको अच्छे कुल में पैदा हुआ जान कर उसकी सुन्दरता और शान देख कर अपने गले से एक सोने की जंजीर उतार कर उसके गले में पहना दी।

जादूगर ने बच्चे से फिर कहा — "बेटा यह तुम्हारे अंकल[55] हैं। इनके हाथ चूमो मेरे सुन्दर बच्चे।" बच्चे ने उसका वह कहा भी माना। मामा ने उसको देख कर उसको एक रत्न भेंट किया और जादूगर से पूछा कि क्या वह उसका बेटा था। जादूगर बोला कि यह बात तो उसे उसकी माँ से पूछनी चाहिये।"

पैन्टा जो परदे के पीछे से सब देख रही थी और सब सुन रही थी अब सामने आयी और एक छोटे कुत्ते की तरह जो खो गया हो

---

[54] Nufriello – name of Penta's son

[55] Although the translator hs used the word "Uncle" here which is used for many relationships. If we Indians had to describe him, we would have told him "Kiss your Mama's hands" but since the uncle word is used here which is not specifying any relationship of the child with the King, that is why he is unable to establish the relationship between the child and the other king, so he later asks the magician "Is he your son?"

और फिर कुछ दिनों बाद उसने अपने मालिक को देखा हो तो वह जैसे उसके ऊपर भौंकता है उसको हाथ चाटता है अपनी पूँछ हिलाता है अपने भाई से मिली फिर अपने पति से मिली।

वह एक के प्यार से बँधी थी और दूसरे से खून से। तीनों आपस में मिल कर बहुत खुश थे। कोई कुछ बोलना चाह रहा था तो कोई आहें भर रहा था। जब यह संगीत खत्म हुआ तब दोनों ने बच्चे को सहलाया चूमा और प्यार किया – पहले पिता ने फिर मामा ने।

इस सबके बाद जादूगर ने कहा — "भगवान ही जानता है कि आज दिल कितना खुश है। पैन्टा ने सबको तसल्ली दी जो अपने अच्छे कामों के लिये हाथों उठाये जाने के लायक थी। मैंने तो केवल इसके पति और भाई को साथ लाने की एक योजना बनायी थी। मैं तो आप दोनों का गुलाम हूँ।

आदमी जैसे अपने शब्दों से बँधा रहता है वैसे ही बैल अपने सींगों से बँधा रहता है। मैं अपना फैसला टैरा–वरडे के राजा के हक में देता हूँ सो न केवल मैं उनको ताज और राजदंड देता हूँ जैसा कि मैंने ढिंढोरा पिटवाया था बल्कि मैं उनको अपना राज्य भी देता हूँ।

और जैसे कि आप सबको मालूम है कि न मेरे कोई मुर्गी का बच्चा है न आदमी का तो मैं इस नौजवान जोड़े को अपना बेटा बनाता हूँ। तुम लोग मुझे मेरी आँखों के तारों की तरह प्यारे रहोगे।

अब पैन्टा की भी कोई इच्छा बाकी नहीं रहनी चाहिये सो वह अपने हाथ अपनी टाँगों के बीच में रख कर उन्हें वहाँ से निकाल ले तो उसके पहले से भी सुन्दर हाथ उग आयेंगे।”

जैसा जादूगर ने कहा था पैन्टा ने वैसा ही किया तो लो देखो उसको तो बहुत सुन्दर हाथ उग आये जो उसके पहले हाथों से भी ज़्यादा सुन्दर थे। इस सबसे वे सब बहुत खुश थे।

पति को अपना यह सौभाग्य बहुत बड़ा लगा यह तो जादूगर ने जो उसको राज्य दिया था उससे कहीं ज़्यादा था। कुछ दिनों तक वे सब वहीं रहे फिर वे अपने अपने राज्य चले गये। टैरा–वरडे के राजा ने अपना राज्य अपने छोटे भाई को दे दिया और वह खुद जादूगर के राज्य का राजा बन गया।

कोई चीज़ जब तक मीठी और प्यारी नहीं होती
जब तक कि उससे पहले कड़वे का स्वाद न लिया जाये

7 3–3 चेहरा[56]

रैंज़ा को उसका पिता एक मीनार में ऊपर बन्द कर देता है क्योंकि उसके लिये यह कहा गया है कि वह एक बड़ी हड्डी से मर जायेगी। वह एक राजकुमार से प्रेम करने लगती है। एक कुत्ता उसके लिये एक हड्डी ले कर आता है जिसकी सहायता से वह दीवार में एक छेद करती है और वहाँ से भाग जाती है। पर यह देख कर कि उसका प्रेमी जिसने किसी और से शादी कर ली है और उसे अपनी पत्नी की तरह चूम रहा है सदमे से मर जाती है। उधर राजकुमार भी इस बात को सहन नहीं कर पाता है और दुख से अपने आपको मार लेता है।

जबकि सीका[57] ने अपनी यह कहानी बड़ी मुश्किल से खत्म की कोई साफ साफ देख सकता था कि वहाँ बैठे लोगों के चेहरों पर मिला जुला भाव था – खुशी का भी और दुख का भी, आराम का भी और तकलीफ का भी, हॅसने का भी और रोने का भी।

वहाँ बैठे लोग पैन्टा के लिये रो रहे थे पर बाद में उसकी किस्मत पर हॅस रहे थे। जिन दुखों से हो कर वह गुजरी थी उनको सोच सोच कर ही वे सब बहुत दुखी थे पर जब उन्होंने सुना कि वह किस तरीके से सुखी हुई तो सब बहुत खुश हुए।

उसके साथ जो बुरा व्यवहार किया गया था उसको सोच कर वे सब दुखी थे पर बाद में उसका जिस तरह से बदला लिया गया उससे वे सब बहुत खुश थे।

---

[56] The Face. Tale No 7. (Day 3, Diversion 3) Told by Meneca

[57] Cecca – name of the storyteller of the last story “Penta the Handless”

इस बीच मैनैका अगली कहानी सुनाने के लिये तैयार हो गयी। वह बोली —

अक्सर ऐसा होता है कि जब कोई आदमी खुद पर यह विश्वास करता है कि वह किसी बुरे काम को नजरअन्दाज कर सकता है तो वह उसे अपने पूरे ज़ोर पर मिलता है। इसलिये एक अक्लमन्द आदमी को यह जानना चाहिये कि भगवान के ऐसे कामों से कैसे सिलटा जाये बजाय इसके कि वह अपने आपको किसी जादूगर के क्षेत्र में समझे या किसी ज्योतिषी के झूठ पर विश्वास करे।

क्योंकि अगर वह ऐसा करता है तो सारे खतरों से बचने के चक्कर में वह एक जानवर की तरह मारा जाता है। यही सच है जैसा कि आप लोग अभी देखेंगे।

एक बार की बात है कि फुओसो स्ट्रीटो[58] का एक राजा था जिसके एक बहुत सुन्दर बेटी थी। राजा की यह जानने की उच्छा हुई कि वह अपनी बेटी के भविष्य के बारे में कुछ जाने सो उसने बहुत सारे जादूगरों ज्योतिषियों और जिप्सियों को बुलाया।

उन्होंने उसके हाथ की लकीरों को पढ़ कर चेहरे की लाइनों की तरफ देख कर और उसकी चाल ढाल देख कर उसका भविष्य बताने के लिये वे सब शाही दरबार में आये और अपने अपने तरीके से अपनी अपनी बात कही।

[58] Fuosso-Stritto – name of a place

पर अधिकतर लोगों ने यही कहा कि इसे एक बड़ी हड्डी से खतरा है। यह सुन कर राजा ने उसके लिये एक बहुत ऊँची मीनार बनवायी और उसे उसमें **12** लड़कियों और एक नौकरानी जो घर के कामों में होशियार थी के साथ वहाँ रख दिया।

और उसकी मौत के डर से सबको यह हिदायत कर दी कि उसको सारा माँस बिना हड्डी के ही दिया जाये ताकि वह उस ग्रह के असर से बच सके।

रैंज़ा[59] पूनम के चाँद की तरह बढ़ने लगी। एक दिन वह अपनी जाली की खिड़की के पास खड़ी हुई थी कि विग्ना लार्गा की रानी का बेटा सीचो[60] वहाँ से गुजरा। राजकुमार ने वह सुन्दर चेहरा देखा तो एकदम से उसे उससे प्यार हो गया और उसने उसे एक मीठी मुस्कुराहट के साथ नमस्ते की।

उसने थोड़ी हिम्मत की और वह खिड़की के नीचे पहुँच गया और बोला — "विदा। ओ जिसे प्रकृति ने सब कुछ दे रखा है जिसे भगवान ने सब कुछ दे रखा है जिसके पास दुनियाँ की सारे सुन्दरता की पदवियाँ हैं।"

अपनी ऐसी बड़ाई सुन कर रैंज़ा शर्म से लाल हो गयी। इस शर्म की लाली ने उसे और सुन्दर बना दिया था जिसने सीचो के दिल

[59] Renza – name of the daughter of the King

[60] Cecio – name of the son of Queen of Vigna-larga

की आग और भड़का दी। रैंज़ा की सुन्दरता ने उस पर और गर्म पानी फेंका।

वह राजकुमार से पीछे नहीं रहने वाली थी। वह बोली — "तुम कभी भी आ सकते हो ओ अपनी शान बिखेरने वाले। ओ गुणों की खान। ओ प्यार करने वाले।"

इस पर चीचो बोला — "ऐसा कैसे हुआ कि कामदेव की ताकत इस ऊँची मीनार में बन्द है। ऐसा कैसे हुआ कि दूसरों के दिलों को गुलाम बनाने वाली खुद इस मीनार में कैद है। ऐसा कैसे हुआ कि यह सुनहरा सेब इन लोहे की दीवारों में बन्द है।"

तब रैंज़ा ने उसे सब बताया कि यह सब कैसे हुआ। चीचो बोला — "हालाँकि मैं एक रानी का बेटा हूँ पर मैं तुम्हारी सुन्दरता का गुलाम हूँ।" और अगर वह वहाँ से बच कर भागना चाहे और उसके साथ उसके राज्य जाना चाहे तो वह उसके सिर पर ताज रख देगा।

रैंज़ा को लगा जैसे उसे इस चहारदीवारी में से फंगस की बू आ रही हो और वह बाहर की आजादी की खुशबूदार हवा सूँघना चाहती हो सो उसने चीचो का यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। उसने उससे कहा कि वह अगले दिन सुबह आये ताकि सुबह उसके बुरे काम की गवाह रहे और फिर वे वहाँ से भाग चलेंगे।

उसने फूलों का एक गुलदान खिड़की पर रख दिया और वहाँ से चली गयी और राजकुमार अपने घर लौट गया।

इस बीच रैंज़ा इस बात पर विचार करती रही कि घर में रह रही लड़कियों को किस तरह से चकमा दिया जाये कि तभी एक कुत्ता जिसे राजा ने मीनार के दरवाजे पर पहरेदार की तरह से रखा हुआ था एक बड़ी सी हड्डी लिये हुए उसके कमरे में आ गया और उसके पलंग के नीचे लेट गया और छिप गया।

रैंज़ा ने नीचे झुक कर देखा तो वह तो हड्डी की दावत खा रहा था। उसे देख कर उसे ऐसा लगा, जैसा कि किस्मत में लिखा होता है, कि उसे उसकी जरूरत पूरी करने के लिये भेजा गया है।

उसने कुत्ते को तो बाहर निकाल दिया और उसकी हड्डी उठा ली। उसने अपनी दासियों से कहा कि उसके सिर में बहुत तेज़ दर्द हो रहा था इसलिये वह अकेले में कुछ देर आराम करना चाहती थी। कह कर उसने अपना दरवाजा अन्दर से बन्द कर लिया।

अब उसने इस हड्डी से अपना काम करना शुरू किया। उसने दीवार में उसे मार मार कर एक पत्थर गिरा लिया। वह लगी रही लगी रही और उसने दीवार में एक इतना बड़ छेद बना लिया जिसमें से वह आसानी से बाहर निकल कर जा सकती थी।

उसने एक दो चादरें फाड़ कर उनकी रस्सी बट ली। सुबह जब ॲधेरा छॅटा तो उसे चीचो की सीटी की आवाज सुनायी दी तो उसने चादर से बनी रस्सी को एक लट्ठे से बॉधा और उसके सहारे चीचो की बॉहों में पहुॅच गयी।

चीचो ने उसे एक गधे पर बिठाया जिसकी जीन पर एक कालीन पड़ा हुआ था और वे विग्ना–लार्गा चल दिये। शाम तक वे एक और जगह वीसो[61] एक बड़े से महल के पास पहुँचे। चीचो वहीं अपने सामान की देखभाल के लिये रुक गया।

पर यह तो सब किस्मत की चाल थी जिसे चीज़ों को नष्ट करना था खेल बिगाड़ना था प्रेमियों के मीठे सपनों में अपनी नाक अड़ानी थी कि एक दूत चीचो की माँ की एक चिट्ठी ले कर आया जिसमें लिखा था कि "अगर तुम वापस आ कर उससे शादी नहीं करोगे तो तुम मुझे ज़िन्दा नहीं पाओगे।"

रैंज़ा बहुत खुश थी क्योंकि उसको लग रहा था कि अब वह अपनी ज़िन्दगी के आखिरी पड़ाव पर आ गयी थी।

चीचो ने जब यह बुरी खबर पढ़ी तो वह रैंज़ा से बोला — "मुझे एक जरूरी काम से जाना पड़ेगा। मैं बहुत जल्दी ही आने की कोशिश करूँगा। तब तक तुम पाँच छह दिन यहीं रहो। फिर मैं लौट कर आता हूँ और तुम्हें ले जाता हूँ।"

यह सुन कर रैंज़ा तो ज़ोर ज़ोर से रो पड़ी — "ओ मेरे दुर्भाग्य। कितनी जल्दी मेरी खुशियाँ खत्म हो गयीं। कितनी जल्दी मैं अपने खुशियों के बर्तन की तली में पहुँच गयी। किस तरह से मेरे दिल में यह कील चुभ गयी।

---

[61] Visso – name of a place

मेरी सारी आशाऐं तो कुँए में गयीं। मैंने जो कुछ सोचा था वह तो सब बिगड़ गया। मेरी खुशी तो धुँए में उड़ गयी। अभी तो मैं शाही चटनी को अपने होठों पर रखा ही था कि इसने तो मेरा गला ही घोंट दिया।

मैंने अभी इस फव्वारे का मीठा पानी पिया भी नहीं था कि इसने मेरे मुँह का स्वाद कड़वा कर दिया। अभी तो मैंने सूरज उगता हुआ ही देखा था कि मुझे "गुड नाइट" कहना पड़ गया।"

ऐसे ऐसे शब्द प्यार की देवी के मुँह से निकल निकल कर चीचो के दिल में कॉटों वाले तीर की तरह लग रहे थे। वह बोला —
"चुप हो जाओ ओ मेरी ज़िन्दगी को सहारा देने वाली। ओ मेरी ऑखों की रोशनी। ओ मेरे दिल के चैन। मैं जल्दी ही वापस लौटूँगा।

मीलों की दूरी तुम्हें मुझसे एक फुट भी दूर नहीं कर पायेगी। समय की कोई ताकत तुम्हारी यादों को मेरे दिमाग से नहीं मिटा पायेगी। शान्त हो जाओ। अपने दिमाग को आराम दो। अपने ऑसू पोंछ लो और मुझे अपने दिल में रखो।"

ऐसा कह कर वह अपने घोड़े पर चढ़ा और अपने राज्य की तरफ चला गया। रैंज़ा कुछ देर तक तो खीरे की तरह से जमीन से चिपकी खड़ी रही पर फिर चीचो के पीछे पीछे भागी। पास में ही उसको घास के मैदान में एक घोड़ा चरता हुआ मिल गया तो वह उस पर चढ़ गयी और चीचो के पीछे भागी।

रास्ते में उसको एक मजदूर मिल गया तो उसने उससे अपनी पोशाक बदल ली। उसने अपने सोने से कढ़े हुए कपड़े उसको दे दिये और उसके मोटे ऊनी कपड़े खुद पहन लिये। कमर में रस्सी बाँध ली और फिर अपने रास्ते चल दी।

कुछ देर में ही वह चीचो के पास आ गयी और बोली — “अच्छा है हम मिल गये ओ भले आदमी।”

चीचो बोला — “आओ बाबा। तुम कहाँ से आ रहे हो और कहाँ जा रहे हो।”

रैंज़ा बोली —

मैं एक ऐसी जगह से आ रहा हूँ जहाँ हमेशा रोना है
वहाँ एक स्त्री रहती है जो कहती है “ओ मेरे सुन्दर चेहरे
ऐसा कौन है जिसकी वजह से तुम मुझे छोड़ कर चले गये”

यह सुन कर चीचो बोला, उसने उसको अभी तक एक लड़का ही समझा हुआ था, “ओ सुन्दर नौजवान। तुम्हारा साथ मुझे अच्छा लग रहा है इसलिये मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम मुझे छोड़ना नहीं। कभी कभी मेरी यह बात दोहरा देना क्योंकि तुम्हारी बातें मेरा दिल छू लेती हैं।”

इस तरह बातें करते करते वे विग्ना–लार्गा[62] पहुँच गये। वहाँ पहुँच कर उन्हें पता चला कि रानी ने चीचो की शादी एक किसी

[62] Vigna-Larga – name of a place

ऊँचे घराने की लड़की से पक्की कर दी है। और वह चिट्ठी तो उसको जल्दी बुलाने का केवल एक बहाना था।

दुलहिन तो बस उसके आने के इन्तजार में खड़ी थी। जैसे ही चीचो घर आया तो उसने अपनी माँ से उस नौजवान के लिये रहने की जगह का इन्तजाम करने के लिये कहा जो उसके साथ रास्ते भर साथ देता चल कर आया था।

साथ में उसने यह भी कहा कि वह उसको उसके भाई की तरह रखे। रानी यह सुन कर बहुत खुश हुई। उसने राजकुमार को इसकी इजाज़त दे दी और उसे राजकुमार और उसकी दुलहिन के पास ही बिठा दिया।

अब तुम सोच सकते हो कि रैंज़ा को कैसा लग रहा होगा वह कुछ खा भी पा रही होगी या नहीं। पर वह अब तक वे लाइनें दोहराती रही जो चीचो को बहुत पसन्द थीं।

खाने के बाद मेजें साफ कर दी गयीं और दुलहा और दुलहिन एक जगह बात करने के लिये गये। रैंज़ा अब वहाँ अकेली रह गयी तो उसे कुछ मौका मिल गया जिसमें वह अपना गुस्सा ठंडा कर सके।

फिर वह एक और बागीचे में चली गयी जो इस बागीचे के बाद ही था और उस कमरे के पास भी था जहाँ यह सब धूमधाम हो रही थी। वहाँ जा कर वह एक आलूबुखारे के पेड़ के नीचे बैठ गयी और रोने लगी —

"ओ निर्दयी चीचो। क्या मेरे प्यार का यही बदला तुम मुझको दे रहे हो। क्या यही मेरे प्यार का धन्यवाद है। क्या मेरे इस अथाह प्यार के बदले में यही मिठास तुम मुझे दे रहे हो।

मैंने अपने पिता को छोड़ा अपना घर छोड़ा अपनी इज़्ज़त पर धब्बा लगाया अपने आपको एक बिना दिल वाले कुत्ते को सौंपा जो मेरा रास्ता काट कर निकल गया और मेरा दरवाजा बन्द कर गया जब मुझे ऐसा लग रहा था कि बस अब मुझे एक बहुत बढ़िया किला मिलने ही वाला है।

अफसोस मुझे तो तुम्हारी काली किताब में अपना नाम देखना चाहिये था जबकि मैं यह सोचती रही कि मैं तुम्हारी ज़िन्दगी में शान के साथ जियूँगी।

मुझे तो अपने आपको एक उस बच्चे की तरह देखना चाहिये था जो मास्टर क्लैमैन्ट का "बैन एन्ड कमान्डमैन्ट" खेल[63] खेल रहा हो जबकि मैं तो सोच रही थी कि मैं तुम्हारे साथ "निकोलस" का खेल खेल रही हूँ।"

क्या मैंने चीज़ इकट्ठा करने की आशा की थी। क्या मैं इच्छाओं के जाल बुन रही थी जिनमें मैंने कृतघ्नता का रेत भर लिया। क्या मैं हवाई किला बना रही थी जो एकदम से सारा का सारा टूट कर नीचे गिर गया।

---

[63] "Ban and Commandment" game of Master Clement

क्या यही बदलाव मेरी ज़िन्दगी में आना था क्या मुझे यही बदला मिलना था। मैंने अपनी इच्छाओं की बालटी कुँए में डाल दी है उसका हैन्डिल अभी मेरे पास है। मैंने अपने धुले हुए कपड़े धूप में सूखने के लिये डाल दिये हैं और बारिश शुरू हो गयी है।

मैंने अपनी इच्छाओं का बर्तन आग पर रख दिया है जिसमें मेरे सारे विचार रखे हुए हैं। अपनी बदकिस्मती का जाला पकाते पकाते मैं खुद उसमें गिर पड़ी हूँ।

पर ओ रंग बदलने वाले इस बात का विश्वास कौन करेगा कि तुम्हारे ऊपर विश्वास करना भी तुम्हारी प्रसिद्धि जैसा ही है। कि तुम्हारे वायदों का बर्तन बिल्कुल ही बेकार होगा। कि तुम्हारी कमाई की रोटी गदली होगी।

एक योग्य आदमी के अच्छे काम, आदरणीय लोगों के बढ़िया सबूत, राजा के बेटे का अच्छा अन्त, मेरे ऊपर हँसना, मुझसे चाल खेलना, मुझे धोखा देना, मुझे लम्बा कोट पहनाना ताकि मेरा स्कर्ट छोटा लगे।

खुशियों का समुद्र दिखाना आनन्द की दुनियाँ दिखाना और फिर मुझे अँधेरी कब्र में छोड़ देना। मेरा चेहरा धोना ताकि मुझे अपना दिल काला लगे।

ओ हवा में फेंके हुए वायदों, ओ बेकार के शब्द, ओ तली हुई तिल्ली की प्रतिज्ञाऐं। मैं यहाँ हूँ सौ मील दूर जबकि मैं सोच रही थी

कि मैं तो बैरन[64] के घर आ गयी हूँ। यह बिल्कुल सच है कि शाम को कही गयी बातें हवा अपने साथ ले जाती है।

अफसोस मैं सोचती थी कि मैं उस बेदर्द आदमी के साथ एक जान हो कर रहूँगी, पर मैं तो यहाँ कुत्ते और बिल्ली की तरह रहूँगी। जबकि मैं सोच रही थी कि मैं इस कृतघ्न कुत्ते के साथ उसकी चम्मच से खाऊँगी पर मैं तो उसके साथ साँप और मेंढक की तरह रहूँगी।

मैं यह नहीं सह सकती कि कोई दूसरा ज़्यादा अच्छी किस्मत वाला मेरे हाथों से उसे मुझसे छीन ले जो मेरी आशाओं की लाइन की पहली आशा है। मैं कभी अपनी हार नहीं मान सकती।

ओ गलत रास्ते पर जाने वाली रैन्ज़ा। अपने आप पर भरोसा रख। अपने आपको गैरकानूनी और बेवफा लोगों की बातों में मत ला। वह हमेशा नाखुश रहेगी जो उन पर भरोसा करेगी। वह हमेशा दुखी रहेगी जो उन्हें प्यार करेगी। अभागी रहेगी जो उनके बनाये बड़े बड़े बिस्तरों में लेटेगी।

पर तू ऐसा कुछ नहीं करना क्योंकि तू जानती है कि जो बच्चों के साथ चाल खेलता है वह मकड़ी की मौत मरता है। तुझे मालूम है कि स्वर्ग में ऐसी चाल खेलने वाले लोग हैं जो गाड़ियों को पलट देते हैं और जब तू किसी बात की सबसे कम आशा कर रही होती है तो

[64] Baron – a respectable title in Imperial kingdoms

वह उस दिन तेरे सामने आ खड़ी होती है। तेरे साथ इस तरह का खेल खेलने के बाद वह अपने आपको तुझे दे देती है।

पर क्या मैं यह नहीं देख रही कि यह सब तो मैं केवल हवा से ही कह रही हूँ। कि मैं केवल अपने आप ही रो रही हूँ और दुखी हो रही हूँ मेरी आहें और सुबकियाँ कोई सुन ही नहीं रहा।

इस रात वह दुलहिन से अपना नाता जोड़ लेगा और सारे माप दंड तोड़ देगा और इस रात मैं अपना नाता मौत से जोड़ लूँगी और प्रकृति का कर्ज चुका दूँगी। वह खुशबूदार सफेद चादर के बिस्तर पर लेटा होगा और मैं अँधेरी बदबूदार अर्थी पर लेटी होऊँगी।

वह अपनी दुलहिन के साथ "बोतल खाली कर दो" का खेल खेल रहा होगा और मैं "ओ मेरे साथी मैं घायल हूँ" गा रही होऊँगी। मैं अपनी पसलियों में तेज़ चाकू मार लूँगी और इस तरह अपनी अभागी ज़िन्दगी का अन्त कर लूँगी।"

जब वह गुस्से और दुख में भर कर ये और कुछ और शब्द कह चुकी तब तक खाने का समय हो गया था सो उसे खाने के लिये बुलाया गया। खाने में सब बहुत सुन्दर और स्वादिष्ट सामान था पर उसको तो वह सभी कुछ कड़वा और जहर लग रहा था।

उसको खाने की बिल्कुल इच्छा नहीं थी उसको कोई भूख भी नहीं थी। चीचो ने उसके दुखी चेहरे को देख कर सहानुभूति से पूछा — "इसका क्या मतलब है? और तुम इन पेय पदार्थों को क्यों नहीं

ले रहे हो? कुछ पियो न। यह तुम्हें क्या हो गया है? तुम किसके बारे में सोच रहे हो? तुम्हें कैसा लग रहा है?"

रैन्ज़ा बोली — "मुझे कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। मुझे यह भी नहीं मालूम कि यह मुझे चक्कर आ रहे हैं या फिर मेरा पेट खराब है।"

चीचो बोला — "एक समय खाना न खाने में कोई हर्जा नहीं है। एक समय का खाना छोड़ देने से आदमी का पाचन ठीक रहता है और यह बहुत सारी बीमारियों का इलाज भी है पर अगर तुम्हें किसी डाक्टर की सलाह लेने की इच्छा हो तो हम एक पानी वाले डाक्टर को बुलवा लेंगे।

वह डाक्टर केवल तुम्हारा चेहरा देखेगा और बिना नाड़ी पकड़े ही तुम्हारे बारे में सब कुछ बता देगा।"

रैन्ज़ा बोली — "नहीं नहीं मैं बीमार नहीं हूॅ जिसे डाक्टर के नुस्खे की जरूरत हो। क्योंकि बर्तन कितना खाली है यह कोई नहीं जानता सिवाय उस चमचे के जो उसमें से निकालता है।"

चीचो बोला — "तो फिर ऐसा करो कि थोड़ी देर बाहर घूम कर ताजा हवा ले आओ।"

रैन्ज़ा बोली — "जितना ज़्यादा मैं देखती हूॅ मेरा दिल उतना ज़्यादा ही टूटता है।"

इस बीच खाना खत्म हो गया और अब आराम करने जाने का समय आ गया। चीचो ने जिसको अभी भी रैन्ज़ा की कविताऐं

सुननी थीं रैन्ज़ा को उसी कमरे में एक काउच पर सोने के लिये कहा जिस कमरे में वह और उसकी दुलहिन सोने वाले थे।

जब तब वह उससे उसकी कविताऐं सुनाने के लिये कहता रहा जो अक्सर रैन्ज़ा के दिल को भेदने के बारे में होतीं। वे ही दुलहिन को नाराज करने वाली भी होतीं।

एक बार वह उनको सुन कर इतनी नाराज हुई कि भभक पड़ी — "तुमने तो उस सफेद चेहरे को ला कर मुझे बहुत ही परेशान कर दिया है। यह कौन सा संगीत है। यह क्या किसी का पेट खराब हो गया है जो इतनी देर तक चल रहा है। थोड़ा बहुत तो ठीक है पर बार बार उसी को सुनने का तुम्हारा क्या मतलब है।

मुझे तो लग रहा था कि मैं तुम्हारे साथ संगीत वाद्यों का संगीत सुनने के लिये लेटी हुई हूँ न कि रोती हुई आवाजें। और तुमने भी उसी चीज़ को दोहराने का यह अच्छा बहाना अपनाया है। अब इसे बन्द करो नहीं तो तुम अपनी लहसुन खाने की इच्छा को भी रोक लोगे। अब हमको कुछ देर आराम करने दो।"

चीचो बोला — "शान्त हो जाओ। ठीक है हम अभी अपनी बात यहीं रोकते हैं।" कह कर उसने उसको एक ज़ोर की आवाज वाला चुम्बन दिया जिसे एक मील दूर से सुना जा सकता था। पर उनके होठों की आवाज रैंज़ा के दिल पर बिजली गिरा गयी।

इससे उसको इतना दुख पहुँचा कि उसके शरीर की सारी ताकतें उसको आराम देने के लिये आ पहुँचीं। और फिर जैसा कि होता है

कि अगर बर्तन में जरूरत से ज़्यादा भर दो तो वह बर्तन और उसका ढक्कन दोनों टूट जाते हैं इसी तरह से उसके शरीर का सारा खून उसको दिल को तसल्ली देने के लिये दौड़ा और वह इतना ज़्यादा था कि वह उससे मर गयी।

कुछ देर अपनी पत्नी से और बात करने के बाद चीचो ने फुसफुसा कर रैंज़ा को पुकारा और उससे वह कविता फिर से सुनाने के लिये कहा जो उसे बहुत अच्छी लगती थी।

पर उसको कोई जवाब ही नहीं मिला। इस पर उसने उससे फिर से विनती की कि वह कविता उसे वह फिर से सुनाये। उसे इसका भी कोई जवाब नहीं मिला तो वह उठा और धीरे से उसका हाथ हिलाया पर फिर भी उसे कोई जवाब नहीं मिला।

इस पर तो वह चौंक गया। उसने अपना हाथ उसके चेहरे पर रखा तो देखा कि उसकी नाक तो ठंडी पड़ी थी। वह समझ गया कि उसकी ज़िन्दगी का दिया तो हमेशा के लिये बुझ चुका है।

वह तो भौंचक्का सा खड़ा रह गया। उसने मोमबत्तियाँ जलायीं और रैंज़ा को उघाड़ा तो उसने उसे उसकी छाती पर बने एक निशान से पहचाना।

देखते ही वह बहुत ज़ोर से रो पड़ा और चिल्ला कर बोला — “ओ चीचो यह तू क्या देख रहा है? यह तुझे क्या हो गया है? यह तू अपनी आँखों से क्या देख रहा है? यह तेरे सिर पर क्या सवार

हो गया था? ओ मेरे प्रिय फूल तुझे कौन तोड़ कर ले गया? ओ मेरी रोशनी तुझे कौन बुझा गया?

ओ मेरी प्रेम भरी इच्छाओं के बर्तन तुझमें से यह सब बाहर कैसे निकल गया? ओ मेरी खुशियों के घर तुझे कौन तोड़ गया। ओ मेरी खुशियों के कागज तुझे कौन फाड़ गया। प्रिये कब तुमने मुझसे ऑखें मोड़ लीं।

तुम्हारी सुन्दर आत्मा के चले जाने के बाद तो सारी सुन्दरता ही चली गयी। तुम्हारा सुन्दर ढॉचा ही टूट गया। अब प्यार की मिठास भी कहीं नहीं मिलती।

ओ मेरी मॉ जाओ और तुम भी मर जाओ। तुमने मुझे नष्ट करने के लिये यह बहुत ही बढ़िया काम किया है। तुमने मेरा खजाना लूट लिया है। इन खुशियों के बिना मेरा क्या होगा? बिना धीरज के, बिना सन्तुष्टि के, बिना किसी स्वाद के।

तुम मेरा विश्वास करो न करो पर अब मैं इस दुनियॉ में नहीं रह पाऊॅगा। मैं बहुत जल्दी ही तुम्हारे पीछे पीछे आऊॅगा। जहॉ भी तुम जाओगी मैं तुम्हें मौत के जबड़ों में से जबरदस्ती निकाल लूॅगा। हम फिर एक हो जायेंगे।

और अगर मैंने तुम्हें अपने बिस्तर का साथी नहीं बना लिया तो मैं तुम्हारी कब्र का साथी बन जाऊॅगा। उस कब्र पर लगा पत्थर हम दोनों की दुखी ज़िन्दगी की कहानी एक साथ कहेगा।”

जैसे ही उसने अपना बोलना खत्म किया कि उसने एक कील ले ली और उसको अपनी छाती के बॉयी तरफ घुसा लिया और इस तरह उसने अपनी ज़िन्दगी भी खत्म कर ली। उसकी पत्नी डर से जमी बैठी रह गयी।

जैसे ही वह कुछ बोलने लायक हुई तो उसने रानी को बुलाया तो रानी भी अपनी सारी दासियों के साथ वहाँ भागी भागी आयी। जब उसने रैंज़ा और अपने बेटे के साथ हुई यह बुरी घटना देखी तो वह तो अपने बाल नोचने लगी अपनी छाती पीटने लगी। पानी में से निकाली हुई मछली तरह से अपना सिर इधर उधर पटकने लगी।

उसने सारे सितारों को कोसना शुरू कर दिया कि वे सब कितने बेरहम थे जिन्होंने उसके घर पर मुसीबतों का इतना बड़ा पहाड़ तोड़ डाला। उसने अपनी किस्मत को भी कोसा जिसने उसे इस ढलती उम्र में इतना बड़ा दुख दिखाया था।

बहुत रोने और चिल्लाने के बाद उसने हुक्म दिया कि उन दोनों को एक ही कब्र में दफ़ना दिया जाये। उनकी कहानी लिखी गयी और लाइब्रेरी में रख दी गयी।

इस बीच रैंज़ा का पिता राजा भी वहीं आ गया जो सारी दुनियाँ में अपनी भागी हुई बेटी को ढूँढने के लिये निकल हुआ था। रास्ते में उसे एक साधु मिला जो उसके कपड़े बेच रहा था। राजा वे कपड़े पहचान गया वे उसकी बेटी के थे।

तब साधु ने उसको अपनी कहानी सुनायी और राजा वहाँ ठीक उसी समय आया जब कब्र में गेहूँ इकट्ठा किये जा रहे थे और गेहूँ की नयी बालियाँ रखी जाने वाली थीं।

उसको देख कर पहचान कर राजा ने एक उसाँस भरी और उस हड्डी को कोसा जिसने इस गुलाब के सूप को खराब किया था। यह हड्डी उसकी बेटी के कमरे में पायी गयी थी। उसने पहचान लिया कि यही वह चीज़ थी जिसने उसको यह ज़ोर की मार मारी थी।

पर यह घटना तो प्रेम की घटना थी न कि हड्डी की जैसा कि उन जादूगरों ने कहा था। इसलिये इसमें यह साफ देखा जा सकता है कि —

जब किसी बुरी चीज़ को आना होता है तो वह चाभी के छेद में से भी घुस आती है।

8 3–4 भूखी सैपिया[65]

सैपिया ने अपनी योग्यता से जब उनके पिता घर में नहीं थे तो अपनी खराब बहिनों के मुकाबले में अपनी इज़्ज़त बना कर रखी हुई थी। वह अपने प्रेमी पर हँसती है और किसी खतरे का अन्दाज लगा कर वह उसे जीत भी लेती है। अन्त में राजा का बेटा उससे शादी कर लेता है।

दूसरी कहानियों के सुनने की खुशी इन दो प्रेमियों की प्रेम कहानी की इस कहानी के दुखी अन्त में डूब गयी। कुछ देर के लिये सब लोग ऐसे चुप बैठे रह गये जैसे बेटी पैदा हो गयी हो।

इस पर राजा ने टौला[66] से कहा कि अब वह कोई खुश खुश कहानी सुनाये ताकि रैंज़ा और उसके प्रेमी चीचो की मौत का दुख कुछ कम हो सके। और तब उसने यह नीचे लिखी कहानी सुनायी —

आदमी की अच्छी किस्मत एक लालटेन की तरह होती है जो दुनियाँ की दुखी रातों में रोशनी करती रहती है। उसकी रोशनी में बड़ी बड़ी खाइयाँ भी बिना किसी खतरे के पार कर ली जातीं हैं और अँधेरे बिना डर के निकल जाते हैं।

इसलिये यह ज़्यादा अच्छा है कि बजाय पैसे के अच्छी बुद्धि अपने पास हो क्योंकि पैसा तो आनी जानी चीज़ है जबकि बुद्धि जब भी जरूरत पड़ती है हमेशा अपने पास तैयार रहती है।

---

[65] Sepia the Glutton. Tale No 8. (Day 3, Diversion 4) Told by Tolla

[66] Tolla – the name of the storyteller

इस बात को आप सब अब सैपिया की कहानी में देखेंगे कि उसकी बुद्धि उत्तरी हवा की तरह से आयी और उसने उसको सुरक्षित रूप से बन्दरगाह पर पहुँचा दिया।

बहुत समय पहले की बात है एक बहुत ही अमीर सौदागर रहता था। उसके तीन सुन्दर बेटियाँ थीं – बैला, कैनज़ोला और सैपिया। एक दिन उसको अपने व्यापार के सिलसिले में बाहर जाना पड़ा।

उसने देखा कि उसकी सबसे बड़ी बेटी थोड़ी इधर उधर ताक झाँक करने वाली है सो उसने उसके कमरे की खिड़कियों को कीलों से जड़ दिया। फिर उसने अपनी तीनों बेटियों को एक एक रत्न जड़ी अँगूठी दी।

इनके ये रत्न ऐसे थे कि अगर वे कुछ ऐसा करतीं जो उन्हें नहीं करना चाहिये तो वह रत्न अपना रंग बदल लेता था और थेगली जैसा हो जाता।

जैसे ही पिता ने विला–ऐपर्ता[67] छोड़ा तो सबने अपनी अपनी खिड़की खोलनी शुरू कर दीं और जाली के बाहर झाँकना शुरू कर दिया। हालाँकि खाऊ सैपिया ने उन दोनों को ऐसा करने से बहुत मना किया कि उनका घर ऐसी चाल खेलने के लिये न तो कोई बुरी स्त्रियों का घर था न कोई सन्तरे रखने का भंडार था न ही वह कोई पौटी थी और न ही पड़ोसियों के साथ मसखरी करने की जगह थी।

[67] Villa-Aperta – their residence

उनके सामने ही राजा का महल था। उस राजा के भी तीन बेटे थे – सिसैरीलो, ग्रैज़ूलो और टोरे।[68] जब उन्होंने इन तीन लड़कियों को देखा तो उन्होंने उनको ऑखों ही ऑखों में इशारे करने शुरू कर दिये।

इशारों के बाद वे हाथ चूमने तक आ पहुॅचे। हाथ चूमने से शब्दों तक, शब्दों से वायदों तक और फिर वायदों से असली प्रेम तक आ गये।

सो एक दिन शाम के समय जब सूरज रात से बिना झगड़ा किये हुए आराम करने चला गया राजा के तीनों लड़कों ने दीवार फॉदी और सौदागर के घर के अन्दर चले गये जहॉ वे तीनों लड़कियॉ रहती थी।

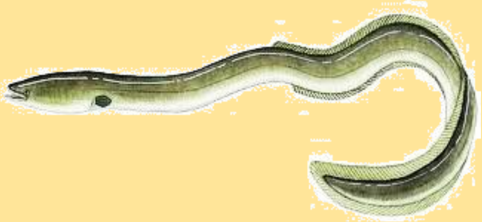

दोनों बड़े भाई तो दोनों बड़ी बहिनों के पास चले गये टोरे ने भूखी सैपिया को पकड़ लिया पर वह उसके हाथ से ईल मछली की तरह फिसल गयी और भाग कर एक कमरे में बन्द हो गयी। उसने अपने दरवाजे की चिटकनी कुछ ऐसे लगा ली कि उसको किसी के लिये खोलना असम्भव था। वह दुखी लड़का बस अपने भाइयों की अच्छी किस्मत देखता रहा।

पर जब सुबह हुई और सुबह होने का डंका पीटने वाली चिड़ियों ने बोलना शुरू कर दिया और दिन के घंटे पर घंटे चढ़ते

[68] Ceccariello, Grazullo and Torre

गये दोनों बड़े भाई बहुत खुश खुश वहाँ से चले पर सबसे छोटा भाई अपनी सारी रात इस तरह बर्बाद होने के दुख में डूबा हुआ था।

अब क्या हुआ कि दोनों बड़ी बहिनों को बच्चे की आशा हो गयी सो उनका खराब समय आ गया। वे रोज ब रोज गोल गोल होती जा रही थी। भूखी सैपिया ने उन्हें बहुत डाँटा। वह हर समय ही उन्हें कुछ न कुछ कहती रहती।

वह उनके ढोल जैसे पेट को देख कर कहती कि वह उनके लिये शर्म की वजह बनेगा और बर्बादी और लड़ाई ले कर आयेगा। जब उनके पिता आयेंगे तब देखना कि क्या भेड़ नाच होगा।

इस बीच टौरे की लालसा बढ़ती गयी। कुछ तो सैपिया की सुन्दरता की वजह से और कुछ शर्म की वजह से सो उसने इस बारे में उसकी बड़ी बहिनों से सलाह ली। वे इस बात पर तैयार हो गयीं कि वह ऐसा कोई रास्ता निकालेंगी जिससे वह उसके जाल में फँस जाये जबकि वह उसकी बिल्कुल आशा नहीं कर रही होगी। वे उसको राजकुमार के अपने घर में उसे ढूँढती हुई ले कर आयेंगी।

सो एक दिन उन्होंने सैपिया को बुलाया और उससे कहा — "देखो जो कुछ हो गया उसको तो अब वापस नहीं लाया जा सकता। और अगर सलाहों की कीमत चुकायी जाती तो वे बहुत मँहगी भी होतीं और उनको अच्छा भी समझा जाता।

अगर हमने तुम्हारी बातों को ध्यान से सुना होता तो हमने अपने परिवार की इज़्ज़त को न तो इस तरह बर्बाद किया होता और न अपना पेट भरा होता जैसा कि तुम देख रही हो। पर जो हो चुका उसका कोई इलाज तो है नहीं। चाकू उसके दस्ते तक अन्दर जा चुका है। बात बहुत आगे बढ़ गयी है। बतख की तो अब चोंच भी बन गयी है।

पर हम इतना जानते हैं कि तुम हमसे इतनी नाराज नहीं हो सकती कि हमें दुनियाँ से ही बाहर निकाल कर फेंक दो। और अगर हमारी वजह से नहीं तो कम से कम इन बिन पैदा हुए बच्चों के लिये तुम हमारी इस बुरी हालत पर दया करोगी।"

भूखी सैपिया बोली — "भगवान जानता है कि तुम लोगों ने जो यह गलती की है उसके लिये मेरा दिल कितना रोता है। जब पिता जी वापस आयेंगे और इस सबके बारे में जानेंगे तो इस समय की शर्म और परेशानी के लिये जो तुम लोगों को भोगनी है उसके लिये मैं अपने हाथ की एक उँगली दूँगी कि ऐसी कोई चीज़ नहीं होनी चाहिये थी।

पर शैतान ने क्योंकि तुम लोगों को अन्धा कर दिया था मैं वह सब करने की कोशिश करूँगी जो मैं कर सकती हूँ। यह काफी है कि मेरी अपनी इज़्ज़त सुरक्षित है। जैसे खून को दूध या पानी में नहीं बदला जा सकता आखिर तुम लोग मेरा अपना खून और माँस

हो तो वह मुझे तुम पर दया करने की तरफ खींचता है। मैं तुम्हारे इस काम के लिये अपनी जान तक देने को तैयार हूँ।"

जब सैपिया बोल चुकी तो उसकी बहिनें बोलीं — "हमें तुमसे सिवाय प्यार के और कुछ नहीं चाहिये। अभी तो हम बस यही चाहते हैं कि तुम हमें राजा के घर से जो रोटी वह खाते हैं वह तुम हमें भी ला कर दे दो क्योंकि हमें वह खाने की बहुत इच्छा हो रही है और इतनी ज़्यादा इच्छा हो रही है कि अगर हमने वह रोटी नहीं खायी तो हमें डर है कि जब हमारे बच्चे पैदा होंगे तो वह उनकी नाक पर रखी होगी।

इसलिये अगर तुम सच्ची ईसाई हो तो कल सुबह जब तक थोड़ा अँधेरा ही होगा तब तक हम तुम्हें महल की दीवार के उस पार लटका देंगे। फिर जब राजा के बेटे आयेंगे तो हम तुम्हें एक भिखारी के रूप में तैयार कर देंगे। इस तरह से तुम फिर पहचानी नहीं जाओगी और हमारे लिये शाही रसोई की रोटी ला सकोगी।"

भूखी सैपिया ने बच्चों की तरफ दया दिखाते हुए एक फटा हुआ कपड़ा निकाल कर पहना। कपड़े का एक थैला अपनी छाती पर लटका लिया। अपने बालों में पीछे कंघा लगा लिया।

जब सूरज अँधेरे पर अपनी रोशनी की जीत की ट्रौफी ले कर चला गया तब उसकी बहिनों ने उसे खिड़की से नीचे उतार दिया।

वह महल के आगे भीख माँगने चली गयी और जब भीख में उसे रोटी मिल गयी तो वहाँ से वापस आने के लिये तैयार हुई कि

टौरे ने जो कहीं छिपा हुआ यह सब देख रहा था उसके सामने आ कर उसे पकड़ लेना चाहा पर सैपिया अपन हाथ छुड़ा कर वापस घूमी तो टौरे का हाथ उसके सिर में लगी कंघी में लग गया जिससे उसका हाथ छिल गया। इससे वह कुछ दिनों तक घायल रहा।

रोटी को देख कर बहिनों की उसे खाने की इच्छा तो सन्तुष्ट हो गयी पर नीच टौरे की सैपिया को पाने की इच्छा बहुत बढ़ गयी। वह दोनों बहिनों से एक बार फिर मिला और दो तीन दिन में बहनों ने सैपिया से फिर कहा कि उनको राजा के बागीचे से दो नाशपाती खाने की इच्छा हो रही है।

सो भली बहिन ने एक और वेश रखा और राजा के बागीचे में पहुँच गयी। वहाँ उसने फिर से राजा के बेटे को देखा। सैपिया को देख कर और यह जान कर कि उसे क्या चाहिये वह खुद पेड़ पर चढ़ गया और उसके लिये कुछ नाशपातियाँ तोड़ कर नीचे फेंक दीं।

पर जब वह उसे पकड़ने के लिये पेड़ से नीचे उतर रहा था तो सैपिया ने पेड़ से लगी सीढ़ी खींच ली और उसे उल्लुओं की संगत में वहीं छोड़ दिया।

अगर कोई माली उधर से लैटस या बन्द गोभी लेने न आ गया होता और उसने उसे वहाँ से उतरने में सहायता न की होती तो वह तो रात भर के लिये वहीं रह गया होता। गुस्से में भर कर वह

अपने नाखून काटने लगा और उसने उससे खुद ही बदला लेने का तय किया।

अब जैसा किस्मत में लिखा होता है होता तो वही है न। सैपिया की दोनों बड़ी बहिनों का समय आ गया तो उन्होंने दो सुन्दर बेटों को जन्म दिया। उन्होंने सैपिया को बुला कर उससे कहा — "ओ हमारी प्यारी बहिन। अगर तुम हमारी सहायता नहीं करोगी तो समझो कि हम लोग तो बर्बाद हो गये।

क्योंकि अब हमारे पिता के घर वापस आने में ज़्यादा समय नहीं है और घर में हुई इस बुरी घटना को देख कर वह कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं कि वह हमारे कान काट डालें। इसलिये तुम हमारा एक काम करो।

हम दोनों बच्चों को एक टोकरी में रख कर नीचे उतार देंगे तो तुम उन्हें उनके पिताओं के पास ले जाना ताकि वे इनकी हर तरह से देखभाल कर सकें।"

भूखी सैपिया का दिल बहुत ही नम्र और दयालु था। हालाँकि उसे अपनी बेवकूफ बहिनों का यह काम करना कुछ मुश्किल लग रहा था फिर भी उसने उनकी बात मान ली।

दोनों बहिनों ने अपने बच्चे टोकरी में रखे और उनको नीचे उतार दिया और वह उन्हें उनके पिताओं के पास ले चली। उनके पिता वहाँ नहीं थे सो उसने उन्हें उनके बिस्तरों पर लिटाया और यह

पता करने के बाद कि टौरे का कमरा कौन सा था उसने वहाँ उसके बिस्तर पर एक बड़ा सा पत्थर रख दिया और घर वापस आ गयी।

जब राजकुमार घर लौटे तो उन्होंने अपने अपने बिस्तरों पर सुन्दर सुन्दर बच्चों को देखा। एक कागज के टुकड़े पर उनके पिता का नाम भी लिखा हुआ देखा जो उनकी छाती पर लगा हुआ था। वे दोनों यह देख कर बहुत खुश हुए।

पर टौरे बहुत गुस्सा था क्योंकि यह यह दिखाता था कि वह बच्चा पैदा करने के लायक नहीं था। जब वह सोने के लिये गया तो बस जा कर अपने बिस्तर पर गिर पड़ा। अब बिस्तर पर तो पत्थर रखा था सो वह पत्थर से कुछ ऐसे टकराया कि उसे काफी चोट लग गयी।

इस बीच सौदागर अपनी यात्रा से वापस आ गया था। उसने अपनी बेटियों को दी हुई अंगूठियों की तरफ देखा तो उसने देखा कि उसकी बड़ी बेटियों की ॲंगूठियाँ तो मटमैली और कुछ काली सी हो रही थीं। यह देख कर वह गुस्से से भर उठा।

उसने उनको मारने के लिये अपनी तलवार उठा ली पर उसको सच का पता तब चला जब राजा ने उसकी बेटियों को अपने बेटों के लिये माँग लिया। यह न जानते हुए कि उन लोगों के बीच क्या घटा था उसने अपने आपको ही दोषी ठहरा लिया।

आखिर उसे पता चला कि क्या हुआ था कैसे दो बच्चे हुए तो उसने अपने आपको भाग्यशाली समझा कि यह अच्छा हुआ कि इस सबका अन्त ठीक ही हुआ।

अब शादी की रात आयी। सैपिया जानती थी कि उसने टौरे के साथ क्या क्या किया था। हालाँकि टौरे ने उसका हाथ बड़ी इच्छा से माँगा था। पर सारे पत्ते तो पोदीना नहीं होते। सैपिया ने तुरन्त ही एक पेस्ट्री और चीनी की एक मूर्ति बनायी उसे एक टोकरी में रखा और उसे एक कपड़े से ढक दिया।

शाम को सब उत्सव मना रहे थे नाच रहे थे खुशियाँ मना रहे थे तो सैपिया बीच में ही माफी माँग कर यह कह कर आराम करने चली गयी कि वह बहुत थक गयी थी। वह बिस्तर के पास गयी उसने अपनी टोकरी मँगवायी और उनको यह कह कर वापस भेज दिया कि उसमें उसके कपड़े रखे थे।

जब वह अकेली रह गयी तो उसने टोकरी में से मूर्ति निकाली और उसे चादरों के बीच में लिटा दिया। खुद वह परदे के पीछे यह देखने के लिये छिप गयी कि देखें अब क्या होता है।

समय आया जब दुलहे और दुलहिनें अपने अपने कमरों में सोने के लिये जाने लगे। टौरे भी अपने कमरे में आया। उसने सोचा कि सैपिया उस पलंग पर लेटी होगी सो आते ही वह बोला — “अब तुम्हें उस सबकी कीमत चुकानी पड़ेगी ओ कृतघ्न कुतिया जो कुछ तकलीफें और दुख तुमने मुझे दिये हैं।

अब तुम्हें पता चलेगा कि एक मकड़े को एक हाथी से तुलना करने का क्या मतलब होता है। उस सबके लिये तुम्हें उनकी कीमत अब चुकानी पड़ेगी। मैं तुम्हें तुम्हारे कपड़े के थैले में लगी कंघी याद दिला दूँगा। पेड़ के सहारे से सीढ़ी खींचना याद दिला दूँगा। और दूसरी सभी चालें याद दिला दूँगा जो तुमने मेरे साथ खेली हैं।"

कह कर उसने अपनी बगल से एक छुरा निकाल लिया और उस पलंग पर लेटी मूर्ति में बार बार यह समझ कर मारा कि वहाँ सैपिया लेटी हुई थी। जब उसे इससे भी सन्तुष्टि नहीं मिली तो वह बोला अब मैं तुम्हारा खून पियूँगा।

कह कर उसने छुरा निकाला और उस घाव में से उसका खून पीने के लिये उसके ऊपर अपना मुँह रख कर उसे चाटने लगा। अब वह तो पेस्ट्री और चीनी की मूर्ति थी सो उसको वह बहुत मीठी लगी साथ में उसको खुशबू भी आयी तो उसको पछतावा होने लगा कि उसने ऐसी मीठी लड़की को मारा।

वह अपने गुस्से के लिये रोने लगा और इतना पछतावा करने लगा कि सुनने वाला अगर कोई पत्थर भी होता तो वह भी पिघल जाता। वह कह रहा था कि ऐसा मेरा दिल लोहे का कैसे हो गया और मेरा छुरा जहरीला कैसे हो गया जिसने इतनी सुन्दर लड़की को मार डाला।

जब वह काफी रो चुका तो निराश हो कर उसने वह हथियार उठा कर अपनी जीवन लीला खत्म करने की कोशिश की कि तभी

सैपिया परदे के पीछे से बाहर निकल आयी और उसका हाथ पकड़ लिया और चिल्लायी — "यह क्या कर रहे हो टौरे। जिसके लिये तुम रो रहे हो लो कम से कम उसका एक टुकड़ा तो खाओ।"

कह कर उसने मूर्ति में से एक टुकड़ा तोड़ कर उसके मुँह में रख दिया। वह फिर बोली — "देखो इधर देखो। मैं ज़िन्दा हूँ और पूरी तरह से तन्दुरुस्त हूँ और तुम्हें ज़िन्दा और खुश देखना चाहती हूँ। मैं कोई खाल नहीं हूँ। अगर मैंने तुम्हें किसी तरह भी नाराज किया है या दुखी किया है तो वह केवल तुम्हारी वफादारी जाँचने के लिये और सच साबित करने के लिये।

यह आखिरी धोखा तो केवल तुम्हारे दिल के गुस्से को शान्त करने के लिये था इसलिये मैं तुमसे अपने पिछले कामों की माफी माँगती हूँ।"

यह सुन कर टौरे ने उसे बहुत प्यार से अपने गले लगा लिया। फिर उन दोनों में सुलह हो गयी और उनकी खुशियाँ पहले से ज़्यादा मीठी और दोगुनी हो गयीं। उसने अपनी पत्नी के धीरज की बहुत प्रशंसा की और उसकी बहिनों की जल्दी को खराब बताया जैसा कि किसी कवि ने कहा है —

न तो वस्त्रहीन वीनस और न ही वस्त्र पहने डायना
बीच का रास्ता ही सबसे अच्छा होता है

9 3–5 बड़ी जूॅ, चूहा और मकड़ा[69]

नारडीलो का पिता उसे हर बार सौ डकैट दे कर तीन बार कुछ सामान खरीदने के लिये भेजता है। पहली बार में वह एक चूहा खरीद लाता है। दूसरी बार में वह एक बड़ी जूॅ खरीद लाता है और तीसरी बार में वह एक मकड़ा खरीद लाता है। इसके लिये उसका पिता उसको घर से बाहर निकाल देता है। वह एक शहर पहुॅचता है जहॉ वह अपनी खरीद से एक राजा की बेटी का इलाज करता है और कई कारनामों के बाद उससे शादी कर लेता है।

राजकुमार और दासी ने सैपिया के फैसले की बहुत तारीफ तो की ही पर उससे भी ज़्यादा टौला के कहानी कहने के ढंग की तारीफ की। उसने उस कहानी को इस तरह कहा था जैसे वे सब घटनाऐं उनके सामने ही घट रही हों।

लिस्ट के अनुसार अब बोलने की बारी थी पोपा की। पोपा ने रोलैंड[70] की तरह से बर्ताव किया और उसने बोलना शुरू किया —

किस्मत एक ऐसी गलतियॉ ढूॅढने वाली स्त्री है जो सब संतों को नजरअन्दाज कर देती है क्योंकि वे बजाय पहिया घुमाने के कागजों पर ज़्यादा ध्यान देते हैं। वह भी अज्ञानी और अयोग्य लोगों पर ज़्यादा ध्यान देती है।

---

[69] The Large Crab-louse, the Mouse and the Cricket. Tale No 9. (Day 3, Diversion 5) Told by Popa

[70] Roland – is chivalrous name made famous by the supposedly eight-foot tall romantic hero and the nephew of Charlemagne (pronounced as “Shaarl-manya) celebrated in Medieval literature.

वह अपना निशाना इज़्ज़त देने के लिये नहीं अपना सामान बॉटने के लिये भी नहीं खड़ी होती जैसा कि आप सब अभी मेरी इस कहानी से जानेंगे।

बहुत पहले की बात है कि वोमारो में एक बहुत ही अमीर किसान रहता था जिसका नाम था मिकोन। उसका एक बेटा था जिसका नाम था नारडीलो।[71] नारडीलो एक बहुत ही बेवकूफ लड़का था और किसी काम का नहीं था। वह ऐसे ही बच्चों के साथ रहता भी था।

अपनी इस ज़िन्दगी से पिता बहुत परेशान था। वह अपने बेटे की बेवकूफियॉ देख देख कर मन ही मन कुढ़ता रहता था। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि वह करे क्या। वह उसे कैसे ठीक करे। वह उससे वैसे काम कैसे कराये जैसे उसे करने चाहिये ताकि सब कुछ सही रहे।

अगर वह किसी सराय में जायेगा तो अपने लड़ने के लिये अपने जैसा कोई न कोई ढूॅढ लेगा। अगर उसका पाला किसी तेज़ तर्राट स्त्री से पड़ेगा तो वह कोई बेकार की स्त्री उठा लायेगा और उसके लिये सबसे अच्छी कीमत दे कर आयेगा।

अगर वह कहीं जुआ खेलने जायेगा तो लोग उसे धोखा दे कर जीत लेंगे। उसको अपने बीच में रख कर उसे नोच लेंगे और उसके पिता की सारी सम्पत्ति उससे हड़प लेंगे।

---

[71] A rich farmer named Miccone lived in Bommaro. He had a son named Nardiello.

इन्हीं वजहों से मिकोन हमेशा गोद में ही बैठा रहता। कभी वह कसमें खाता कभी उसे डॉट पड़ती कभी उसको धमकी दी जाती — "ओ खर्चीले तुम क्या समझते हो कि तुम क्या कर रहे हो। क्या तुम्हें दिखायी नहीं देता कि मेरी सब चीज़ें निकलती जा रही हैं।

इन शापित सरायों को छोड़ दो जो तुम्हारे दुश्मनों से शुरू होती हैं और बुरी चीज़ों पर खत्म होती हैं। छोड़ दो उन्हें क्योंकि वे सिर के लिये एक सिर दर्द हैं गले के लिये खराश हैं और बटुए के लिये दस्तों के समान हैं।

यह बुरा खेल छोड़ दो जहॉ तुम अपनी ज़िन्दगी का खतरा मोल लेते हो। जहॉ तुम्हारा सामान लूट लिया जाता है। जहॉ तुम अपना पैसा खो आते हो। जहॉ तुम्हारी खुशी चली जाती है। जहॉ पत्थर तुम्हें ज़ीरो बना देते हैं। जहॉ लोग तुम्हें कुछ कुछ कह कर बहुत छोटा महसूस करा देते हैं।

उन बुरी स्त्रियों का साथ छोड़ दो। पाप से जन्मी उस बुरी जात को छोड़ दो जहॉ तुम साधारण मछलियों के लिये अपनी कीमती चीज़ बिखेरते हो और छलकाते हो। सड़े हुए मॉस के लिये बीमार पड़ते हो। अपने आपको हड्डी चबाने तक नीचे गिराते हो क्योंकि वे तो वेश्याऐं भी नहीं हैं बल्कि वे तो थ्रैसियन सागर[72] की तरह से हैं जहॉ तुर्क लोग तुम्हें पकड़ लेंगे।

---

[72] Thracian Sea is the Northernmost part of the Aegean Sea. The entire area of Thracian Sea lies North of 40 degree North. Aegean Sea is between Greece and Turkey.

समय रहते सँभल जाओ। वह जगह छोड़ दो तो तुम्हारी बुरी आदतें भी छूट जायेंगी। ऐसा कहा गया है कि अगर वजह हटा दी जाये तो उसका असर भी खत्म हो जाता है।

इसलिये लो यह सौ डकैट लो और सैलर्न के मेले[73] में चले जाओ और वहाँ से कुछ बछड़े खरीद लाओ। तीन चार साल में वे बड़े हो जायेंगे तब हम गेहूँ का एक खेत बोयेंगे। और जब गेहूँ पक जायेगा तो हम उसे इकट्ठा कर लेंगे और अनाज बेचने वाले बन जायेंगे।

और अगर कोई कमी हुई तो हम अनाज मापने वाले से क्राउन मापेंगे और अगर कोई कमी नहीं हुई तो हमारे पास बहुत कुछ है करने के लिये। मैं तुम्हारे लिये अपने एक दोस्त से कुछ जमीन खरीद दूँगा सो तुम भी दूसरों की तरह से एक जमींदार बन जाओगे।

इसलिये बेटे अब तुम मेरी बात सुनो हर कदम तुम्हें ऊपर उठायेगा क्योंकि जो शुरू नहीं करता वह आगे कभी नहीं बढ़ सकता।"

यह सुन कर नारडीलो बोला — "आप मुझ पर छोड़ दें। अबसे मैं हिसाब ठीक से रखूँगा और बाकी जो काम मैं करता हू वह सब आज से बन्द।"

---

[73] Take these one hundred Ducats and go to the fair of Salern – Salern is the name of a place. Ducat was the currency in Europe in those times.

पिता बोला — "बस बेटा मैं यही चाहता हूँ।" कह कर पिता ने नारडीलो को 100 डकैट दिये। नारडीलो ने पिता से 100 डकैट लिये विदा ली और सैलर्न के मेले में चल दिया।

वह अभी सारनो के पानी तक ही पहुँचा था कि वह प्यारी सी नदी जिसके नाम पर बहुत पुराने सारनेली परिवार का नाम पड़ा है उसके किनारे की सड़क पर ऐल्म के पेड़ लगे हुए थे।

वहीं एक बड़े से पत्थर के नीचे जहाँ नदी का पानी आ आ कर उसे बराबर भिगो रहा था और जिस पर आईवी की बेल भी चढ़ी हुई थी उसने एक परी बैठी देखी जो एक बड़ी सी जूँ से खेल रही थी।

वह जूँ एक छोटा सा गिटार बजा रहा था। अगर कोई स्पेन का आदमी उस दृश्य को देखता तो कहता कि वाह यह दृश्य तो बहुत ही सुन्दर है। नारडीलो को भी वह दृश्य बहुत अच्छा लगा तो वह भी उसे एकटक खड़ा देखता रह गया। वह ऐसे आश्चर्यजनक जानवर का मालिक बनने के लिये कुछ भी दे सकता था।

परी ने कहा कि 100 क्राउन उसका मालिक बनने के लिये काफी होंगे। नारडीलो ने कहा कि इससे अच्छा समय तो कोई हो ही नहीं सकता था क्योंकि इस समय उसके पास उतने पैसे उसके लिये तैयार थे।

उसने तुरन्त ही उसे 100 क्राउन दिये और उससे जूँ ली जो एक छोटे से बक्से में रखी हुई थी और अपने पिता की तरफ दौड़ गया। उसका पूरा का पूरा शरीर खुश था।

वह कहता जा रहा था — “ओ मेरे पिता जी। अब देखना कि मैं कितना अक्लमन्द हूँ। और अब तो मैं यह भी जानता हूँ कि अपने मामले कैसे निपटने चाहिये तभी तो मैंने सारा दिन बिना थके बीच रास्ते में ही अपनी किस्मत ढूँढ ली है। और वह भी केवल सौ क्राउन में। मुझे तो यह एक रत्न मिल गया है।”

पिता ने बेटे के हाथों में जब वह छोटा सा बक्सा देखा तो उसने सोचा कि उसका बेटा कोई बिना तराशा हुआ हीरा ले कर आ रहा है। पर जब उसने बक्सा खोला और उसमें बैठी एक बड़ी सी जूँ देखी तो उसका गुस्सा तो सातवें आसमान पर चढ़ गया। वह तो उसका सारा पैसा गँवा आया था और क्या लाया था केवल एक बड़ी सी जूँ। उसने उसको बहुत डाँट लगायी।

नारडीलो उस जूँ की खासियत के बारे में अपने पिता को बताना चाहता था पर वह जिस तरह से उसके साथ बर्ताव कर रहे थे उस तरह से उनको यह बताना बहुत ही असम्भव सा काम था। क्योंकि उसका पिता उसको एक शब्द भी बोलने का मौका ही नहीं दे रहे थे।

वह बार बार यही कहते — “चुप रहो। अपनी जबान को काबू में रखो। बिल्कुल नहीं बोलो। फुसफुसाना भी नहीं। ओ

खच्चर की औलाद। गधे के सिर। इस जूँ को वापस ले जाओ और उसी को वापस कर दो जिसने तुम्हें इसे बेचा था।

लो ये 100 क्राउन और लो और जा कर इनसे बछड़े खरीद कर तुरन्त ले कर आओ। और ध्यान रहे फिर से किसी बुरी चीज़ की तरफ आकर्षित मत हो जाना वरना मैं तुम्हें तुम्हारे ही हाथ काटने पर मजबूर कर दूँगा।"

नारडीलों ने वे 100 क्राउन लिये और फिर से सारनो की मीनार की तरफ चल पड़ा। चलते चलते वह वहीं फिर उसी जगह आ पहुँचा। इस बार भी वहाँ वही परी बैठी हुई थी पर इस बार वह एक चूहे से खेल रही थी जो बड़ी सुन्दर सुन्दर शक्लें बना बना कर नाच रहा था।

नारडीलो फिर से वहीं खड़ा हो गया और आश्चर्य से मुँह खोले चूहे का नाच देखता रहा कि कैसे वह झुक रहा था कैसे वह कूद रहा था कैसे वह घूम रहा था कैसे वह बल खा रहा था। वह इस आश्चर्य को कुछ देर तक देखता रहा।

फिर उसने परी से पूछा कि क्या वह उसे बेचने के लिये तैयार है। अगर वह उसे बेचेगी तो वह उसे उसके 100 क्राउन देने को तैयार है। परी राजी हो गयी। नारडीलो ने परी को पैसे दिये परी ने नारडीलो को एक छोटे से बक्से में बन्द कर के चूहा दे दिया।

चूहा ले कर नारडीलो अपने घर लौटा और उसे अपनी नयी आश्चर्यजनक खरीद अपने अभागे पिता मिकोन को दिखायी। उसे

देखते ही उसका पिता भभक पड़ा। उसका गुस्सा तो उसके काबू से बाहर हो गया। वह तो कुछ पागलों की तरह बर्ताव करने लगा।

वह घोड़े की तरह से पैर मार मार कर इधर उधर कूदने लगा। अगर उसने अपने आपको को काबू में न किया होता तो बेटे को बहुत मार पड़ती।

आखिर मिकोन ने जो अभी भी बहुत गुस्से में था **100** डकैट और निकाले और नारडीलो को देते हुए कहा — "ख्याल रखना और अब इस तरह की सुन्दर चालें नहीं खेलना क्योंकि अगर तुमने तीसरी बार ऐसी कोई चाल खेली तो वह काम नहीं करने वाली।

तुम फिर सारनो जाओ और बछड़े खरीद कर लाओ और अगर तुमने फिर से कोई चाल खेली तो तुम्हें हमारे पूर्वजों की कसम कि तुम्हारी मॉ को उसका नतीजा भुगतना पड़ेगा जिसने तुम्हें जन्म दिया है।"

नारडीलो ने अपना सिर नीचे झुकाया और फिर से सारनो चल दिया। वह फिर वहीं आ पहुॅचा जहॉ वह पहले दो बार आ चुका था। अबकी बार भी वहॉ वही परी बैठी हुई थी पर इस बार वह एक मकड़े से खेल रही थी जो इतना मीठा गा रहा था कि सुनने वाले को नींद आ जाये।

नारडीलो ने जब इस नयी बुलबुल का गाना सुना तो एक बार फिर उसका उसे खरीदने का मन करने लगा। एक बार फिर **100**

डकैट में सौदा पक्का हो गया और वह उससे मकड़ा खरीद कर घर ले गया।

मकड़ा एक बहुत छोटे से पिंजरे में रखा हुआ था जिसे किसी सब्जी के गूदे में से काट कर बनाया गया था। उसमें कुछ लकड़ी के टुकड़े भी रखे हुए थे।

जब उसके पिता ने तीसरी बार अपने पैसे का सत्यानाश देखा तो उसका सारा धीरज जाता रहा। उसने एक डंडा उठाया और उसे बुरे ढंग से उसके कन्धों पर रख दिया।

किसी तरह से नारडीलो जब वहाँ से बच कर भाग सका तो उसने अपने तीनों जानवर उठाये और घर छोड़ कर लोम्बार्डी की तरफ चल दिया जहाँ एक बहुत ही ताकतवर लौर्ड सैनज़ोन रहता था। सैनज़ोन के एक बेटी थी जिसका नाम था मीला।[74]

मीला किसी बीमारी से बीमार थी और बहुत दुखी थी। वह इतनी दुखी थी कि पिछले सात सालों से उसे किसी ने मुस्कुराते हुए भी नहीं देखा था।

उसका पिता उसकी यह हालत देख कर बहुत दुखी था और निराश भी। क्योंकि उसने उसके हजारों इलाज किये। उसने पका हुआ और कच्चा दोनों खर्च किये पर कुछ फायदा नहीं हुआ।

---

[74] Lombardy is a region in the Northwest of Italy. A very powerful Lord Cenzone lived there. He had a daughter named Milla.

आखिर उसने अपने राज्य में यह डंका पिटवा दिया कि जो कोई भी उसकी बेटी मीला को हॅसा देगा वह उससे मीला की शादी कर देगा।

नारडीलो ने भी यह खबर सुनी तो उसके मन में अपनी किस्मत आजमाने का विचार आया। सो वह सैनज़ोन के पास पहुॅचा और उससे कहा कि वह उसकी बेटी को हॅसाने की एक कोशिश करना चाहता है।

इसके जवाब में लौर्ड ने कहा — "सावधान रहना मेरे साथी। क्योंकि अगर तुम्हारी कोशिश नाकाम हुई तो तुम्हें अपने सिर से इसकी कीमत चुकानी होगी।"

नारडीलो बोला — "मुझे कोशिश करने दीजिये और जो होना है उसे होने दीजिये।"

लौर्ड ने अपनी बेटी को बुलाया और उसे अपने चबूतरे के नीचे की तरफ बिठा दिया और खुद भी अपनी जगह बैठ गया। नारडीलो आया और उनके सामने आ कर खड़ा हो गया। उसने तीनों बक्सों में से अपने तीनों जानवर निकाले और उनके सामने रख दिये। उन्होंने गाना नाचना और बजाना शुरू कर दिया।

यह सब उन्होंने इतनी शान से किया कि लौर्ड की बेटी तो हॅसते हॅसते लोटपोट हो गयी। पर लौर्ड अपने दिल में रो पड़ा क्योंकि अपने वायदे के अनुसार उसे अब अपनी रत्न जैसी यह बेटी एक

गरीब आदमी को दे देनी थी। फिर भी वह अपना वायदा तो नहीं तोड़ सकता था न।

उसने नारडीलो से कहा — "मैं अपनी बेटी तुम्हें शादी में दे दूँगा और अपना राज्य दहेज में। पर अगर तुम तीन दिन के अन्दर अपने पति होने का कर्तव्य पूरा नहीं कर पाये तो मैं तुम्हें शेरों को खाने के लिये डलवा दूँगा।"

नारडीलो बोला — "मुझे मंजूर है। मैं एक आदमी हूँ और अपने पति होने के कर्तव्य को अच्छी तरह जानता हूँ। मैं केवल तुम्हारी बेटी के साथ ही नहीं बल्कि तुम्हारे सारे घर के साथ यह कर्तव्य निभा सकता हूँ। हम धीरे धीरे आगे चलते हैं।"

शादी की दावत हुई। मेहमानों ने खूब खाया पिया और आनन्द किया। जब शाम हुई और सूरज अपना मुँह छिपा कर पश्चिम की जेल में चला गया दुलहा और दुलहिन दोनों सोने गये।

राजा ने चालाकी से नारडीलो को थोड़ी अफीम खिला दी थी सो उस रात नारडीलो तो जाते ही सो गया। यही हाल दूसरी रात भी रहा और तीसरी रात भी।

अगले दिन राजा ने उससे कहा कि आज उसको शेरों के सामने फेंका जायेगा तो नारडीलो को अपने जानवरों का ध्यान आया।

उसने बक्सों में से अपने तीनों जानवर निकाले और उनसे कहा — "क्योंकि मेरी बदकिस्मती मुझे यहाँ इस अँधेरे रास्ते पर ले आयी है और क्योंकि मैंने अभी तक तुम्हें छोड़ा नहीं है सो ओ मेरे सुन्दर

जानवरों अब मैं तुम्हें आजाद करता हूँ ताकि तुम लोग जहाँ चाहो वहाँ जा सको।”

जानवर जैसे ही आजाद हुए वे इधर उधर नाचने गाने और बजाने लगे। उन्होंने इतना सुन्दर नाचा गाया और बजाया कि शेर भी उसका कुछ नहीं कर सके बस टिकटिकी लगाये उन जानवरों की तरफ ही देखते रहे।

नारडीलो की तो जान ही निकली जा रही थी। चूहा उससे बोला — “अपना दिल छोटा मत करो। ओ हमारे मालिक हालाँकि आपने हमको आजाद कर दिया है फिर भी हम हमेशा आपके गुलाम रहेंगे क्योंकि आपने हमें इतना प्यार जो दिया है और हमारी रक्षा जो की है। आखीर में आपने हमारे साथ इतनी दया का बर्ताव किया है कि हमको आजादी भी दे दी है।

इसमें कोई शक नहीं है कि जो कोई अच्छा करता है उसको अच्छा ही मिलता है। कोई भला काम करो और उसे भूल जाओ। आपको यह पता होना चाहिये कि हमारे ऊपर जादू डाला गया है। अब यह दिखाने के लिये कि हम आपके लिये क्या कर सकते है आप हमारे साथ आइये। हम आपको इस खतरे से बचायेंगे।”

नारडीलो उसके पीछे पीछे चल दिया। तुरन्त ही चूहे ने एक आदमी के बराबर का एक छेद बना दिया। उसमें उसने ऊपर जाने के लिये सीढ़ियाँ बना दीं। सब उसमें से ऊपर चढ़ कर एक भूसा रखने की जगह में निकल आये।

वहाँ पहुँच कर उन्होंने उससे कहा कि अब वह जो कुछ भी उनसे करवाना चाहे कह सकता है क्योंकि वे उसकी खुशी के लिये कुछ भी कर सकते थे।

नारडीलो बोला — "इस समय मेरी इच्छा है कि राजा मीला की शादी किसी और से करे तो तुम मेरा यह कहा करो कि तुम लोग इस शादी को पूरा न होने दो क्योंकि इससे एक नीच ज़िन्दगी की शुरूआत होगी।"

जानवर बोले — "जो आप चाहते हैं वही होगा। आप अपना दिल मजबूत रखिये और इसी भूसाघर में हमारा इन्तजार कीजिये। अब हम यह सारी बुराई दूर करने जाते हैं।" और वे दरबार की तरफ चल दिये।

वहाँ जा कर उन्होंने देखा कि राजा ने अपनी बेटी की शादी एक अंग्रेज लौर्ड से कर दी है और उस रात बोतल खुलने वाली है। वे तुरन्त ही उस ओर दौड़ पड़े। जा कर वे उनके कमरे में घुस गये और शाम का इन्तजार करने लगे।

जैसे ही दावत खत्म हुई और चाँद चूज़ों को ओस खिलाने के लिये निकल आया दुलहा और दुलहिन सोने के लिये अपने कमरे में आये। दुलहे ने अपनी बन्दूक भर ली और कमान नीची कर ली और जा कर बिस्तर में ऐसा बेसुध सो गया जैसे कोई लट्ठा होता है।

जूँ ने जब दुलहे के खर्राटों की आवाज सुनी तो वह बहुत धीरे से उसके पलंग के खम्भे के पास गयी और वहाँ से उसके कम्बल में

में अन्दर चली गयी और उसके पिछवाड़े की तरफ रेंग गयी और वहाँ कुछ ऐसी खुजली मचायी कि उसकी हवा निकल गयी और साथ में कुछ पानी भी।

यह आवाज सुन कर और बदबू सूँघ कर दुलहिन को गुस्सा आ गया। उसने अपने पति को जगाया तो उसको भी जब पता चला कि उसने यह क्या कर दिया है तो वह तो शर्म से मरने वाला हो गया और गुस्से से भर उठा।

वह बिस्तर से उठा अपना सारा शरीर साफ किया और डाक्टर को बुलाया तो उसने कहा कि यह और कुछ नहीं बस कल की दावत का नतीजा है।

जब अगली शाम आयी तो उसने फिर से अपने लोगों की सलाह ली तो सबने एक आवाज में कहा कि वह सोते समय अपने आपको अच्छी तरह से ढक कर सोये। कुछ और परेशानियों का हल ढूँढ कर वह उस रात सोने चला गया।

जब सब सो गये तो वह जूँ फिर से अपना काम करने के लिये निकली पर इस बार उसको अन्दर जाने का रास्ता ही नहीं मिला। यह देख कर वह बहुत ही असन्तुष्ट अपने साथियों के पास लौट आयी और उन्हें बताया कि किस तरह से दुलहा अपने चारों तरफ कपड़ा लपेट कर सो रहा था।

यह सुन कर चूहा बोला "तुम मेरे साथ आओ और देखो कि एक कुतरने वाला किस तरह से रास्ता बनाता है।"

कह कर उसने उसका कपड़ा कुतरना शुरू कर दिया और दूसरे छेद के ठीक ऊपर कपड़े में छेद कर दिया। जूँ फिर से उसके कपड़ों में घुसी और फिर से उसको अपनी दवा दे दी तो वहाँ से सुनहरे पीले रंग का पानी फिर से निकल पड़ा। और उस अरब की सुगन्ध से सारा कमरा महक गया।

दुलहिन को यह सुगन्ध आयी तो वह फिर जाग गयी और नारंगी रंग का पानी से सफेद रंग की चादर को नारंगी रंग देख कर नाक बन्द कर अपनी दासियों के कमरे में भाग गयी।

दुलहे ने अपने नौकरों को बुलाया और उन्हें अपनी बदकिस्मती बतायी। सबने उसे तसल्ली दी और तीसरी रात उसे ज़्यादा सावधान रहने के लिये कहा। उन्होंने उसे उस बीमार आदमी की कहानी भी सुनायी जो बार बार हवा निकाला करता था।

उन्होंने उससे कहा कि पहले दिन का बिस्तर खराब करना दावत की गड़बड़ी थी। दूसरे दिन का बिस्तर खराब करना तुम्हारे पेट की गड़बड़ी थी। और अगर तुम तीसरे दिन भी बिस्तर खराब करोगे तो वह तुम्हारे पेट की ढिलाई की वजह से होगा और फिर तुम अपमान और शर्म से निकाल दिये जाओगे।

दुलहा बोला — "यह तो ठीक है इसमें कोई शक नहीं है। आज की रात मैं सावधान रहूँगा। मैं नींद को अपने पास तक नहीं फटकने दूँगा। इसके अलावा हम यह भी देखेंगे कि इस सबका इलाज क्या है ताकि कोई यह न कहने पाये कि —

वह तीन बार गिरा और तीसरी बार शान्त पड़ा रहा

इस बात पर एक राय हो कर जब तीसरी रात आयी तो उसने अपना कमरा भी बदल लिया और पलंग भी। उसने अपने साथियों को बुलाया और उनसे राय माँगी कि वह अपने शरीर के इस तीसरे ढिलाव को किस तरह से काबू में रखे ताकि वह तीसरी बार चाल खेले जाने से बच जाये। दुनियाँ के सारे पौपी के फूल भी उसको आज रात नहीं सुला सकते।

उसके नौकरों में एक नौकर ऐसा था जो बात का बतंगड़ बना देता था और क्योंकि हर आदमी उसकी इस कला को जानता था। उसने दुलहे को सलाह दी कि वह लकड़ी की एक डाट[75] बनवाले जैसे कि हल्की तोप के लिये बनवायी जाती है।

तुरन्त ही एक डाट बनवा ली गयी और उसको उसकी जगह पर फिट कर दिया गया और दुलहा सोने चला गया। उसने अपनी दुलहिन को छुआ भी नहीं ताकि कहीं ऐसा न हो कि उसका किया गया इन्तजाम गड़बड़ न हो जाये। उसने अपनी आँखें भी बन्द नहीं कीं ताकि किसी भी शरारत पर वह तुरन्त ही बिस्तर से कूद सके।

जूँ ने जब देखा कि दुलहा तो सोया नहीं है तो उसने अपने साथियों से कहा — "अफसोस इस बार तो हम कामयाब नहीं हो

[75] Translated for the word "Stopper".

पायेंगे। हम कुछ भी नहीं कर पायेंगे क्योंकि दुलहा तो सोया ही नहीं है सो मुझे अपना काम करने का समय ही नहीं मिल पा रहा है।"

मकड़ा बोला — "रुको। मैं तुम्हारी सहायता करता हूँ।" और उसने बहुत मीठा मीठा गाना शुरू कर दिया। कुछ ही देर में दुलहा सो गया और जूँ अपना काम करने के लिये उसके बिस्तर में चली गयी। पर वहाँ जा कर उसने देखा कि दरवाजे पर तो डाट लगी है और रास्ता बन्द है तो वह फिर निराश हो कर वापस लौट आयी। वापस आ कर उसने यह सब अपने साथियों को बताया।

चूहे का तो और कोई उद्देश्य ही नहीं था सिवाय नारडीलो की सेवा करने के और उसको खुश करने के सो वह तुरन्त ही रसोईघर के भंडारघर में गया और सूँघते सूँघते एक मस्टर्ड के बर्तन के पास पहुँच गया।

उसने उसमें अपनी पूँछ डुबोयी और दुलहे के बिस्तर के पास आ गया। वह मस्टर्ड उसने दुखी दुलहे के नथुनों पर मल दी। इससे उसको इतनी ज़ोर की छींकें आयीं कि उसकी डाट गुस्से में भर कर बाहर आ गयी।

वह क्योंकि अपनी पत्नी की तरफ पीठ कर के लेटा हुआ था सो वह डाट इतनी ज़ोर से बाहर निकली कि वह उसकी पत्नी की छाती में जा कर लगी और बहुत ज़ोर से लगी।

वह इतने ज़ोर से चीखी और चिल्लायी कि राजा भी वहाँ आ गया और उससे पूछा कि उसे क्या हो गया। बेटी ने जवाब दिया कि किसी ने उसकी छाती में कोई छोटा सा बम मारा।

राजा ने बम मारने वाले की उसकी बेवकूफी की बहुत प्रशंसा की और साथ में अपनी बेटी की भी कि अगर उसकी छाती में बम लगा था तो वह बोल कैसे रही थी।

उसने चादर हटा कर देखा तो वहाँ तो वह डाट थी जिसने उसकी बेटी की छाती में अच्छा खासा निशान डाल दिया था। हालाँकि मुझे यह नहीं पता कि किस बात ने उसके दिल में ज़्यादा नफरत पैदा की, पाउडर की बू ने या डाट की मार ने।

राजा ने इस गन्दे दृश्य को देख कर और यह जान कर कि ऐसा तीसरी बार हुआ है दुलहे को अपने राज्य से ही निकाल दिया। यह सोच कर कि यह उसी खराब व्यवहार का नतीजा है जो उसने नारडीलो के साथ किया था पछतावे से उसने अपनी छाती पीट ली।

और जब वह अपने किये पर पछता रहा था बड़ा जूँ उसके सामने आयी और बोली — "आप इतने निराश न हों। नारडीलो अभी ज़िन्दा है क्योंकि उसके अच्छे गुण उसे आपका दामाद बनने का अधिकारी बनाते हैं। और अगर आप इस बात से खुश हैं कि वह यहाँ आये तो हम उसे अभी बुला देते हैं।"

राजा बोला — "ओह यह खबर सुन कर तो मुझे बहुत खुशी हुई ओ मेरे सुन्दर जानवर। तुमने तो हमें परेशानियों के समुद्र से

उबार लिया। मुझे तो अपने दिल में एक कॉटा सा गड़ा लग रहा था क्योंकि मैंने उस नौजवान के साथ बहुत खराब बर्ताव किया था।

तुम उसे जल्दी बुलाओ क्योंकि मैं उसे अपने बेटे की तरह से गले लगाने के लिये और अपनी बेटी की शादी उससे करने के लिये बेचैन हो रहा हूँ।"

मकड़ा यह सुन कर नाचता गाता भूसाघर की तरफ चलाा गया जहॉ नारडीलो उसका इन्तजार कर रहा था। वहॉ पहुॅच कर उसने सारी बातें उसे बतायीं और उसे शाही महल ले कर आया जहॉ वह राजा से मिला। राजा ने भी उसे गले से लगाया। फिर राजा मीला को उसके पास ले गया। जानवरों ने भी उसके ऊपर जादू डाला जिससे वह एक बहुत सुन्दर नौजवान बन गया।

फिर उसने वोमारो से अपने पिता को भी बुलवा लिया और सब एक साथ खुशी खुशी रहने लगे। इस घटना ने यह साबित कर दिया कि —

जो सौ सालों में नहीं हो सकता वह एक घंटे में हो सकता है

10 3–6 लहसुन का जंगल[76]

अम्ब्रूओसो की बेटी बलूचा डी ला वरा[77] अपने पिता का बहुत कहना मानती थी और उसके कहे का ठीक ठीक पालन करती थी। उसकी शादी एक नारडूचो नाम के एक नौजवान से हो जाती है जो बियासीलो गुआलैचिया का सबसे बड़ा बेटा है।[78] बलूचा की बहिनें गरीब हैं सो बियासीलो उनका दहेज दे कर अपने दूसरे बेटों से उन सबकी शादी कर देता है।

यह कहानी सुन कर वहाँ बैठे सभी लोग बहुत हँसे। इस बात पर नहीं कि दुलहे को राज्य से निकाल दिया गया बल्कि उस चाल पर जो चूहे ने उसके साथ खेली। वे अगली सुबह तक हँसते ही रहते अगर राजकुमार ने उन सबको चुप होने के लिये और डौना ऐन्टोनैला से बोलने के लिये न कहा होता। डौना तैयार थी उसने कहना शुरू किया —

आज्ञापालन एक ऐसी चीज़ है जो बिना किसी खतरे के फायदा पहुँचाती है और एक ऐसी चीज़ है जो जिसके पास होती है तो वह किसी भी मौसम में फल देती है।

जैसा कि आप सभी अभी एक गरीब किसान की बेटी के साथ देखेंगे जो अपने पिता का आज्ञा पालन करने से न केवल अपने लिये अच्छा रास्ता खोलती है बल्कि अपनी बहिनों के लिये भी खोलती है जिनकी शादियाँ अच्छे से हो जाती हैं।

---

[76] The Wood of Garlic. Tale No 10. (Day 3, Diversion 6) Told by Donna Antonella

[77] Belluccia de la Varra was the daughter of Ambruosso. La Varra is the name of of a place.

[78] Belluccia is married to a youth named Narduccio, the eldest son of Biasillo Guallecchia

एक बार की बात है कि ला वरा के एक गाँव में अम्ब्रूओसो नाम का एक गरीब किसान रहता था। उसके सात बेटियाँ थीं। पर उसके पास उन सबको बड़ा करने के लिये केवल एक लहसुन का खेत था।

इस किसान का एक बहुत अच्छा दोस्त था बियासीलो गुलैचिया जो रैज़ीना[79] का रहने वाला था और अच्छा पैसे वाला था। इसके सात बेटे थे जिनमें नारडूचो इसका सबसे बड़ा बेटा था और इसको बहुत प्यारा था।

एक बार नारडूचो किसी खतरनाक बीमारी से बीमार पड़ा। किसी भी दवा से उसका इलाज नहीं हो सका हालाँकि उसके पिता का बटुआ तो उसके इलाज के लिये हमेशा ही खुला हुआ था।

एक दिन अम्ब्रूओसो उसके घर मिलने गया तो बियासीलो ने उससे पूछा कि उसके कितने बच्चे थे। तो अम्ब्रूओसो ने इस शर्म से बचने की वजह से कि उसके कितने सारे बातूनी बच्चे थे उससे कहा कि उसके चार बेटे और तीन बेटियाँ थीं।

बियासीलो बोला "अगर ऐसा है तो कल अपने एक बेटे को मेरे बेटे के पास बात करने के लिये भेज दो ताकि मेरा बेटा खुश हो सके। ऐसा कर के तुम मेरे ऊपर बहुत कृपा करोगे।"

अब अम्ब्रूओसो तो बात कह चुका था सो उसको पता नहीं था कि वह इस बात का क्या जवाब दे सो उसने हाँ में सिर हिला कर

[79] Resina – name of a place.

उसका यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और ला वरा लौट आया। पर वह तो दुख से मरा जा रहा था क्योंकि उसको पता ही नहीं था कि वह अपने दोस्त के पास किसे भेजेगा।

आखिर उसने एक एक कर के अपनी सब बेटियों को बुलाया, सबसे बड़ी से ले कर सबसे छोटी तक। और सबसे यही पूछा कि उनमें से कौन अपने बाल कटाना चाहेगा और मर्दानी पोशाक पहन कर अपने आपको नकली नौजवान दिखाना चाहेगा ताकि वह बियासीलो के बेटे का साथ बैठ कर बातें कर सके और उसका मन बहला सके जो बहुत बीमार था।

यह सुन कर उसकी सबसे बड़ी बेटी अनूचा बोली — "मेरा पिता कब मरा जो मैं अपने सिर पर कैंची चलवाऊँ।"

नोरा बोली — "मेरी तो अभी शादी भी नहीं हुई है और आप मुझे इस दुखी हालत में देखना चाहते हैं।"

तीसरी बेटी सपातीना बोली — "मैंने तो हमेशा यही सुना है कि स्त्रियों को कभी ब्रीचेज़ नहीं पहननी चाहिये।"

चौथी रोज़ा बोली — "म्याऊँ म्याऊँ। आप मुझसे एक बीमार आदमी को खुश करने के लिये वह सब खोजने के लिये नहीं कहेंगे जो सारे कैमिस्ट नहीं ढूँढ सके।"

पॉचवीं चाना बोली — "इस बीमार आदमी से कहो कि वह अपना इलाज अपने आप ही ढूँढ ले क्योंकि मैं तो आदमियों की ज़िन्दगी के बालों के लिये अपना एक बाल भी नहीं देने वाली।"

छठी सैला बोली — "मैं तो एक स्त्री पैदा हुई थी। मैं एक स्त्री हूँ और मैं मरूँगी भी एक स्त्री की तरह ही। मैं आदमी का वेश रख कर एक स्त्री के नाम को बदनाम नहीं करूँगी।"

यह देख कर कि उसका पिता उसकी हर बहिन के जवाब पर गहरी साँस ले रहा था उसकी आखिरी सातवीं बेटी बलूचा बोली — "आदमी का वेश तो छोड़िये पिता जी आपकी खुशी के लिये तो मैं जंगली जानवर का वेश भी रख सकती हूँ।"

अम्ब्रूओसो बोला — "भगवान तुम्हें खुश रखे बेटी क्योंकि जो खून मैंने तुम्हें दिया उसके लिये तुमने मुझे एक नयी ज़िन्दगी दे दी है। अब हमको एक पल का भी इन्तजार नहीं करना चाहिये।"

तुरन्त ही उसके सुनहरी बाल कटवाये गये। उसको पुराने कपड़े पहनाये गये और वे रैज़ीना चल दिये जहाँ बियासीलो और उसके बेटे ने जो बिस्तर में लेटा हुआ था उनका दिल से स्वागत किया।

अम्ब्रूओसो ने अपनी बेटी बलूचा को नारडचो की सेवा करने के लिये वहाँ छोड़ा और सीधा अपने घर लौट आया। बीमार नौजवान ने बलूचा को देखा तो उसे फटे कपड़ों में भी एक रोशनी चमकती नजर आयी। वह उसकी सुन्दरता की चमक थी।

वह उसकी सुन्दरता देख कर मोहित था कि वह बार बार उसकी तरफ देखे जा रहा था। उसको निहारते हुए उसने अपने मन में कहा "अगर मेरी आँखें मुझे धोखा नहीं दे रहीं तो यह नौजवान एक लड़की है। इसके चेहरे की मिठास और भोलापन इसके वेश से

बेईमानी कर रहा है। इसके बोलने का ढंग भी यही बताता है। जिस शान से यह चलती है वे भी यही कहते हैं। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि मेरा दिल यह कहता है कि यह एक लड़की है। प्यार ने यह बात जान ली है।

इसमें कोई शक नहीं कि यह एक लड़की ही है और शायद यह एक नौजवान का रूप रख कर मेरे दिल को घायल करने के लिये जाल बिछाने के लिये यहाँ आयी है।"

इन विचारों में खोये खोये उसके मन पर एक उदासी सी छा गयी। उसका बुखार बढ़ गया। डाक्टरों को उसकी हालत ज़्यादा खराब लगी।

उसकी माँ जो उसको बहुत प्यार करती थी उससे बोली — "ओ मेरे प्यारे बेटे। ओ मेरी आँखों के तारे। मेरी बूढ़ी उम्र के सहारे। ऐसी क्या वजह है कि जो तुम बजाय और अच्छे होने के खराब होते जा रहे हो। बजाय आगे बढ़ने के पीछे हटते जा रहे हो।

क्या यह सम्भव है कि तुम अपनी माँ का अपनी बीमारी की वजह बताये बिना ही धीरज खो दोगे। कुछ तो कहो ताकि हम तुम्हारा इलाज कर सकें। इसलिये ओ मेरे रत्न। अपने दिमाग को शान्त रखो और कुछ बोलो। मुझे बताओ कि तुम्हें क्या चाहिये। जो कुछ भी तुम्हें चाहिये कोला तुम्हें ला कर देगा। मैं तुम्हारी किसी इच्छा को अधूरा नहीं रहने दूँगी चाहे वह कोई भी हो।"

मॉ की ऐसी बातों से नारडूचो को बहुत सहारा मिला तो वह बोला और अपने दिल की बात अपनी मॉ से कह दी। उसने अपनी मॉ को बताया कि अम्ब्रूओसो का बेटा लड़का नहीं बल्कि लड़की थी और अगर वे उसकी शादी उससे नहीं करेंगे तो उसने यह इरादा कर लिया था कि वह अपनी ज़िन्दगी छोटी कर देगा।

यह सुन कर उसकी मॉ बोली — “धीरे से बेटा धीरे से। अपने इस सपने को शान्त करने के लिये जो तुम्हारे दिमाग में जन्म ले चुका है हम कुछ करेंगे। हम पता लगायेंगे कि यह सचमुच में नौजवान है या कोई लड़की है।

हम इस नौजवान को घुड़साल में भेजेंगे और सबसे ज़्यादा जंगली घोड़े पर चढ़ने के लिये कहेंगे। अगर यह कोई लड़की है तो इसकी उस घोड़े पर चढ़ने की हिम्मत ही नहीं पड़ेगी और तुम उसके चेहरे का बदलता हुआ रंग देखोगे। हो सकता है कि वह बेहोश भी हो जाये। इस तरह से हम तुरन्त ही जान लेंगे कि यह कौन है।”

बेटा उसकी यह बात सुन कर बहुत खुश हुआ। उन्होंने बलूचा को घुड़साल में भेजा और उसको एक बहुत ही जंगली घोड़ा दिया। तो उसने उसके ऊपर जीन कसी और शेर की तरह से कूद कर बैठ गयी। फिर वह उसको ऊपर नीचे कुदाने लगी जिससे देखने वाले आश्चर्यचकित रह गये। उसने उसे चक्कर भी दिलवाये जिसकी देखने वालों ने बहुत प्रशंसा की। इस तरह से उसने घोड़े के कई करतब उन्हें दिखाये।

यह देख कर नारडूचो की माँ ने अपने बेटे से कहा — "तुम अपने दिमाग का यह फितूर निकाल दो कि यह एक लड़की है। यह नौजवान तो जीन पर इतनी अच्छी तरह से बैठा था कि कोई बहुत पुराना घुड़सवार भी इतनी अच्छी तरह से नहीं बैठेगा।

पर इस सबूत के बाद भी नारडूचो यही कहता रहा कि वह एक लड़की है और यह बात स्कानेयरबेको[80] भी उसके दिमाग में से नहीं निकाल सकता।

माँ ने उसकी इस इच्छा को उसके दिमाग से निकालने के लिये उससे फिर कहा — "शान्ति से शान्ति से ओ मेरी चिड़िया। इस मामले को साफ करने लिये हम अब कोई और तरकीब सोचेंगे।"

कह कर उसने एक बन्दूक मँगवायी और बलूचा को बुलवाया। फिर उससे कहा कि वह उसमें गोली भरे और उसे चलाये। उसने भी हथियार उठाया उसमें बन्दूक का पाउडर और नारडूचो की इच्छाओं का पाउडर भरा और नारडूचो की छाती का निशाना साध कर उसे चला कर बन्दूक उसे वापस कर दी। इससे तो नारडूचो की छाती उसके लिये और भी ज़्यादा इच्छाओं से भर उठी।

माँ यह सब देख रही थी। उसने भी उस आकर्षक नौजवान की बन्दूक चलाने की शान को देखा तो उसने फिर अपने बेटे से कहा कि वह ऐसा ख्याल अपने दिमाग से निकाल दे और यह सोचे कि कोई लड़की इतना ज़्यादा काम नहीं कर सकती।

---

[80] Scannarebecco

पर नारडूचो अपने विश्वास पर कायम था। उसके दिमाग को शान्ति नहीं थी। वह इस बात पर अपनी ज़िन्दगी तक दाँव पर लगा सकता था कि इस गुलाब में कली नहीं थी।

वह अपनी माँ से यह कहता ही रहा — "ओ मेरी माँ तुम मेरा विश्वास करो कि अगर यह पेड़ तुम्हारे बीमार बेटे को एक अंजीर दे देगा तो तुम्हारा बेटा सब डाक्टरों को अंजीर दे देगा इसलिये तुम जल्दी से जल्दी इस सच को जानने की कोशिश करो।

अगर ऐसा नहीं हुआ तो मेरी तन्दुरुस्ती दिन ब दिन गिरती ही चली जायेगी। और क्योंकि मुझे इस गड्ढे का रास्ता दिखायी नहीं देगा तो मैं फिर किसी और दूसरे गहरे गड्ढे में जा गिरूँगा।"

बेचारी दुखी माँ ने जो उसका जिद्दीपना देख रही थी उसको सहारा देने की कोशिश की। वह बोली — "अगर तुम्हें खुद ही इस सच का पता लगाना है तो तुम उसे तैरने के लिये ले जाओ तब तुम्हें पता चल जायेगा कि वह लड़की है या लड़का।"

नारडूचो यह सुन कर खुशी से उछल पड़ा — "बहुत खूब। इस तरकीब में तो कोई शक ही नहीं रहेगा। आपने ठीक जगह पकड़ा है। आज ही पता चल जायेगा कि यह कौन है।"

लेकिन बलूचा को इस जाल की भनक पड़ गयी सो तुरन्त ही उसने अपने पिता के एक नौकर को बुला भेजा जो एक बहुत ही होशियार नौजवान था। उसने उसे सिखाया कि वह ख्याल रखे कि जैसे ही वह कपड़े उतार कर नहाने के लिये आये तो वह अपनी

छिपी हुई जगह से निकल आये और उसे एक बुरी खबर दे कि उसके पिता मरने वाले हैं और मरने से पहले उसे देखना चाहते हैं।

नौजवान ने ऐसा ही किया जैसा कि उससे कहा गया था। जैसे ही उसने नारडूचो और बलूचा को अपने अपने कपड़े उतारते देखा तो वह तुरन्त ही अपनी छिपी हुई जगह से निकला और बलूचा के पास पहुँच कर उसे उसके पिता की हालत की बुरी खबर दी।

यह खबर सुन कर बलूचा ने नारडूचो से माफी माँगते हुए जाने की छुट्टी माँगी और ला वरा की तरफ चल दी। बीमार नौजवान बेचारा सिर नीचे झुकाये आँखें घुमाता हुआ सफेद होठ लिये वापस अपनी माँ के पास लौट गया और उसे जा कर बताया कि क्या हुआ था। वह उसका आखिरी इम्तिहान न ले सका।

माँ बोली — "निराश न हो। हम खरगोश को गाड़ी के साथ पकड़ेंगे। तुम तुरन्त ही अम्बूओसो के घर चले जाओ और उससे कहो कि उसका बेटा अभी या थोड़ी देर से आने वाला है। तब तुम अपने मन का शक दूर कर पाओगे और सच जान पाओगे।"

यह सुन कर नारडूचो के गालों का प्रकृतिक रंग वापस आ गया और अगली सुबह जैसे ही सूरज निकला वह अम्बूओसो के घर चल दिया। वहाँ जा कर उसने उससे कहा कि वह किसी खास बात पर उसके बेटे से बात करना चाहता था जो कुछ देर से गायब था।

किसान ने उसे थोड़ी देर इन्तजार करने के लिये कहा और कहा कि वह अपने बेटे को उसके पास भेज देगा। पर बलूचा ने जो

अपने खुशबूदार गाउन में नहीं दिखायी देना चाहती थी अपना गाउन उतारा अपनी ब्रीचेज़ पहनी और लड़कों वाले कपड़े पहन कर बाहर आ गयी।

पर जल्दी में वह अपने कान के बुन्दे निकालना भूल गयी जिन्हें नारडूचो ने देख लिया। गधे के कानों से पता चलाया जा सकता है कि मौसम कैसा रहेगा उसी तरह से बलूचा के कान देख कर उसने पता लगा लिया कि उसके दिल की इच्छा पूरी हुई।

उसने बलूचा को एक कोरसीकन कुत्ते की तरह पकड़ लिया और कहा — "यह मेरी इच्छा है कि तुम मेरी पत्नी बनो चाहे यह मेरी किस्मत को मंजूर हो या न हो यहाँ तक कि अगर मैं मर भी जाऊँ तब भी।"

अम्ब्रूओसो ने उसके अच्छे इरादे देख कर उससे कहा — "यह मेरे लिये काफी है कि तुम्हारे पिता इस बात से सन्तुष्ट हैं और अगर सब एक राय हो जायेंगे तो मेरी सौ राय उसमें शामिल हो जायेंगी।"

फिर वे बियासीलो के घर चले गये जहाँ नारडूचो के माता पिता ने अपने बेटे की खुशी देखते हुए अपनी बहू का बहुत प्यार से स्वागत किया। उसके बाद बियासीलो ने जानना चाहा कि अम्ब्रूओसो ने उनके साथ यह चाल क्यों खेली। उसने अपनी बेटी को एक नौजवान के वेश में क्यों भेजा।

अम्ब्रूओसो ने बताया कि वह अपने दोस्त को यह नहीं बताना चाहता था कि वह एक इतना बड़ा गधा था कि उसने सात बेटियों को जन्म दिया।

बियासीलो बोला — “क्योंकि भगवान ने तुम्हें सात बेटियाँ दी हैं तो मुझे उसने सात बेटे दिये हैं। अब हम सातों की शादी एक ही दिन करेंगे। अब तुम जाओ और अपनी सातों बेटियों को यहाँ ले आओ क्योंकि मैं उनका दहेज देना चाहता हूँ। क्योंकि भगवान की कृपा से इन सब लोगों के लिये मेरे पास भगवान का दिया बहुत कुछ है।”

यह सुन कर अम्ब्रूओसो ने अपना दाँया पैर आगे बढ़ाया और अपनी बेटियों को लाने चला गया। तुरन्त ही वह उन सबको ले कर बियासीलो के घर लौट आया जहाँ शादी की दावत हुई। सात शादियाँ हुईं। नाच गाना हुआ जिसकी आवाज आसमान तक जा रही थी। इससे साफ पता चलता था कि —

भगवान की कृपा में देर नहीं है

11 3–9 रोज़ैला[81]

एक सुलतान को एक बीमारी के इलाज के लिये यह सलाह दी जाती है कि वह किसी बड़े लौर्ड के खून से नहाये सो वह अपने आदमियों को एक शाहज़ादे को पकड़ने के लिये भेजता है। उसकी बेटी उस कैदी के प्रेम में पड़ जाती है और दोनों एक साथ भाग जाते हैं। बेटी की माँ उनका पीछा करती है तो उसके हाथ काट दिये जाते हैं। वह अपनी बेटी को यह शाप दे कर दुख से मर जाती है कि शाहज़ादा उसे भूल जाये। कई चालें खेलने के बाद वह अपने पति को अपनी याद दिलाने में सफल हो जाती है। उसके बाद वे दोनों खुशी खुशी रहते हैं।

पाओला की कही गयी कहानी[82] बड़ी खुशी से सुनी गयी। सबने एक ही बात कही कि पिता की यह इच्छा कि उसके एक गुणवान बेटा हो सो वह ठीक ही थी हालॅकि उल्लू ने उसके लिये गाया और अगर दूसरों ने उसके लिये आटा मला तो उसने मैकेरोनी काटी।

अब सिओमैटैला की बारी थी अपनी कहानी कहने की सो उसने कहना शुरू किया —

जो लोग ठीक से जीते नहीं वे ठीक से मरते भी नहीं। और जो इस कहे पर ध्यान नहीं देता वह सफेद कौए की तरह है क्योंकि जो कोई तेल बोता है वह गेहॅू नहीं काट सकता और जो टमाटर बोता है वह गोभी नहीं काट सकता। और यह कहानी जो मैं अब कहने जा रही हॅू यह मुझसे झूठ नहीं कहेगी।

---

[81] Rosella. Tale No 11. (Day 3, Diversion 9) Told by Ciommetella.

[82] Previous to this story “The Ignorant Man” told by Paola, is given in “Il Pentamerone” by Taylor as “The Booby” translated by Sushma Gupta

मैं आप सबसे विनती करती हूँ कि आप सब इसे ध्यान से सुनें अपने कान और मुँह खुले रखें। मैं अपनी पूरी कोशिश करूँगी कि मैं आपको पूरी तरीके से सन्तुष्ट कर सकूँ।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक सुलतान था जिसको कोढ़ का रोग हो गया था। उसका कोई इलाज नहीं मिल पा रहा था। डाक्टर को यह पता नहीं था कि वे इस परेशानी से बचने के लिये क्या करें सो अपने बचाव के लिये उन्होंने सुलतान को एक ऐसा सुझाव दिया जो करने में बहुत ही असम्भव सा था।

उन्होंने उससे कहा कि अगर वह ठीक होना चाहता है तो इसके अलावा इसका कोई इलाज नहीं है कि वह किसी बड़े शाहज़ादे के खून से नहाये। इस अजीब से इलाज को सुन कर और अच्छा होने की इच्छा ने सुलतान ने अपने काफी सारे लोगों को बुलाया और उनसे किसी बड़े शाहज़ादे को लाने के लिये कहा।

उसका यह हुक्म पाते ही नावें समुद्र में उतर गयीं ताकि जासूसों की सहायता से भेंटों की सहायता से और बहुत सारी कीमती चीज़ों की सहायता से शायद कोई शाहज़ादा उनके हाथ लग जाये। नावें फ़ौन्टे चारो समुद्र[83] में तैरने लगीं।

रास्ते में उनको एक नाव मिली जो बहुत धीरे धीरे खे रही थी। उसमें उस देश के सुलतान का शाहज़ादा पाओलूचो बैठा हुआ था।

---

[83] Fonte Ciaro Seas

उन्होंने उसको बन्दी बना लिया और उसे सीधे कौन्सटैनटिनोपिल[84] ले आये। यह सुन कर डाक्टरों ने इस मामले को और लम्बा खींचने के लिये, दुखी शहज़ादे के ऊपर दया और रहम की वजह से नहीं बल्कि अपने आपको बचाने के लिये क्योंकि वे जानते थे कि इस इलाज से सुलतान ठीक तो होगा नहीं और फिर उन्हें इसका बदला चुकाना पड़ेगा एक और रास्ता अपनाया।

उन्होंने सुलतान को यह विश्वास दिलाया कि शाहज़ादा अपनी आजादी खोने पर बहुत गुस्सा है इसलिये उसका खून अभी ठीक नहीं है। अगर सुलतान अभी उसके खून से नहाया तो उससे उसे फायदा पहुँचने की जगह नुकसान हो सकता है। इसलिये इस इलाज को अभी कुछ समय तक के लिये रोक दिया जाये जब तक शाहज़ादे का दुखी मन खुश न हो जाये।

इसके लिये शाहज़ादे का मन खुश करना भी बहुत जरूरी है। उसको अच्छा खाना खिलाया जाये ताकि उसका खून बढ़िया हो जाये।

सुलतान ने यह सुन कर यह सोच कर कि वह उसे बहुत खुश रखेगा उसे अपने एक खास बागीचे में भेज दिया जहाँ हमेशा वसन्त रहता था। वहाँ हमेशा फव्वारे चलते रहते थे और चिड़ियों के साथ झगड़ते रहते थे कि देखें कौन सबसे धीरे फुसफुसाता है।

[84] Constantinople – modern Istanbul, the capital of Turkey

उसका मन लगाने के लिये सुलतान ने यह वायदा करते हुए अपनी सुन्दर बेटी रोज़ैला को भी वहाँ भेज दिया कि वह उसकी शादी उससे कर देगा।

रोज़ैला ने जब उस सुन्दर शाहज़ादे को देखा तो वह उसे अपना दिल दे बैठी। दोनों की इच्छाऐं एक थी सो दोनों एक दूसरे के बन्धन में बँध गये।

पर एक समय आया जब बिल्लों को आनन्द लेने की सूझी। वसन्त का मौसम था। शाहज़ादे का खून अब पहले से अच्छा हो गया था। डाक्टर लोग अब इस मामले को और ज़्यादा नहीं टाल सकते थे। सो सुलतान को खुश करने के लिये वे अब पाओलूचो को मारने ही वाले थे कि...

हालाँकि रोज़ैला के पिता ने उससे ये सारी बातें छिपा कर रखी हुई थीं पर अपनी माँ की सिखायी हुई जिओमैन्सी[85] तरकीब से उसने यह पता कर लिया था कि उसके पिता शाहज़ादे के साथ क्या करने वाले हैं।

उसने अपने प्रेमी को एक तलवार देते हुए कहा — "ओ मेरे सुन्दर शाहज़ादे। तुमको आजाद करने के लिये और तुम्हारी ज़िन्दगी बचाने के लिये जो तुम्हारे लिये बहुत कीमती है तुमको अब कोई देर नहीं करनी चाहिये।

[85] Geomancy is technique of divination that interprets markings on the ground or patterns formed by throwing a handful of soils, rocks or sand.

तुम खरगोश की तरह समुद्र के किनारे की तरफ दौड़ जाओ। वहाँ तुम्हें एक नाव तैयार मिलेगी। तुम जा कर उसमें बैठ जाना और मेरा इन्तजार करना। इस जादुई तलवार के असर से तुम सारे नाविकों में राजा की तरह से राज करोगे।

पाओलूचो ने जब आजाद होने का इतना अच्छा मौका देखा तो रोज़ैला से तलवार ली और समुद्र के किनारे की तरफ भाग लिया। वहाँ उसको एक नाव मिल गयी। वह जा कर नाव में बैठ गया। नाव में जो लोग पहले ही बैठे हुए थे उन्होंने उसका बड़े आदर से स्वागत किया।

इस बीच रोज़ैला ने एक कागज पर जादू की एक तस्वीर खींची और उसे चुपके से अपनी माँ की जेब में रख दिया। उस कागज के जेब में पहुँचते ही वह गहरी नींद सो गयी और ऐसे सोयी कि वह कुछ सुन भी नहीं सकी।

इसके बाद रोज़ैला ने बहुत सारे रत्न और दूसरी कीमती चीज़ें इकट्ठी कीं और नाव की तरफ दौड़ पड़ी। उसके बैठते ही नाव चल पड़ी।

कुछ ही देर में सुलतान बागीचे में आया तो उसे न तो अपनी बेटी दिखायी दी और न ही शाहज़ादा। इससे गुस्सा हो कर उसने ऐसा बर्ताव करना शुरू कर दिया जिससे सारी दुनियाँ डर गयी।

वह अपनी पत्नी को ढूँढने लगा। वह उसे मिल तो गयी पर वह तो गहरी नींद सो रही थी। वह उसको जगा न सका – न चिल्ला

कर न चीख कर न उसकी नाक खींच कर। उसे लगा कि शायद उसे कोई दौरा पड़ गया है सो उसने उसकी नौकरानियों को बुला कर उन्हें उसके कपड़े उतारने के लिये कहा। जैसे ही उन्होंने उसका स्कर्ट उतारा उस कागज का जादू खत्म हो गया और वह जाग गयी।

उठते ही वह चिल्लायी — "उफ़। यह मेरी उस नीच बेटी की करतूत है जिसने मुझ पर यह जादू डाला है। वह शाहज़ादे के साथ भाग गयी है पर चिन्ता की कोई बात नहीं है। मैं उसे देखती हूँ और उससे इसकी कीमत वसूल करती हूँ।"

कह कर वह समुद्र के किनारे की तरफ भागी और एक पत्ता समुद्र में फेंका जो तुरन्त ही एक नाव बन गया और तीर की तरह से पानी को काटता हुआ रोज़ैला की नाव के पीछे चल पड़ा।

रोज़ैला को हालाँकि अपनी माँ दिखायी नहीं दे रही थी पर वह अपनी जादू की कला से यह जान गयी थी कि उसके पीछे क्या हो रहा था।

उसने पाओलूचो से कहा — "प्रिय जल्दी करो। अपनी तलवार अपने हाथ में लो और नाव के पिछले वाले हिस्से में जा कर खड़े हो जाओ।

और जब तुम जंजीरों की खनखनाहट की आवाज और काँटे से हमारी नाव को पकड़ने की हिस्स की आवाज सुनो तो बस उसे आँख बन्द कर के काट देना। किसी को नहीं छोड़ना अगर कोई मरता है

तो उसे मरने देना। उनकी गर्मी को ठंडा कर देना नहीं तो हम गये। हमारा वहाँ से भागना बेकार हो जायेगा।"

अब क्योंकि शाहज़ादे को अपने मरने का डर था सो उसने रोज़ैला की सलाह मानी। जब सुलताना की नाव उसके पास आयी और उसने शाहज़ादे की नाव को पकड़ने के लिये काँटा फेंका तो उसे तुरन्त ही काट दिया और सबको मारने के लिये सब तरफ अपनी तलवार चलाने लगा।

खुशकिस्मती से उसने सुलताना के हाथ एक ही वार में काट दिये। हाथ कटने पर सुलताना चीखी और उसने अपनी बेटी को शाप दिया कि "जैसे ही शाहज़ादा अपने देश में घुसे वह रोज़ैला को भूल जाये।"

और वह वहाँ से अपने कटे हुए हाथों से खून बहाते हुए तुर्की लौट आयी। वह अपने पति के पास गयी और अपना दर्द भरा दृश्य दिखाते हुए बोली — "प्रिय देखो। हम यानी तुम और मैं दोनों ही किस्मत की मेज पर खेल रहे थे और हम दोनों ही हार गये। तुम अपनी तुन्दुरुस्ती हार गये और मैं अपनी ज़िन्दगी।"

और यह कह कर वह मर गयी और अपने उस गुरू को फीस देने चली गयी जिसने उसे काला जादू सिखाया था। सुलतान भी निराशा के समुद्र में डूब गया। वह भी अपनी पत्नी के कदमों पर चला और जम गया। यह उनका अन्त हुआ।

उधर पाओलूचो जब फ़ौन्टे चारो पहुँचा तो उसने रोज़ैला से कहा कि वह उसके लिये गाड़ियाँ आदि लाने जा रहा है। जब तक वह लौट कर आता है वह वहीं नाव में उसका इन्तजार करे।

पर जैसे ही उसने अपने देश की जमीन पर पैर रखा वह रोज़ैला के बारे में सब कुछ भूल गया। जब वह घर पहुँचा तो उसके माता पिता ने उसका चूम कर और सहला कर स्वागत किया। उसके आने की खुशी में जो जो इन्तजाम किये गये थे तुम उन्हें सोच भी नहीं सकते।

उधर रोज़ैला पाओलूचो का तीन दिन तक इन्तजार करती रही। पर जब वह नहीं आया तो उसे अपनी माँ का शाप याद आया तो उसने अपने होठ काट लिये क्योंकि उसने तो इस शाप के इलाज के बारे में पहले सोचा ही नहीं था। सो निराश हो कर वह नाव से उतर कर शहर की तरफ चल दी।

शहर पहुँच कर उसने राजा के महल के सामने एक महल किराये पर ले लिया। अब वहाँ रह कर वह अपना प्लान बनाने लगी कि किस तरह से वह शाहज़ादे को अपनी याद दिलाये।

दरबार के लौर्ड और कुलीन लोगों ने जो हर मामले में दखल देने की इच्छा रखते हैं देखा कि महल के सामने वाले महल में एक नयी चिड़िया आयी है। उसकी सुन्दरता देख कर सबका दिल खुश हो गया और सब आपस में कानाफूसी करने लगे। कोई दिन खाली नहीं जाता था जब वे उस घर के सामने चक्कर न लगाते हों।

चिड़ियें इधर से उधर चक्कर काटतीं और संगीत अपनी पूरी आवाज से गूँजता जिसकी आवाज में लोगों को कुछ सुनायी नहीं देता।

एक दूसरे के हाथों को चूमना और और भी बुरे व्यवहार चलते रहे। एक दूसरे को कोई जानता भी नहीं था पर सबका उद्देश्य एक ही था – बोतल में से प्यार की शराब पीना।

रोज़ैला जानती थी कि जहाज़ का लंगर कहाँ फेंकना है फिर भी वह सबके साथ अच्छा व्यवहार करती थी और उनका स्वागत करती थी। वह सबको आशा की डोर में बाँध कर रखे रही।

और फिर एक दिन उसने एक घुड़सवार से जिसकी दरबार में अच्छी पहुँच थी छिपे रूप से वायदा किया कि अगर वह उसे एक हजार डकैट और एक पूरी पोशाक ला कर देगा तो वह उसे अपने प्रेम का सबूत देगी।

उस अभागे शौकीन आदमी ने जो उसके प्यार में अन्धा हो रहा था गया एक हजार डकैट बड़े ऊँचे ब्याज पर उधार लिये और एक जानने वाले व्यापारी से बहुत कीमती पोशाक ली और फिर अपनी इच्छा पूरी होने की आशा में उस समय का इन्तजार करने लगा जब सूरज विदा हो जायेगा और चाँद आ जायेगा।

जब रात आयी तो वह छिपे रूप से रोज़ैला के घर की तरफ चल दिया। वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि रोज़ैला तो एक बहुत ही

कीमती बिस्तर में लेटी हुई है। वह फूलों के बागीचे में वीनस[86] की तरह लेटी हुई लग रही थी। उसने कहा कि वह बिना दरवाजा बन्द किये भीतर न आये।

घुड़सवार ने सोचा कि यह तो उतनी सुन्दर लड़की को खुश करने के लिये एक छोटी सी सेवा होगी सो वह दरवाजा बन्द करने के लिये पलटा। पर जैसे ही वह दरवाजा बन्द कर के फिर से पलटा तो वह दरवाजा तो फिर से खुल गया।

वह उसे बार बार बन्द करता रहा पर वह बन्द रहने की बजाय बार बार खुल जाता था। ऐसा सारी रात होता रहा और वह सारी रात दरवाजा बन्द नहीं कर सका। सुबह हो गयी सूरज निकल आया।

आज उसे पता चला कि रात कितनी लम्बी होती है। वह दरवाजे की चाभी उसे बन्द करने के लिये इस्तेमाल ही नहीं कर सका। ऊपर से उसे रोज़ैला की गालियाँ भी सहनी पड़ीं।

उसने उसे राक्षस कहा। उसने कहा कि वह तो इस लायक भी नहीं था कि एक दरवाजा भी बन्द कर सके तो वह यह कैसे सोचता था कि वह प्यार की बोतल खोल पायेगा। वह बेचारा अपना गर्म दिमाग लिये वहाँ से चला गया।

अगली शाम उसने यही काम एक बैरन को दिया। उससे भी उसने एक हजार डकैट एक पोशाक लाने के लिये कहा तो उसने

---

86 Venus is the Greek Goddess of Love.

अपने सारे हीरे जवाहरात गिरवी रख कर यह सब इकट्ठा किया और जब शाम ने शर्म की काली चादर ओढ़ ली तो उनको ले कर रोज़ैला के घर आया।

उसने भी रोज़ैला को एक कीमती बिस्तर में लेटे हुए पाया। रोज़ैला ने उससे कहा कि वह मोमबत्ती बुझा दे तब उसके पास आये। बैरन ने अपनी तलवार रख दी अपने कपड़े उतार दिये और मोमबत्ती बुझाने लगा।

पर जितनी बार वह उसे बुझाता था वह उतनी ही बार और ज़्यादा तेज़ जल जाती थी। क्योंकि वह हवा जो उसके बुझाने के लिये उसके मुँह से निकलती थी धौंकनी काम करती थी।

इस तरह वह सारी रात मोमबत्ती बुझाता रहा और मोमबत्ती बुझ कर नहीं दी। सुबह को उसने उस मोमबत्ती को बहुत गालियाँ दीं जैसे कि उसके पहले वाले आदमी ने दरवाजे को दी थीं और अपने घर चला गया।

जब तीसरी रात आयी तो उसका तीसरा प्रेमी आया। वह भी एक ज्यू व्यापारी से ऊँची ब्याज की दर पर एक हजार डकैट और एक पोशाक ले कर आया था। बड़ी शान्ति से सीढ़ियों पर चढ़ते हुए वह रोज़ैला के कमरे में घुसा।

रोज़ैला ने कहा — "मैं अपने बालों में कंघी किये बिना नहीं सोऊँगी।"

कुलीन आदमी बोला — “लाओ मैं तुम्हारे बालों में कंघी कर दूँ।” कह कर उसने रोज़ैला को अपने सामने बैठ जाने और अपना सिर सीधा रखने के लिये कहा।

यह सोचते हुए कि वह न जाने कौन सा खजाना चुरा रहा है उसने हाथी दाँत की कंघी से उसके बाल सुलझाने शुरू कर दिये। पर वह उन्हें जितना ज़्यादा सुलझाने की कोशिश करता था रोज़ैला के बाल उतने ही उलझते जाते थे।

इस तरह उसने उसके बालों को सुलझाते उलझाते सारी रात निकाल दी। अब उसने उसके बालों की हालत कुछ ऐसी कर दी थी कि वे उसके काबू में ही नहीं आ रहे थे। वह बेचारा दीवार से अपना सिर फोड़ता ही रह गया।

जैसे ही सूरज निकला और चिड़ियों ने चहचहाना शुरू किया वह रोज़ैला की डाँट खा कर उसके घर से बाहर निकल आया।

लेकिन इस कुलीन आदमी ने एक दिन शहज़ादे के कमरे में जहाँ दूसरे कुलीन लोग अपने अपने दुखड़े रोया करते थे अपने साथ हुई घटना बतायी तो दूसरा बोला — “चुप। अगर अफ्रीका रोया तो इटली मुस्कुरा नहीं सकेगा। मैं खुद इस सुई के छेद में से गुजर चुका हूँ। इसलिये तसल्ली रखो क्योंकि अगर कइयों को एक ही परेशानी है तो यह भी कम से कम आधी खुशी है।”

इस पर तीसरा बोला — “हम सब एक ही कोलतार से लपेटे गये हैं इसलिये हम सब एक दूसरे से बिना किसी जलन के बात कर

सकते हैं। इस नीच लड़की ने हम सबके साथ एक ही तरह से व्यवहार किया है। हमारे बाल उलटी तरफ सहलाये हैं। पर यह ठीक नहीं है कि हम यह गोली बिना बदला लिये ऐसे ही निगल लें।"

सो सबने यह तय किया कि वे बादशाह के पास जायेंगे और जा कर उसे बतायेंगे कि उनके साथ क्या हुआ था। बादशाह ने उनकी शिकायत सुन कर रोज़ैला को बुलाया और उससे पूछा — "यह मेरे दरबारियों को बेवकूफ बनाना तुमने कहाँ से सीखा। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मैं तुम्हारा नाम खराब स्त्रियों की लिस्ट में लिख दूँगा।"

रोज़ैला के ऊपर इस बात का कोई असर नहीं पड़ा वह बोली — "जो कुछ भी मैंने किया है माई लौर्ड वह आपके एक दरबारी के मेरे साथ गलत करने के बदले में ही किया है। हालाँकि इस दुनियाँ कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो मुझे उस चोट के बदले में दी जा सके।"

बादशाह ने उससे कहा कि वह बताये कि उसके साथ क्या हुआ है। उसने बादशाह को बिना अपराधी का नाम बताये सारी कहानी बता दी कि उसने शाहज़ादे के लिये क्या क्या किया।

कैसे उसने उसे गुलामी से बाहर निकाला और मौत से बचाया। जादूगरों की पकड़ से छुड़ाया और सुरक्षित रूप से उसे उसके देश ले कर आयी और उसे इस सबका यह बदला मिला। उसने मेरी तरफ पीठ कर ली जो उसके ओहदे के बिल्कुल खिलाफ थी क्योंकि वह

भी एक बहुत ही ऊँचे खानदान की लड़की है और बादशाह की बेटी है।

बादशाह ने जैसे ही यह सुना तो उसका उचित आदर सत्कार किया और चबूतरे के नीचे बिठाया। फिर उसने उससे विनती की कि वह उस कृतघ्न का नाम बताये जिसने उसके साथ ऐसा व्यवहार किया है।

रोज़ैला ने अपनी उँगली में से एक अँगूठी निकाली और कहा — "जिस किसी की उँगली में यह अँगूठी आ जाये वही मेरा अपराधी है।" कह कर उसने वह अंगूठी सीधे शहज़ादे की उँगली की तरफ फेंक दी जो वहीं बैठा हुआ था।

उस अँगूठी की खासियत की वजह से शाहज़ादे को सब याद आ गया। उसने अपनी आँखें खोलीं। उसके दिमाग में खून ज़ोर ज़ोर से दौड़ने लगा और रोज़ैला याद आ गयी। वह उठा और उसने उठ कर रोज़ैला को गले लगा लिया।

वह केवल उसे गले लगा कर ही सन्तुष्ट नहीं था बल्कि वह उसे बार बार चूमे जा रहा था। बार बार उससे अपने किये की माफी माँगे जा रहा था कि उसने जो उसे तकलीफ पहुँचायी थी उसके लिये वह बहुत शर्मिन्दा था और माफी माँगे जा रहा था।

रोज़ैला बोली — "जो गलतियाँ अनजाने में होती है उनके लिये माफी माँगने की कोई जरूरत नहीं है। मुझे वह वजह मालूम हे जिसकी वजह से तुम रोज़ैला को भूल गये। मेरी माँ का दिया हुआ

शाप अभी मेरे दिमाग से निकला नहीं है इसलिये मैं तुम्हें माफ करती हूँ मुझे तुम पर दया आती है।" और फिर वह बहुत देर तक बोलती रही।

बादशाह ने जब देखा कि उसका बेटा रोज़ैला का कितना ज़्यादा ऋणी था तो उसने कहा कि वह उन दोनों की शादी कर देता है। उसने रोज़ैला को ईसाई बना लिया और दोनों की शादी कर दी। दोनों फिर किसी भी शादीशुदा जोड़े से भी बहुत सन्तुष्ट रहे।

12 3–10 तीन परियॉ[87]

सिसैला की सौतेली मॉ उससे बहुत बुरा व्यवहार करती है पर तीन परियॉ उससे बहुत अच्छा व्यवहार करती हैं। जलन से भरी उसकी सौतेली मॉ अपनी बेटी को उन परियों के पास भेजती है पर उसको वहॉ बहुत डॉट पड़ती है। इस वजह से वह अपनी सौतेली बेटी को सूअर चराने के लिये भेज देती है। एक बड़ा लौर्ड उससे प्रेम करने लग जाता है पर सौतेली मॉ अपनी चालाकी से अपनी बदसूरत बेटी उसको दे देती है।

फिर वह अपनी सौतेली बेटी को एक बर्तन में रखती है ताकि वह उसके ऊपर उबलता हुआ पानी डाल सके। लौर्ड को इस अत्याचार का पता चल जाता है तो वह सिसैला को बाहर निकाल लेता है और उस बदसूरत लड़की को उस बर्तन में रख देता है। मॉ आती है और उसके ऊपर उबलता हुआ पानी डाल देती है। जब उसे अपनी गलती का पता चलता है तो वह अपने आपको मार लेती है।

सिओमैटैला की कहानी की बहुत प्रशंसा हुई कि वह एक बहुत सुन्दर कहानी थी। घियाकोवा ने देखा कि अब सब लोग चुप हो गये हैं तो वह बोली — "अगर मैं राजकुमार और राजकुमारी जी का हुक्म मानने के लिये बाध्य नहीं होती जो गाड़ी को उठाने के लिये एक क्रेन का काम करता है तो मैं अपनी बेकार की बात यही खत्म करती हूॅ क्योंकि फिर मुझे सिओमैटैला के कहे गये मीठे शब्दों के मुकाबले में यह लगता है कि मेरे मुॅह से कुछ बहुत गलत निकल गया है।

[87] The Three Fairies. Tale No 12. (Day 3, Diversion 10) Told by Ghiacova

पर जैसी कि मेरे लौर्ड की इच्छा है मैं कोशिश करूँगी कि मैं एक ऐसी कहानी कहूँ जिसमें एक द्वेश भरी स्त्री को सजा मिली हो। जिसने अपनी सौतेली बेटी को नीचे धकेलने की बजाय उसे आसमान तक उठा दिया हो।

मार्चानीज़ के एक गाँव में कैरैडोनिया[88] नाम की एक विधवा रहती थी जो हर एक से बहुत जलती थी। वह अपने किसी पड़ोसी को प्यार नहीं करती थी और अगर किसी के बारे में कोई अच्छी बात सुन लेती थी तो वह उसके दिमाग में कड़वाहट बन कर घूमती रहती। वह किसी स्त्री या आदमी को खुश नहीं देख सकती थी और अगर देखती तो तुरन्त ही फट पड़ती।

इस स्त्री की एक बेटी थी जिसका नाम था ग्रैनीज़िया।[89] यह बहुत बदसूरत थी समुद्री भूत जैसी एक चौरस की गयी बोतल के डिजाइन जैसी।

उसके सिर में बहुत सारी जूँऐं थीं। उसके बाल हमेशा उलझे रहते। उसकी आँखें फूली हुई थीं। मोटी गोल सी नाक थी। दाँतों पर गन्दगी लगी रहती। डौगफिश जैसा मुँह था। बुलबुल जैसी गर्दन थी। उसके कन्धे गोल थे पतली लम्बी बाँहें थीं टेढ़ी टाँगें थीं। कुल मिला कर वह एक बदसूरत जादूगरनी लगती थी।

---

[88] A widow named Caradonia lived in a village of Marcianese.

[89] Grannizia

पर इस सबके बावजूद उसकी माँ सोचती थी कि वह बहुत सुन्दर थी। इतनी सुन्दर थी कि कोई भी चित्रकार उसका चित्र बनाना चाहेगा।

अब हुआ यह कि इस विधवा ने मीको ऐन्टुओनो नाम के एक आदमी से शादी कर ली जो पेन कुओकोलो[90] का रहने वाला था और एक बहुत अमीर किसान था। वह दो बार उस गाँव का मेयर भी चुना जा चुका था और उस गाँव के लोग उसकी बहुत इज़्ज़त करते थे।

मीको की एक बेटी थी सिसैला जो दुनियाँ भर में बहुत सुन्दर थी। उसकी आँखें ऐसी थी कि कोई भी उसकी तरफ खिंचा चला आता। उसका छोटा सा प्यारा सा मुँह था जिसे चूम कर कोई भी प्रेम के सागर में डूब जाता। उसका गला बहुत मीठा था। वह देखने बहुत अच्छी लगती थी प्यार करने वाली लगती थी। उसकी मुस्कान जादूभरी थी।

बस उसकी प्रशंसा बहुत हो गयी अब मेरे पास उसकी प्रशंसा के लिये और शब्द नहीं हैं। वह किसी भी चित्रकार का मौडल थी। वह उसमें कोई गलती नहीं निकाल सकता था।

लेकिन कैरैडोनिया जब उसकी सुन्दरता के मुकाबले में अपनी बेटी को सहता हुआ देखती तो वह उसे ऐसे लगती जेसे मखमल की गद्दी के पास रसोईघर को साफ करने वाला कोई कपड़ा हो या फिर

[90] Micco Antuono of Pane Cuocolo

किसी चिकनाई लगे पतीले का तला हो तो उसका दिल जलन से भर जाता।

उसकी यह जलन जल्दी ही फूट पड़ी। अब वह अपने आपको फॉसी तो नहीं लगा सकती थी सो उसने अपनी सौतेली बेटी के साथ खुले रूप से बुरा व्यवहार करना शुरू कर दिया।

वह अपनी बेटी को बहुत बढ़िया ऊनी स्कर्ट पहनाती जिसमें चारों तरफ फ़र लगा होता और शनील का ब्लाउज़ पहनाती और अपनी सौतेली बेटी को सबसे खराब कपड़े पहनाती। उसकी अपनी बेटी सबसे अच्छी सफेद डबलरोटी खाती और वह अपनी सौतेली बेटी को काली डबलरोटी के सख्त टुकड़े खाने को देती।

वह अपनी बेटी को भगवान की देन समझ कर बहुत सॅभाल कर रखती और सौतेली बेटी से कपड़े धोने से ले कर बर्तन धोने बिस्तर बनाने सूअरों को खाना खिलाने गधे की देखभाल करने और घर की सफाई तक का सारा काम कराती।

वह लड़की ये सब काम बड़े ढंग से करती और अपनी सौतेली मॉ को खुश करने के लिये थकान के बाद भी करती।

पर अपनी खुशकिस्मती से एक दिन यह दुखी लड़की अपने घर से थोड़ी दूर कूड़ा फेंकने के लिये एक ढालू जगह गयी। कूड़े की टोकरी बड़ी थी कूड़ा फेंकते समय वह उसके हाथ से फिसल गयी और नीचे गिर पड़ी।

वह वहाँ खड़ी देखती रह गयी कि वह उसे कैसे आसान से आसान तरीके से उठाये।

वह अभी खड़ी यह सोच ही रही थी कि एक बदसूरत जादूगर वहाँ आया। तुम उसे देख कर यह नहीं बता सकते कि वह असली ईसप था या फिर कोई नकली बदसूरत भिखारी।

असल में वह एक गुल[91] था उसके बाल साही[92] के बालों की तरह से खड़े हुए थे – काले और तने हुए। उनमें से हड्डियों की बदबू आ रही थी। उसका माथ झुर्रियों से भरा हुआ था जिससे ऐसा लग रहा था जैसे उस पर हल चलाया गया हो। उसकी भौंहें बहुत ही घनी और ऊबड़ खाबड़ थीं। उसकी आँखें टेढ़ी थीं और गड्ढे में धँसी हुई थीं।

उसके मुँह से झाग निकल रहे थे जहाँ से उसके दो जंगली सूअर के दाँत जैसे दाँत निकल रहे थे। उसकी छाती पर वड़े बड़े गूमड़े[93] पड़े हुए थे और उस पर इतने बाल थे जिनसे एक गद्दा भरा जा सकता था। वह कुबड़ा था गोल पेट वाला था। उसकी पतली पतली टाँगें थीं और टेढ़े पैर थे।

इस तरह उसकी शक्ल सूरत कुछ ऐसी थी कि तुम उसे देख कर डर के मारे अपना मुँह टेढ़ा मेढ़ा कर सकते थे। हालाँकि सिसैला ने

[91] Ghul or Rakshas or maneater

[92] Translated for the word "Hedgehog". See its picture above.

[93] Translated for the word "Bumps"

भी यह भयानक शक्ल देखी पर उसने अपने दिल से डर निकाल दिया और अपना दिल मजबूत कर के बोली — "ओ भले आदमी। क्या तुम मेरी टोकरी मुझे उठा दोगे जो मेरे हाथों से फिसल गयी है। भगवान करे कि तुम किसी अमीर लड़की से शादी कर सको।"

गुल बोला — "प्यारी बेटी। आओ नीचे आ जाओ और अपने आप ही ले लो।"

और वह अच्छी लड़की जड़ें और शाखाऐं पकड़ पकड़ कर नीचे उतर गयी। जब वह जमीन पर पहुँची तो वहाँ उसे तीन परियाँ मिलीं। तीनों एक दूसरी से ज़्यादा सुन्दर थी। उनके बाल सुनहरी थे। उनके चेहरे चौदहवीं के चाँद जैसे थे। उनकी आँखें बोलती थीं और उनके मुँह चुम्बन को आमन्त्रण देते थे।

और इससे ज़्यादा क्या। पतली लम्बी गर्दनें कोमल हाथ छोटे छोटे पैर और एक ऐसी शान जिसे तस्वीर में जड़ दिया गया हो। उन्होंने सिसैला का प्रेम से स्वागत किया। उन्होंने उसे चूमा सहलाया और फिर हाथ पकड़ कर कूड़े के ढेर के नीचे बने एक घर में ले गयीं जो किसी राजा के रहने के लायक था।

जैसे ही वे अन्दर पहुँचीं तो वे सब तुर्की के बने हुए कालीन पर बैठ गयीं। उस पर मखमल के तकिये रखे हुए थे। फिर उन्होंने सिसैला की तरफ सिर झुकाते हुए सिसैला से अपने बालों में कंघी करने के लिये कहा।

जब उसने भैंस के सींग की बनी कंघी से अपना काम खत्म कर लिया उनमें से एक परी बोली — "प्यारी बच्ची। तुझे मेरे सिर में क्या दिखायी देता है।"

सिसैला ने बड़ी शान्ति से कहा — "मुझे आपके सिर में छोटी छोटी जूँ और उनके अंडे, मोती और गार्नैट दिखायी दे रहे हैं।"

उसका यह अच्छा व्यवहार तीनों परियों को बहुत पसन्द आया। जब उसने उनके बालों की चोटी बना कर उनके कन्धों पर लटका दी तो वे उसे उस जादुई महल घुमाने ले गयीं।

वहाँ उसने बहुत सुन्दर सुन्दर मेजें देखीं जिन पर सुन्दर चेस्टनट के पेड़ खुदे हुए थे। वहाँ कुछ बक्से थे जो चमड़ा जड़े थे और जिनके कोने पीतल के थे। अखरोट की मेजें थीं जो इतनी चमकीली थीं कि उनमें अपनी शक्ल आसानी से देखी जा सकती थी।

वहाँ दो आलमारियाँ थीं जो बहुत चमक रही थीं। हरे रंग के मेजपोश थे जिन पर फूल कढ़े हुए थे। ऊँची पीठ वाली घोड़े के चमड़े की कुर्सियाँ थीं। और भी बहुत सारा ऐशो आराम का सामान था जिनको देख कर आश्चर्य होता था।

सिसैला तो घर की शानो शौकत देखती की देखती रह गयी पर जैसे और बदतमीज़ लोग व्यवहार करते हैं उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया। आखिर वे उसे एक कपड़ों की आलमारी के पास ले गयीं।

वहाँ उन्होंने उसको स्पेन का कीमती कमोरा[94] दिखाया। लम्बी पोशाकें दिखायीं जिनकी चौड़ी चौड़ी बाँहें थीं और वे सोने से कढ़ी थीं।

कैटैलूफो की बिस्तर वाली चादरें दिखायीं। टफ़ैटा के गद्दे दिखाये। असली फूलों के तकिये दिखाये और आधे चाँद की और साँप की जीभ की शक्ल के टोटके दिखाये।

सफेद और नीले क्रिस्टल के खिलौने दिखाये। गेहूँ की बाल और लिली की शक्ल के रत्न दिखाये। सिर पर पहनने वाले पंख दिखाये। मीने और चाँदी में जड़े गार्नेट के गहने दिखाये। और हजारों और चीज़ें दिखायीं।

फिर उन्होंने सिसैला से कहा कि वहाँ से जो जो जितना जितना चाहे ले सकती है। पर सिसैला ने जो तेल की तरह नम्र थी सब कीमती चीज़ों को छोड़ कर एक बहुत ही सस्ती सी स्कर्ट ले ली।

परियाँ उसे देख रही थीं वे बोलीं — "प्रिय तुम किस दरवाजे से बाहर जाओगी।"

सिसैला बोली कि वह घुड़साल के दरवाजे से ही जाना पसन्द करेगी। यह सुन कर परियों ने उसे गले लगा लिया और चूमते हुए उसके पुराने कपड़े उतार कर उसको बहुत कीमती कपड़े पहना दिये जिन पर सोने का काम हो रहा था।

---

[94] Camorra – a rich dress made with a special cloth of Spain.

उन्होंने उसको एक स्कौटिश टोप भी पहना दिया। उसके बाल एक रिबन से बॉध दिये। तब वे उसको एक बड़े से दरवाजे की तरफ ले गयीं जो ठोस सोने का बना था और जिसमें कारबन्किल जड़े हुए थे।

वहॉ पहुँच कर उन्होंने उससे कहा — "जाओ सिसैला। भगवान करे तुम सुखी सुखी शादी करो। अपने रास्ते जाओ और जब तुम इस जगह से बाहर पहुँच जाओ तो ऊपर देखना कि वहॉ क्या है।"

लड़की ने झुक कर उनसे विदा ली और अपने रास्ते चल दी। जब वह दरवाजे से बाहर आयी तो उसने ऊपर की तरफ देखा तो एक सुनहरा सितारा उसके माथे पर आ कर गिर गया जो देखने में बहुत सुन्दर लग रहा था।

घर आ कर वह अपनी सौतेली मॉ के सामने खड़ी हुई और उसे सब बताया जो कुछ भी उसके साथ हुआ था।

पर उस जलन भरी स्त्री के लिये यह कहानी कोई कहानी नहीं थी उसके लिये तो यह कहानी ऐसी थी जैसे किसी ने उसके गले में रस्सी बॉध दी हो। उसे तब तक चैन नहीं पड़ा जब तक उसने यह पता नहीं कर लिया कि वे तीन परियॉ कहॉ रहती थीं।

और फिर एक दिन उसने अपनी बदसूरत बेटी को वहॉ भेजा। उसकी बेटी वहॉ आयी तो उसे वे तीनों परियॉ मिल गयीं। वे परियॉ उसे भी महल के अन्दर ले गयीं और उससे अपने बालों में कंघी करने के लिये कहा।

और जब उन्होंने उससे पूछा कि उसने वहाँ क्या देखा तो वह बोली — "बीन जितनी बड़ी जूँऐं और उनके अंडे इतने बड़े जितनी कि एक चम्मच।"

उसके इस झूठ बोलने से परियाँ उससे नाराज हो गयीं पर उन्होंने अपने गुस्से को छिपा लिया। जब वे उसे अपने कीमती कमरे दिखाने के लिये ले गयीं तो उन्होंने उससे कुछ भी ले लेने के लिये कहा तो ग्रैनैज़िया ने तो उनकी उँगली पकड़ते पकड़ते उनका पूरा हाथ ही पकड़ लिया।

उसने उनके कपड़ों की आलमारी में से अपने लिये सबसे अच्छे कपड़े माँग लिये। परियों ने उसकी यह नीयत देखते हुए भी कि उसने अपने हाथों में सबसे ज़्यादा अच्छी चीज़ें भर रखी थीं उससे कुछ नहीं कहा।

बाद में उन्होंने उससे पूछा कि वह किस दरवाजे से जाना पसन्द करेगी – सोने के दरवाजे से या फिर बागीचे के दरवाजे से। उसने बिल्कुल बेशर्मी से कहा — "जो भी दरवाजा सबसे अच्छा हो।"

परियों ने जब उस किसी के काम की नहीं के यह विचार सुने तो वे चुप ही रहीं और यह कह कर उसे विदा किया — "जब तुम घुड़साल के दरवाजे पर आ जाओ तो अपना सिर उठा कर ऊपर देखना तुम्हें कुछ दिखायी देगा।"

वहा वहाँ से गोबर में से हो कर गयी। जब वह घुड़साल के दरवाजे से बाहर निकली तो उसने ऊपर देखा तो एक गधे के

अंडकोष उसके माथे पर आ कर गिर गये जो उसकी खाल से चिपक गये। शायद यही उसकी माँ उसके चेहरे पर देखना भी चाहती थी।

इस सुन्दर भेंट के साथ वह कैरैडोनिया के पास लौट आयी। जब कैरैडोनिया ने देखा कि उसके साथ क्या हुआ है तो वह तो किसी कुतिया की तरह से गुस्सा हो गयी जो अपने बच्चों को देख रही हो।

उसने सिसैला से उसके कपड़े उतारने के लिये कहा और उसके शरीर का बीच का और पीछे का हिस्सा एक फटे कपड़े से ढक कर उसको सूअरों की देखभाल के लिये भेज दिया। उसके उतारे हुए कपड़े उसने अपनी बेटी को पहना दिये।

सिसैला बड़े धीरज के साथ अपनी इस अभागी ज़िन्दगी बिताने चली गयी। जिस मुँह को प्यार मिलना चाहिये था वह मुँह अब सूअरों को "ऐह ऐह" कर रहा था। एक सुन्दर लड़की सूअरों में खो गयी थी सूअरों में रह रही थी।

उसके हाथ जो सैंकड़ों हथियार थामने के काबिल थे अब एक डंडी से सैंकड़ों सूअरों को काबू में कर रहे थे। उस नीच को सैंकड़ों बद्दुआ लगे जिसने उसे इस जंगल में भेजा जहाँ पेड़ों के साये में शान्ति और डर ने धूप से बचने के लिये शरण ले रखी थी।

पर भगवान जहाँ अक्खड़ों को दबा कर रखता है वहीं नम्र लोगों को ऊपर भी उठाता है। उसने कुओसीमो[95] नाम का एक बहुत बड़ा लौर्ड उसके लिये भेज दिया। जब उसने सूअरों के बीच एक रत्न देखा बादलों के बीच में सूरज देखा तो उसका मन उसके प्रेम में उलझ गया।

उसने तुरन्त ही अपने लोगों को उसके पास यह जानने के लिये भेजा कि वे पता लगा कर लायें कि वह कौन थी कहाँ रहती थी। उसने सिसैला की सौतेली माँ से बात की और उसे शादी के लिये माँगा। बदले में उसने उसे सौ हजार डकैट देने का वायदा किया।

यह सुन कर कैरैडोनिया की तो आँखें खुली की खुली रह गयीं। उसने सोचा कि यह तो उसकी बेटी के लिये बहुत अच्छा रहेगा सो उसने उससे रात को आने के लिये कहा। उसने सोचा कि तब तक वह अपने रिश्तेदारों को भी बुला लेगी।

कुओसीमो इस बात से बहुत खुश और सन्तुष्ट था। घर जा कर वह जब तक सूरज अपने चाँदी के पलंग पर जा कर सोये और चाँद निकले उसे ऐसा लगा जैसे उसे निकलने में हजारों साल लग गये हों।

इस बीच कैरैडोनिया ने सिसैला को एक बक्से में बन्द कर दिया उसने सोचा कि वह उसके ऊपर उबलता पानी फेंक कर उसे मार देगी। क्योंकि उसने सूअरों को छोड़ दिया था तो वह उसे सूअर की

---

[95] Cuosimo

तरह मार देना चाहती थी पर शाम होने को आयी और आसमान भेड़िये की तरह मुँह खोले खड़ा था।

उधर कुओसीमो सिसैलो को अपनी बाँहों में लेने के लिये बेचैन हो रहा था सो वह सिसैलो के घर चल दिया।

यही समय तो तय हुआ था जब मैं अपने प्यार के पेड़ के रस का स्वाद लूँगा। यही वह समय है जब मैं अपना वह छिपा हुआ खजाना निकालूँगा जिसे मेरी किस्मत ने मुझे दिया है। सो ओ कुओसीमो देर मत कर जल्दी भाग। मैं तेरे साये में थोड़ी सी ठंडक पा सकूँगा।

और यह कहता हुआ वह कैरैडोनिया के घर आ पहुँचा। पर वहाँ तो उसे सिसैला की बजाय ग्रैनीज़िया मिली एक सुन्दर चिड़िया की बजाय एक उल्लू मिला गुलाब की बजाय एक जंगली पेड़ मिला।

हालाँकि उसने सिसैला के कपड़े पहन रखे थे जिसके बारे में यह कहा जा सकता था कि "ओ लकड़ी के टुकड़े तू अच्छे कपड़े पहन ले तो तू भी बैरन जैसा लगेगा।" फिर भी वह सुनहरे जाल में फँसी एक जूँ लग रही थी।

उसकी माँ का किया हुआ कोई भी श्रंगार उसकी भौंहों के बीच की सुन्दरता आँखों की सूजन झुर्री पड़े चेहरे गन्दे दाँत गूमड़े पड़ी गरदन और चौरस पैरों को छिपा नहीं पा रहा था। और सबसे ज़्यादा तो यह कि उसमें से बदबू आ रही थी।

दुलहे ने जब यह बदसूरत जीव देखा तो वह यह जान ही नहीं सका कि उसे क्या हो गया है। वह पीछे की तरफ हट गया और अपने मन में सोचने लगा "क्या मैं जाग रहा हूँ या सपना देख रहा हूँ या मेरी आँखों पर परदा पड़ गया है या मैं किसी दूसरी तरफ देख रहा हूँ।

क्या मैं मैं हूँ या मैं नहीं हूँ। ओ अभागे कुओसीमो तू क्या देख रहा है। यह वह चेहरा तो नहीं है जिसने मुझे तुरन्त ही अपनी ओर खींच लिया था। यह वह शक्ल तो नहीं है जो मेरे दिल में खुद गयी थी।

ओ मेरी किस्मत यह सब क्या है। वह सुन्दरता कहाँ है। वह काँटा कहाँ है जिसने मुझे पकड़ लिया था। वह क्रेन कहाँ है जिसने मुझे उठा लिया था। वह तीर कहाँ है जो मेरे दिल में आ कर लग गया था।

मुझे मालूम था कि मोमबत्ती की रोशनी में न तो स्त्रियाँ और न ही कपड़ा खरीदना चाहिये पर यह सौदा तो मैंने सूरज की रोशनी में किया था। अफसोस कि इस सुबह का सोना पीतल में बदल गया हीरा काँच में बदल गया दाढ़ी काँटों में बदल गयी।"

वह ऐसा ऐसा कुछ कुछ बोलता रहा और अपने दाँत पीसता रहा। आखिर जरूरत से मजबूर हो कर उसने ग्रैनीज़िया को एक चुम्बन दिया वह भी ऐसा चुम्बन जैसे वह कोई बहुत ही पुराना फूलदान चूम रहा हो।

वह उसके पास तक गया और उसको चूमने से पहले उसने तीन बार अपना मुँह उसके पास से हटाया। आखिरी बार जब वह अपना मुँह उसके मुँह के पास ले गया तो उसे ऐसा लगा जैसे वह शाम को चिआजा के समुद्र के किनारे पर खड़ा हो जहाँ लड़कियाँ अरबी खुशबू से अलग कोई दूसरी खुशबू लगा कर वहाँ आती हों। पर जब भगवान को उसे जवान दिखाना हो तो उसने उसकी सफेद दाढ़ी काली रंग दी हो।

उसका घर दूर था सो उसे उसको बीच में ही पेन कुओकोलो में एक घर में ले जाना पड़ा। उसने वह रात वहाँ गुजारी। कौन बता सकता है कि वह रात किसकी ज़्यादा बुरी थी।

हालाँकि गर्मियों के दिन थे सो रात भी आठ घंटे से ज़्यादा की नहीं थी पर उस दिन वह रात उसे जाड़ों की सबसे ज़्यादा लम्बी रात लगी। दुलहिन को ठंड लग गयी थी सो वह छींकती रही खाँसती रही कराहती रही।

पर कुओसीमो खर्राटे मारने का बहाना बना कर वहाँ के सख्त बिस्तरे पर उससे जितना दूर लेट सका लेटा रहा। वह कोई बदमज़गी का दृश्य पैदा करना नहीं चाहता था।

कितनी बार दुलहा सूरज को उसके इतना धीरे निकलने के लिये कोसता रहा क्योंकि उसी की वजह से उसे इस हाल में इतनी देर तक पड़ा रहना पड़ा। और न जाने कितनी बार वह प्रार्थना करता

रहा कि यह रात दुलहिन की गर्दन क्यों नहीं तोड़ देती या सितारे डूब क्यों नहीं जाते ताकि उसे वहाँ उतनी देर तक न लेटना पड़े।

पर जैसे ही दिन निकला और मुर्गे और बतखें वहाँ से भागे वह बिस्तर से कूदा अपनी ब्रीचेज़ पहनी और कैरैडोनिया के घर की तरफ उसकी बेटी को बुरा भला कहने के लिये और झाड़ू के डंडे से मारने के लिये भाग गया।

वह जब उसके घर पहुँचा तो वह वहाँ नहीं थी क्योंकि वह लकड़ी इकट्ठा करने के लिये जंगल गयी थी। वहाँ से आ कर वह पानी उबालती ताकि वह उसे बाकुस के मकबरे में बन्द सिसैला के ऊपर फेंक सके जबकि वह तो प्यार की नाव में बैठने के लायक थी।

जब कुओसीमो कैरैडोनिया को ढूँढ रहा था और वह उसे नहीं मिली तो वह ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा "कहाँ है तू। कहाँ है।"

तभी एक बिल्ली चिल्लायी "म्याऊँ म्याऊँ। तेरी पत्नी तो बक्से के अन्दर है।"

सो कुओसीमो बक्से के पास गया। वहाँ उसने बहुत ही धीमी धीमी रोने और सिसकने की आवाज सुनी। उसने पास की अँगीठी के पास रखी कुल्हाड़ी उठायी और उससे बक्सा तोड़ डाला। लो वहाँ तो उसे ऐसा लगा जैसे कि परदा उठ गया हो और उसे एक देवी मिल गयी हो।

मुझे नहीं मालूम कि यह दृश्य देख कर वह मर क्यों नहीं गया पर दुलहा तो बस खड़ा रहा खड़ रहा और उसकी तरफ देखता रहा जैसे किसी ने कोई बहुत ही छोटा सा साधु देख लिया हो।

और जब वह अपने आपे में आया तो दौड़ कर उसने उसे गले लगा लिया और उससे पूछा — "इस गन्दी जगह तुम्हें किसने बन्द किया ओ मेरे दिल के रत्न। किसने तुम्हें मुझसे चुरा लिया था ओ मेरी ज़िन्दगी की आशा।

यह क्या मामला है कि एक फाख्ता इस लकड़ी के पिंजरे में। और एक शिकारी चिड़िया मेरी बगल में। यह कैसे हुआ। बोलो कुछ तो बोलो। मुझे थोड़ी तसल्ली तो दो।"

तब सिसैला ने उसे सारी बातें बतायीं सिवाय एक बात के कि जबसे उसकी सौतेली मॉ उस घर में आयी है तभी से उसे उस घर में कितना दुख सहना पड़ा है। यहॉ तक कि उसको मारने के लिये कैलैडोनिया ने उसे इस बक्से में बन्द कर दिया था।

यह सुन कर कुओसीमो ने उससे ठीक से कपड़े पहन कर दरवाजे के पीछे छिप जाने के लिये कहा। फिर उसने बक्सा वैसा का वैसा ही कर दिया और ग्रैनैज़िया को बुला भेजा।

उसने उसे बक्से में धकेल कर कहा "मेमने की तरह अब तुम चुपचाप यहीं बैठी रहो क्योंकि मैं अब तुम्हारे ऊपर जादू डालने वाला हूॅ ताकि तुम्हें कोई बुरी नजर न लगे।"

फिर उसने बक्सा ठीक से बन्द किया अपनी पत्नी को गले लगाया और उसे घोड़े पर बिठा कर अपने राज्य पास्करोला[96] की तरफ चल पड़ा।

कुछ देर बाद ही कैरैडोनिया लकड़ी का एक बड़ा सा गट्ठर लिये आ पहुँची। उससे उसने एक बहुत बड़ी आग जलायी और उस पर एक बहुत बड़ा बर्तन पानी से भर कर उबलने के लिये रख दिया। जब पानी उबल गया उसने वह पानी उस बक्से में डाल दिया जिसमें अब उसकी अपनी बेटी बैठी थी।

इस तरह उसने अपनी बेटी को जला दिया जो सारे समय अपने दाँत भींचे बैठी रही। उसकी खाल ऊपर को ऐसे उठती रही जैसे साँप जब अपनी केंचुली उतारता है तब वह उठती है। और जब उसको लगा कि अब सिसैला मर गयी होगी तो उसने वह बक्सा खोल दिया।

उस दृश्य को देख कर उसका खून उसकी नसों में बिल्कुल ही जम गया। एक बेरहम माँ ने अपनी ही बेटी को मार डाला। उसने अपने बाल नोच डाले वह अपना चेहरा और छाती पीटने लगी। अपना सिर दीवार पर मारने लगी। पैर पटके रोयी चिल्लायी।

यह सब सुन कर सारे गाँव वाले इकट्ठे हो गये कि वहाँ क्या हो गया था। उस समय कोई उसे किसी तरह की कोई तसल्ली नहीं दे

[96] Pascarola – name of the kingdom of Cuosimo

सका। कोई सलाह उसका मन मुलायम बना सकी। वह एक कुॅए की तरफ दौड़ गयी और जा कर उसमें कूद गयी।

इस तरह वह साबित कर गयी —

जो आसमान पर थूकता है उसका थूक उसके चेहरे पर ही आ कर पड़ता है

कहानी खत्म हो गयी थी। राजकुमार के हुक्म के अनुसार सबके सामने जियालेज़ रसोइया और कोला जैकोपो जो शराब के लिये जिम्मेदार था वहॉ आ पहुॅचे।

13 4–2 दो भाई[97]

मरूचो और पामीरो दोनों भाई हैं। एक अमीर है बदमाश है और बुरा है दूसरा गरीब है पर गुण वाला है। कई उतार चढ़ाव के बाद वे मिलते है पर गरीब भाई को भगा दिया जाता है। कुछ समय बाद अमीर भाई गरीब हो जाता है और फाँसी के फन्दे तक पहुँच जाता है। पर किसी तरह से निर्दोष पाया जाता है और अपने गरीब भाई द्वारा बचा लिया जाता है जो अब अमीर हो चुका था और बैरन बन चुका था। वह अपनी अच्छी किस्मत का हिस्सा उसे भी देता है।

मिनिक अनीलो की कहानी से राजकुमार और राजकुमारी को बहुत सन्तोष मिला। उन्होंने चुहिया को हजारों आशीर्वाद दिये जिसकी वजह से गरीब आदमी को अपना पत्थर फिर से वापस मिल गया। उन्हें इस बात की भी खुशी हुई कि एक अँगूठी के लिये जादूगर की गर्दन टूट गयी।[98]

अब सीका अपनी कहानी कहने के लिये तैयार बैठ गयी और उसने कुछ इस तरह से अपनी चुप्पी तोड़ी —

बदकिस्मती से बचने का गुण से बढ़ कर कोई उपाय नहीं है। वह आदमी को सारी बदकिस्मतियों से बचाते हैं। वे सारी बरबादियों से रक्षा करते हैं और सब तूफानों में बन्दरगाह का काम करते हैं।

वे तुम्हें आग से बचाते हैं तुम्हारी हर जरूरत में मदद करते हैं तूफानों से बचाते हैं हर परेशानी से निकल आने में मदद करते हैं

[97] The Two Brothers. Tale No 13. (Day 4, Diversion 2) Told by Cecca

[98] Read this story No 20 (4-1) “The Stone in the Cock’s Head” in “Pentamerone 17-32” by Sushma Gupta.

और मरने के समय शान्ति देते हैं। जैसा कि आप सब इस कहानी से जानेंगे जो मैं आप सबको अभी सुनाने जा रही हूँ।

एक बार की बात है कि एक पिता था। उसके दो बेटे थे – मारकूचो और पामीरो।[99] उसकी मौत का समय आ गया था सो उसने अपनी ज़िन्दगी की हिसाब की किताब फाड़ डाली और अपने बेटों को बुलाया और उनसे कहा —

“ओ मेरे प्यारे बच्चों। मेरी मौत का समय पास आ रहा है। भगवान के राज्य के कानून के खिलाफ तो मैं जा नहीं सकता। मैं इस जमीन का बहुत आभारी हूँ और तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ। मुझे यह दुनियाँ तुम्हें कुछ मीठी यादों को छोड़े बिना नहीं छोड़नी चाहिये ताकि तुम लोग ज़िन्दगी की परेशानियों में आसानी से अपनी ज़िन्दगी की नाव खे सको और पार लग सको।

अब तुम अपने कान ठीक से खोल कर मेरी बात सुनो। अगर तुम्हें कुछ ऐसा लगे कि जो कुछ मैंने तुम्हें दिया वह तुम्हारे काम का नहीं है फिर भी यह एक खजाना है जिसे तुमसे कोई डाकू नहीं छीन सकता। एक ऐसा मकान है जो भूचाल में भी नहीं टूट सकता। एक ऐसी चीज़ है जिसे तुमसे कोई दुश्मन नहीं छीन सकता।

पहली बात हमेशा भगवान से डरना क्योंकि सारी चीज़ें भगवान से ही आती हैं। जो आदमी गलती करता है उसके लिये रास्ता मुश्किल हो जाता है। कभी आलस नहीं करना। जैसे सूअर

---

[99] Marcuccio and Palmiero

सूअरखाने में बढ़ते हैं ऐसे बढ़ना। जो अपना ही घोड़ा पका कर खाता है उसे अच्छा सईस नहीं कहा जा सकता।

मुश्किलों में भी धीरज रखना क्योंकि जो दूसरों के लिये काम करता है वह बस अपने लिये ही खाता है। जब तुम्हारे पास पैसा हो तो कुछ बचत जरूर करना जो बचाता है उसी को फायदा भी होता है। एक एक पैसा बच कर ही एक डकैट बनता है। जो कुछ बचा कर रख देता है वह उसी को मिलता है।

कोई ऐसा काम नहीं करना जिसके लिये तुम्हें बाद में शर्मिन्दगी उठानी पड़े। घर वही अच्छा होता है जिसमें दोस्त और रिश्तेदार रहते हैं। वह घर दुखी होता है जो अकेला होता है। जिसके पास पैसा होता है वही पैसा बनाता है। जब अनुकूल हवाऐं होती हैं तभी जहाज़ ठीक से अपने रास्ते पर जाता है। जिसके पास पैसा नहीं होता वह राक्षस के समान होता है।

इसलिये ओ मेरे मेहरबान दोस्तो। क्योंकि तुम्हारे पास पैसा है आमदनी है तो तब तक तुम अपने आपको बढ़ाओ जितना बढ़ा सकते हो बढ़ाओ। जब तक तुम चबा सकते हो अपने दॉतों का इस्तेमाल करो क्योंकि एक छोटा सा रसोईघर घर को बहुत बड़ा बना देता है।

बहुत ज़्यादा बात नहीं करना क्योंकि जीभ के अपनी तो कोई हड्डी होती नहीं पर फिर भी वह हड्डी तोड़ सकती ही। अगर तुम शान्ति से रहना चाहते हो तो सुनो और देखो तो सब पर चुप रहो।

जितना तुम देख सकते हो देखो जितना तुम सुन सकते हो सुनो पर अपने इस छोटे से मॉस के टुकड़े यानी जीभ को कम से कम हिलाओ।

अगर तुम्हारे पास कपड़े की गर्मी है तो तुम्हें कोई चीज़ नुकसान नहीं पहुँचा सकती। जो बहुत बोलते हैं वे अक्सर भारी गलतियाँ करते हैं।

थोड़े में सन्तुष्ट रहो क्योंकि बीन्स खाना अच्छा है क्योंकि वे ज़्यादा दिनों तक चलती है बजाय मिठाई खाने के जो जल्दी ही खत्म हो जाती है। थोड़ा खुश रहना ज़्यादा अच्छा है बजाय इसके कि हमेशा के लिये रोते रहो।

जो मॉस नहीं खा सकते उन्हें मॉस का पानी ही पी कर सन्तुष्ट रहना चाहिये। जो कुछ और नहीं कर सकता उसे अपनी पत्नी के साथ रहना चाहिये। जो होना है वह तो होगा। अपनी कमियों को जिस तरीके से पूरा कर सकते हो करो। जो मॉस नहीं खा सकता उसे हड्डी चबा कर ही सन्तोष कर लेना चाहिये।

अपनी पत्नियों के साथ अक्सर प्रेम जताते रहना चाहिये और उन पर खर्च करते रहना चाहिये। तुम मुझे बताओ कि तुम किसके साथ उठते बैठते हो तो मैं तुम्हें बता दूँगा कि तुम क्या करते हो।

जो किसी लँगड़े के साथ चलता है वह आखीर में लँगड़े जैसा ही चलने लग जाता है। जो कुत्तों के साथ सोता है कभी न कभी उसके शरीर पर भी कीड़े हो ही जाते हैं।

अगर तुम किसी दुष्ट को अपनी कोई चीज़ देते हो तो बस उसे फिर जाने दो क्योंकि बुरी सोहबत तुम्हें फाँसी तक पहुँचा सकती है।

पहले सोचो फिर करो क्योंकि बैलों के भाग जाने के बाद तबेले का दरवाजा बन्द करना तो सरासर बेवकूफी है। जब तक बोतल भरी हुई है तब तक उसमें से जितनी इच्छा हो निकाल लो पर जब वह खाली हो जाती है तब तुम उसमें से कुछ नहीं निकाल सकते।

पहले चबाओ फिर उसे खाओ क्योंकि बिल्ली जल्दी में अपने बच्चों को जब वे अन्धे होते हैं तभी निकाल लाती है। जो आदमी धीरे धीरे काम करता है वह आदमी अपना काम अच्छी तरह से पूरा करता है।

सब झगड़ों को खत्म कर देना चाहिये। जो नौजवान मनमानी करते हों उनके साथ नहीं बैठना चाहिये खास कर के उनके साथ हर काम नहीं करना चाहिये। एक घोड़ा जो ठोकर मार सकता है उसे जो वह देता है उससे ज़्यादा मिलता है।

जो किसी को काँटे से घायल करता है वह तलवार से मरता है। फाँसी अभागे लोगों के लिये बनायी गयी है। घमंड कर के कभी अपने आपको बेवकूफ मत बनवाओ। मेज पर सफेद मेजपोश के अलावा कुछ और चीज़ें की भी जरूरत होती है।

हमेशा नम्र रहो और अपने आपको सुधारने की कोशिश करो। धुँए से भरा मकान ठीक नहीं होता। एक अच्छा अलकैमिस्ट वही

होता है जो राख में से भी सब कुछ निकाल लेता है ताकि वह बाद में धुँआ न करे।

हर आदमी को यह हमेशा याद रखना चाहिये कि आखीर में उसे धूल में ही मिलना है सो उसे घमंड नहीं करना है ताकि उसके अपने बारे में किये गये विचारों से धुआँ न उठे। दूसरों के साथ कोई काम करने का मतलब है अपनी उन्नति में बाधा डालना।

नैपिल्स के रहने वालों के लिये यही ठीक है कि वह खीरों पर टैक्स लगायें और नमक बर्तन में रखें। बड़े लोगों से जा कर मत मिलो दरबार में काम करने की बजाय अपना जाल फेंको।

बोतल की शराब बहुत अच्छी होती है जो सुबह में स्वाददार होती है पर शाम को वह खट्टी हो जाती है। उससे तुम केवल अच्छे शब्द और सड़े हुए सेब ही पा सकते हो।

जहाँ तुम्हारी सेवाओं की जरूरत नहीं होती वहाँ तुम्हारी होशियारी बेकार हो जाती है। तुम्हारी आशाऐं बिखर जाती हैं। तुम्हारी मेहनत के लिये तुम्हारे प्रति कोई सहानुभूति नहीं दिखाता। तुम बिना सुस्ताए ही भागते रहते हो। बिना आराम के सोते रहते हो। अँधेरे में ही सारे काम करते रहते हो और बिना स्वाद लिये ही खाते रहते हो।

एक अमीर आदमी जो गरीब हो गया हो, एक किसान जो अमीर हो गया हो, एक निराश भिखारी, शाबाशी मिला हुआ नौकर, एक अज्ञानी राजकुमार, एक किराये का जज, एक द्वेष भरी स्त्री,

बिना दाढ़ी वाला आदमी, शान्त नदी, धुऑ निकलती चिमनी, बुरा पड़ोसी, एक बच्चा जो हमेशा रोता रहता हो और एक द्वेष भरा आदमी – इन सबसे बच कर रहना।

उनके बारे में सोचना भी नहीं जिनकी ज़िन्दगी का हिस्सा चालाकी हो, जिसके दिमाग में नमक भरा हो, जिसके अक्ल की दाढ़ें निकल आयी हों, जो कम सुनता हो, क्योंकि अच्छे घोड़े के लिये जीन की कोई जरूरत नहीं होती।

मैं तुम्हें हजारों बातें और बता देता पर मौत मुझ पर छाती जा रही है मेरी सॉस रुकती जा रही है।"

इतना कह कर उसमें अब केवल इतनी ही ताकत रही कि वह अपना हाथ उठा कर उन्हें अपना आशीर्वाद ही दे सके। इसके बाद उसकी ज़िन्दगी का जहाज़ दुनियॉ की सारी चिन्ताऐं छोड़ कर बन्दरगाह पर लग गया।

जैसे ही पिता चल बसे मारकूचो जिसने पिता की हर बात अपने दिमाग में रख ली थी स्कूल पढ़ने चला गया विद्यार्थियों से बात करने और दूसरे विषयों पर बात करने चला गया। सो कुछ ही समय में वह उस देश का एक बहुत ही अक्लमन्द आदमी बन गया।

पर जैसे गरीबी गुणों से चिपक जाती है और बुद्धि की देवी मिनर्वा उसकी अच्छी किस्मत का सब कुछ छीन लेती है यह आदमी भी बहुत गरीब रहा पर यह दिल का साफ था और इसकी बहुत सारी इच्छाऐं थीं।

अक्सर उसे अपने घर में खाली बर्तन भरे पड़े दिखायी देते। वह कड़ाही चाटने के लिये ललकता रहता। वह सलाहों से थक गया था। सहायता माँगते माँगते परेशान हो गया था और हमेशा अपने को भूखा ही पाता।

पामीरो के साथ इसका उलटा था। उसने बहुत पीना शुरू कर दिया था। जुआ खेलना और सरायों में जाना शुरू कर दिया था। बिना किसी गुण के वह दुनियाँ में बहुत ऊँचा हो गया था। अपनी चालाकियों से उसने अपने नीचे कई लोग रख लिये थे।

जब मारकूचो यह सब देखता तो उसको लगता कि पिता की सलाह मान कर उसने बहुत बड़ी गलती कर दी है और गलत रास्ता पकड़ लिया है। उसकी भेंट ने उसे कुछ अच्छा नहीं दिया है बल्कि शुभ सींग[100] ने उसे और उल्टा गरीब कर दिया है।

उसके न्यायपूर्ण व्यवहार ने उसके थैले नहीं भरे हैं जबकि पामीरो ने हड्डी का आनन्द लेते हुए भी बहुत सारा माँस कमा लिया है और अपने हाथों से खेलते हुए अपना पेट भर लिया है।

आखिर जरूरत की वजह से वह अपने भाई के पास गया और उससे कहा कि क्योंकि भगवान ने उसको सफेद चिड़िया का बच्चा

[100] Translated for the word “Cornucopia”. Cornucopia is an ornamental container which looks like aram’s horn overflowing with flowers, vegetables and fruits – a symbol of plentifulness. See its picture above.

बना दिया तो उसको यह भी तो याद रखना चाहिये कि वह भी तो उसी का खून और माँस है। दोनों एक ही जगह से आये हैं।

अब पामीरो तो बहुत अमीर था सो वह बहुत कंजूस हो गया था सो वह उससे बोला — "ओ भाई। जो पढ़ाई के पीछे जायेगा और अपने पिता की सलाह के पीछे जायेगा और जिसने मेरे साथ नहीं खेला और बात की वह यहाँ से चला जाये और जा कर अपनी किताबें चाटे और मुझे मेरी बदकिस्मती के साथ अकेला छोड़ दे क्योंकि मैं तो तुझे नमक देने के लायक भी नहीं हूँ। इसके अलावा मुझे तो इन थोड़े से ताँबे के सिक्के कमाने के लिये बहुत मेहनत करनी होती है।

तू तो अब बड़ा हो गया है अपने फैसले अपने आ कर सकता है जो यह नहीं जानता कि कैसे जीना चाहिये तो यह तो उसके लिये और भी बुरा है। हर आदमी अपने लिये है बस भगवान ही सबके लिये है। अगर तेरे पास पैसा है तो उसकी इज़्ज़त कर अगर तू भूखा है तो अपनी टाँग खा और अगर तू प्यासा है तो अपनी उँगली चबा।"

और और भी बहुत कुछ कह कर उसने उसकी तरफ से मुँह मोड़ लिया। यह सब सुन कर और अपने ही भाई को इस तरह अपनी तरफ से मुँह मोड़ते देख कर मारकूचो बहुत निराश हो गया। उसने अपनी आत्मा को मजबूत किया और तेज़ पानी से आत्मा के सोने को शरीर की मिट्टी से अलग करने का निश्चय किया।

यह सोच कर वह एक बड़े ऊँचे पहाड़ की तरफ चल दिया जो एक जासूस की तरह से हवा में यह देखने के लिये ऊँचा खड़ा था कि जमीन पर क्या हो रहा है या फिर वह पहाड़ों के सुलतान की तरह खड़ा था जिसके सिर पर बादलों की पगड़ी बँधी थी जो स्वर्ग तक ऊँची जा रही थी।

मारकूचो उस पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ उसको एक जगह मिल गयी जहाँ से वह कूद सकता था। वहाँ पहुँच कर उसकी आँखों के फव्वारे खुल गये। वह रो पड़ा और अपनी किस्मत पर रोते रोते कूदने को था कि हरे रंग के कपड़े पहने एक सुन्दर लड़की ने जिसके सुनहरे बालों में फूलों का गजरा लगा था उसका हाथ पकड़ लिया।

उसने कहा — "यह तुम क्या कर रहे हो ओ गरीब आदमी। तुम्हारे ये बुरे विचार तुम्हें कहाँ ले जा रहे हैं। क्या तुम गुणवान आदमी हो। क्या तुम पढ़ते समय बहुत देर तक जागते रहे हो और तुमने बहुत सारा तेल जला लिया है।

क्या तुम वह हो जो अपनी प्रसिद्धि एक बेकाबू नाव की तरह से चारों तरफ फैलाना चाहते हो। तुम अब तक बेकाबू थे और जब तुम्हारे अच्छे दिन आने वाले हैं तब तुम अपनी जान गँवाना चाहते हो। क्या तुम अपने वे हथियार इस्तेमाल करना नहीं चाहते जिन्हें तुमने पढ़ाई के समय हासिल किया था।

क्या तुम नहीं जानते कि गुण गरीबी के जहर का सबसे ताकतवर इलाज है। गुण द्वेष के जुकाम की सबसे अच्छी सुँघनी है

खराब समय का सबसे अच्छा इलाज है। तुम्हें पता होना चाहिये कि गुण एक कुतुबनुमा के समान है जो बदकिस्मती की हवाओं में जहाज़ को ठीक दिशा में ले जाते हैं।

वे एक मोमबत्ती के समान हैं जो हमारे रास्तों में रोशनी फैलाते हैं। वे एक ऐसी जगह के समान हैं जहॉ कोई भी भूचाल कोई नुकसान नहीं पहुॅचा सकता। ओ दुखी आदमी। तुम अपने होश में आओ और उन लोगों से मुॅह मत मोड़ो जो खतरों में तुम्हारी सहायता करे मुसीबतों में तुम्हें ताकत दे निराशा में आशा की किरन हों।

क्या तुम्हें मालूम है कि तुमको इतने ऊॅचे पहाड़ पर जिस पर चढ़ना इतना मुश्किल है भगवान ने क्यों भेजा है। क्योंकि गुण यहॉ खुद रहते हैं ताकि जब तुम उस पर झूठा इलजाम लगाओ तब वह तुम्हें तुम्हारे बुरे इरादों से रोक सके जिन्होंने तुम्हें अन्धा कर दिया है।

इसलिये जागो, तसल्ली रखो, अपने विचारों को बदलो ताकि तुम यह देख सको कि गुण तो हमेशा ही फायदेमन्द होते हैं। लो यह एक पाउडर की पुड़िया लो और कैम्पो लार्गो[101] चले जाओ। वहॉ तुम्हें एक राजा की बेटी मिलेगी जो बस अपनी आखिरी सॉसें ले रही है। उसकी इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है। उसको यह पाउडर

---

[101] Campo Largo

एक नये दिये गये अंडे में रख कर देना। इससे तुम उसकी बीमारी ठीक कर सकोगे।

इसे उसे खिलाने से वह बीमारी तुम्हें एक हारे हुए सिपाही की तरह से आत्मसमर्पण कर देगी और उसे छोड़ कर चली जायेगी जबकि वह अभी उसकी ज़िन्दगी चूस रही है। इसके बदले में तुम्हें इनाम मिलेगा जो तुम्हारी गरीबी को दूर कर देगा और फिर तुम एक ऐसी ज़िन्दगी बिता सकोगे जैसी कि तुम जैसे आदमी को बितानी चाहिये। फिर तुम्हें किसी और से सहायता माँगने की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

मारकूचो उसकी तीखी नाक से जान गया कि वह खुद गुण ही बोल रही थी। वह उसके पैरों पर गिर पड़ा और उससे अपनी गलती की माफी माँगी जो अभी वह करने जा रहा था।

वह बोला — "अब मेरी आँखों के सामने से परदा हट गया है। मैंने तुम्हें तुम्हारे सिर के ताज से पहचान लिया है कि तुम गुण हो जिसकी प्रशंसा तो सब करते हैं पर पालन बहुत कम लोग करते हैं।

गुण जो यह जानते है कि बुद्धि को तेज़ कैसे किया जा सकता है, दिमाग को ताकतवर कैसे बनाया जा सकता है, फैसले किस तरह से ज़्यादा अच्छे किये जा सकते हैं। इज़्ज़तदार कामों की जिम्मेदारी कैसे ली जा सकती है। उड़ने के लिये पंख कैसे लिये जा सकते हैं ताकि दैवीय जगहों पर जाया जा सके।

मैं तुम्हें जानता हूँ। मुझे बहुत अफसोस है कि मैंने तुम्हारे दिये हुए हथियारों का गलत इस्तेमाल किया। मैं आज से यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं अबसे अपने आपकी इस जहर से रक्षा करूँगा कि मुझे अब मार्च की बिजली की कड़क भी कोई नुकसान नहीं पहुँचा पायेगी।"

कह कर वह उसके पैर चूमने के लिये नीचे झुक गया।

जब वह वहाँ से चली गयी तो उसे लगा जैसे वह एक गरीब बीमार आदमी को तसल्ली दे गयी हो जिसे एक बुरी घटना के होने के बाद ठंडे पानी के साथ कोई कड़वी जड़ खिला दी गयी हो।

फिर वह पहाड़ पर से उतर आया और कैम्पो लार्गो की तरफ चल दिया। वहाँ राजा के महल पहुँच कर उससे कहलवाया कि वह उसकी बेटी की बीमारी दूर करने के लिये आया है। राजा ने उसे बड़े आदर के साथ अन्दर बुलाया और उसे राजकुमारी के कमरे में ले गया।

वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि राजकुमारी एक छेददार पलंग पर लेटी हुई है – बहुत ही दुबली और बीमार। ऐसा लग रहा था जैसे वह केवल खाल और हड्डियाँ ही रह गयी हो। उसकी आँखें गड्ढे में धँस गयी थीं कि उनको देखने के गैलीलियो के कॉच[102] की जरूरत थी। उसकी नाक बिल्कुल तीखी हो गयी थी। उसके गाल

[102] Means "Microscope"

इतने पतले थे कि जैसे सौरैन्टो[103] की मौत। उसका नीचे वाला होठ उसकी ठोड़ी से लग गया था। उसकी टॉगें बिल्कुल मेमने की टॉगों की तरह से हो गयी थीं।

थोड़े में कहो तो वह बिल्कुल बदल गयी थी जिसको देख कर दया आती थी। मारकूचो ने जब उसे इस हालत में देखा तो वह भी रो पड़ा और उसकी आँखों से लगातार आँसू बहने लगे। उसने तुरन्त ही एक नया दिया अंडा मँगवाया।

उसने उस गर्म गर्म अंडे में पहले परी का दिया हुआ पाउडर रखा और फिर उसे राजकुमारी से निगल जाने के लिये कहा। उसके बाद उसे चार कम्बल ओढ़ाये और कमरे में अकेला छोड़ कर बाहर निकल आया।

अभी रात ने अपना तम्बू नहीं लगाया था कि जब बीमार राजकुमारी ने अपनी एक दासी को अपना बिस्तर बदलने के लिये पुकारा क्योंकि वह पसीने में बहुत गीला हो गया था। बिस्तर बदल जाने के बाद उसे बहुत ताजा महसूस होने लगा जितना कि पिछले सात सालों में उसे कभी महसूस नहीं हुआ था।

उसने कुछ खाने के लिये भी माँगा सो उन लोगों को कुछ आशा बँधी। हर घंटे उसकी हालत सुधरती गयी। रोज उसकी भूख बढ़ती गयी। एक हफ्ता बीतते न बीतते तो उसकी हालत में बहुत सुधार आ गया। अब उसने बिस्तर छोड़ दिया था।

---

[103] Sorrento is a port in SW Italy.

यह जादू देख कर राजा को लगा कि मारकूचो तो कोई इलाज करने वाला देवता है। उसने उसे कई जमीनें और खेत दे दिये और उसे बैरन[104] बना दिया और अपने राज्य का वजीर बना लिया। उसने उसकी शादी एक बहुत बड़े अमीर की बेटी से कर दी।

इस बीच पामीरो के पास जो कुछ भी था वह चला गया क्योंकि जुए का पैसा जैसे आता है वैसे ही जाता भी है। जुआ खेलने वाले की किस्मत जब चमकती है तो फिर उसका उतार भी जरूरी है।

तो जब उसने देखा कि वह तो अब भिखारी के हाल में आ गया है और बहुत दुखी रहने लगा है तो वह बराबर घूमने लगा ताकि शायद उसकी जगह बदल उसकी किस्मत भी बदल सके। या तो वह अपनी ज़िन्दगी का बोझ उतार सके और या फिर अपनी हालत सुधार सके।

वह छह महीनों तक जंगलों में घूमा शहरों में घूमा। उसने समुद्र भी पार किये। अन्त में वह कैम्पा लार्गो आ पहुँचा। यहाँ तक पहुँचते पहुँचते वह बहुत थक गया था अब उससे खड़ा भी नहीं हुआ जा रहा था।

यह देख कर कि उसके लिये वहाँ कहीं लेटने की भी जगह नहीं थी साथ में उसे भूख भी बहुत लगी थी और उसके कपड़े भी चिथड़े हो कर तार तार हो रहे थे वह निराशा के सागर में डूब गया। कि

[104] Baron – a respectable status in Imperial kingdoms

तभी उसे शहर की दीवार के बाहर एक पुराना घर दिखायी दे गया।

वह उसमें अन्दर चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने अपने दोनों गेटिस[105] निकाले और दोनों को मिला कर एक फन्दा बनाया और उसे छत की एक शहतीर में लटका दिया। फिर वह पत्थरों के एक ढेर पर चढ़ा और अपनी गर्दन उस फन्दे में डाल दी।

भगवान की कृपा से वह शहतीर पुराना और सड़ा हुआ था सो वह टूट गया और पत्थरों के ढेर पर ही गिर गया। इससे उसे केवल थोड़ी सी चोट पहुँची जिसको उसे कुछ ही दिन तक सहना पड़ा।

जब वह शहतीर टूटी तो उसमें से कुछ सोना चाँदी हार अँगूठी के रूप में नीचे गिर पड़ा जिन्हें किसी ने वहाँ शहतीर की खाली जगह में छिपा कर रख दिया था। उन सब गहनों के साथ एक छोटा सा चमड़े का छोटा सा बटुआ भी था जिसमें कुछ सोने के सिक्के थे।

बस पामीरो तो उसे देख कर उसके ऊपर कूद पड़ा क्योंकि अगर उसने निराशा में इससे पहले आत्महत्या कर ली होती तो यह सब उसे कहाँ से मिलता। वह खुशी से कूद पड़ा। उसके तो पैर ही

[105] Translated for the word "Garter" – Garter is a band worn around the leg to keep up a stocking or sock at its place.

जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। वह उस खजाने को ले कर सराय दौड़ गया ताकि वह अपना खोया हुआ उत्साह वापस पा सके।

अब हुआ क्या था कि दो दिन पहले ही कुछ चोरों ने यह खजाना उसी सराय के मालिक के घर से चुराया था जहॉ पामीरो उसे ले कर पहॅुचा और उसे उस पुराने घर में शहतीर के पीछे छिपा दिया था कि वे उसे फिर कभी वापस आ कर ले जायेंगे और चुपचाप बेच देंगे।

पामीरो ने पेट भर कर खाया पिया और उसे पैसे देने के लिये चमड़े का बटुआ निकाला। सराय के मालिक ने उसे देखते ही पहचान लिया कि यह बटुआ तो उसका था और अपनी सराय के कुछ आदमियों को बुला कर पामीरो को कैद कर लिया।

रस्मों के साथ उसे जज के पास ले जाया गया जिसने फैसला किया कि उसे ठीक से खोजा जाये। इस पर उसके पास सारी चीज़ें पायी गयीं तो उसे अपने पैरों से हवा में तीन और हाथ की चक्की का खेल[106] खेलने की सजा दी गयी।

अब उस अभागे ने जब अपने आपको इस हालत में पाया और देखा कि उसके गेटिस की शाम रस्सी की दावत में बदल रही थी और सड़े हुए शहतीर का मुकदमा एक नये फॉसी के डंडे में बदल रहा था तो वह अपना चेहरा पीटने लगा बाल और दाढ़ी नोचने लगा।

---

[106] Game of Three and the Handmill with his feet in the air

वह रोने लगा चीखने लगा और कहने लगा कि वह बेकुसूर था और अपनी सजा के लिये अपील करना चाहता था। वह जब ऐसा कर रहा था तो सड़क के इधर उधर देखता जा रहा था और कहता जा रहा था —

"यहाँ कोई न्याय नहीं है। गरीब लोगों की कोई सुनता नहीं है। फैसले अन्धे हो कर सुनाये जाते हैं। क्योंकि उसने जज को कोई रिश्वत नहीं दी थी या किसी क्लर्क से पहले से बात कर के नहीं रखी थी या मजिस्ट्रेट को पैसे नहीं खिलाये थे या वकील को भी कुछ नहीं दिया था इसी लिये उसको एक विधवा टीचर के साथ काम करने के लिये हवा में भेजा जा रहा था।"

कि इत्तफाक से उसका भाई उसे दिखायी दे गया। वह काउन्सिलर था और पहिये का सरदार था। उसने यह सजा रोकने की कोशिश की और अदालत को उसकी वजह समझाने की कोशिश की। उसने उनको सब बताया जो कुछ भी हुआ था।

मारकूचो ने जवाब देते हुए कहा — "तुम चुप हो जाओ क्योंकि तुम इस समय अपनी अच्छी किस्मत को नहीं पहचान पा रहे हो। क्योंकि बेशक तुम्हारे पास पहले ही एक तीन फीट लम्बी सोने की जंजीर मिल चुकी है तो उसके बाद तुम्हें तीन गज लम्बी रस्सी ही तो मिलेगी।

तो अब तुम खुशी खुशी फॉसी के फन्दे तक बढ़ो क्योंकि फॉसी तो तुम्हारी अपनी बहिन है जहॉ दूसरे लोग अपनी जान खोते हैं वहॉ तुम अपना बटुआ भरते हो।"

पामीरो ने उसकी बात सुन कर उससे कहा — "मैं यहॉ न्याय के लिये आया था हॅसी उड़वाने नहीं। और तुम्हें पता होना चाहिये कि जिस मामले में मैं यहॉ लाया गया हू उसमें मैं बिल्कुल बेकुसूर हॅू। क्योंकि मैं एक इज़्ज़तदार आदमी हॅू, हालॉकि तुम मुझे चिथड़ों में लिपटे एक भिखारी की तरह देख रहे हो, गाय कोई साधु पैदा नहीं करती।

और क्योंकि मैंने अपने पिता मारचोनो की बात नहीं सुनी अपने भाई मारकूचो की भी नहीं सुनी इसी लिये मुझे इस हालत से गुजरना पड़ रहा है और आज मैं इस जगह खड़ा हॅू जहॉ मुझे फॉसी लगाने वाले के पैरों के नीचे गाना पड़ रहा है।"

मारकूचो ने जब उसके मुॅह से पिता का और अपना नाम सुना तब उसका खून उसके प्रति कुछ गर्म हुआ। तब उसके मन में उसके लिये कुछ सहानुभूति उमड़ी।

उसने पामीरो की तरफ ध्यान से देखा तो वह उसको पहचान गया और जब उसे पता चल गया कि वह उसका अपना भाई है तो उसके मन में शर्म और स्नेह इज़्ज़त और न्याय और दया की मिली जुली भावनाऐं उमड़ पड़ीं।

उसे अपने खून और मॉस को इस तरह से अदालत में खड़े देख कर बहुत दुख हुआ। वह उसका कोई उपाय सोचने लगा। पर उसका इज़्ज़तदार ओहदा उसे बार बार उसकी सहायता करने से रोक रहा था क्योंकि वह राजा की नजरों में अपने ओहदे की बेइज़्ज़ती नहीं करना चाहता था कि "इसका भाई चोरी के इलजाम में पकड़ा गया।"

न्याय की मॉग तो यही थी कि वह जिसका सामान था उसको न्याय मिलना चाहिये पर दया की मॉग थी कि वह अपने भाई की रक्षा करे।

जब उसका दिमाग इस मामले को तराजू पर तौल रहा था यह न जानते हुए कि उसे क्या करना चाहिये कि जज का एक चौकीदार अपनी जीभ लम्बी सी निकाल कर वहॉ आ पहुॅचा क्योंकि वह बहुत जल्दी जल्दी भागा आ रहा था और बहुत तेज़ आवाज में चिल्ला चिल्ला कर बोल रहा था —

"अभी इस फैसले को रोको। रोको रोको इसे यहीं रोको।"

वजीर ने पूछा — "क्या बात है।"

कि दूसरे ने जवाब दिया — "भगवान की दया और इस नौजवान की खुशकिस्मती से कुछ नया हो गया। ऐसा हुआ कि दो चोर सोना और पैसा लेने के लिये उस पुराने मकान में गये जिसे उन्होंने सड़े हुए शहतीर के नीचे छिपाया हुआ था पर वहॉ वह

उनको नहीं मिला तो उन्होंने समझा कि दूसरे ने उसके साथ चालाकी की है और वह सब सामान ले गया है।

दोनों ऊँचे ऊँचे स्वरों में लड़ने लगे यहाँ तक कि दोनों घायल भी हो गये और अधमरे से हो कर नीचे गिर पड़े। जज को बुलवाया गया। उन्होंने तुरन्त ही अपनी चोरी स्वीकार कर ली। इससे यह साबित होता है कि यह नौजवान बेकुसूर है।

इसी लिये मुझे इस मामले का फैसला रोकने के लिये और इस बेकुसूर नौजवान को सजा देने से रोकने के लिये जल्दी जल्दी यहाँ भेजा गया।"

पामीरो तो यह सुन कर एक फुट और लम्बा हो गया जबकि वह पहले एक हाथ दूर भी जाने से घबरा रहा था। मारकूचो ने यह देख कर कि उसका भाई अब इलजाम से आजाद हो गया है उसकी इज़्ज़त लौट आयी है उसने अपना वेश बदलने का मुखौटा हटा दिया और अपने आपको उसे दिखा दिया।

उसने पामीरो से कहा — "पामीरो। मेरे भाई अगर तुमने इसे अच्छी तरह समझा होता कि बुरी आदतें क्या हैं। और ये बुरी आदतें और जुआ तुमको बरबाद कर रहे हैं तब तुम्हें गुणों की कीमत मालूम होती और तुम अच्छाई का फायदा उठाते।

अब तुम मेरे घर आओ और गुणों के फायदा उठाओ जिनको तुमने इतने दिनों तक छोड़ रखा था। मैं तुम्हारी पिछली सारी

गलतियाँ माफ कर के तुम्हें प्यार से गले लगा लूँगा और तुम्हें आँखों की पुतली की तरह से रखूँगा।"

ऐसा कह कर वह उसे अपने घर ले गया। सिर से पैर तक उसे बढ़िया कपड़े पहनाये और उसको समझाया कि सब मुकदमों में सब कुछ हवा की चाल ही काम करती है।

केवल गुण ही ऐसी चीज़ है जो आदमी को खुश रखती है।

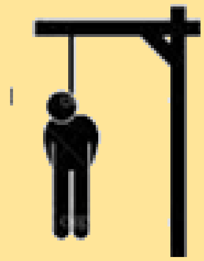

14 4–4 सूअर के मॉस के सात टुकड़े[107]

एक भिखारिन बुढ़िया अपनी बेटी को सूअर के मॉस के सात टुकड़े खाने के बाद उसकी इस भूख के लिये उसे बहुत मारती है और एक व्यापारी को यह विश्वास दिला देती है कि क्योंकि उसने सात तकलियॉ कात ली हैं इसलिये वह उसको ज़्यादा काम करने से मना कर रही थी। यह सुन कर वह व्यापारी उससे शादी कर लेता है। पर उसको तो यह काम आता नहीं है। फिर भी तीन परियों की सहायता से व्यापारी के व्यापार के दौरे से लौटने से पहले वह अपना कपड़ा बुन लेती है। उसके बाद वह यह कसम खा लेता है कि वह अब उससे कोई काम नहीं करायेगा।

सबने मैनैका[108] को बहुत बहुत आशीर्वाद दिया कि उसने इतनी सुन्दर कहानी सुनायी जिसने सुनने वालों की ऑखों में वही दृश्य पैदा कर दिया जो इतनी दूर हो रहा था और टौला[109] का दिल तो इस बात से जल ही उठा। बस उसने सोच लिया कि वह इससे बेहतर कहानी सुनायेगी। सो उसने अपना गला साफ किया और फिर यह कहानी सुनानी शुरू की।

उसके बारे में तो कुछ कहना ही नहीं चाहिये जो अगर पूरा सच ना हो, और बल्कि आधा भी सच न हो और इसी वजह से किसी ने कहा है कि टेढ़े चेहरे और सीधे काम। वह दुनियॉ की सारी बातें जानता था शायद उसने ऐन्टोनी और पामीरो[110] की कहानी सुनी

[107] The Seven Bits of Pork-Skin. Tale No 14. (Day 4, Diversion 4) Told by Tolla

[108] Meneca is one of the story tellers.

[109] Tolla is one of the storytellers.

[110] Antony and Palmiero

होगी जिनकी भौंहें नहीं थी और जिन्होंने चिड़िया पकड़ने वाला गोंद इस्तेमाल किये बिना ही चिड़िया[111] पकड़ ली थी।

यह तो अनुभव की बात है कि यह धरती एक सम्पन्नता[112] की सच्ची तस्वीर है जहाँ जो सबसे ज़्यादा काम करता है उसको सबसे कम मिलता है उसको सबसे अच्छा मिलता है जो बस जैसे जैसे उसके पास आता जाता है वह उसको वैसे वैसे लेता जाता है और यह आशा नहीं करता कि मैकैरोनी[113] उसके गले में आ कर अपने आप ही पड़ जायेगी।

एक बार की बात है कि एक बहुत ही गरीब बुढ़िया रहती थी। वह अपनी तकली हाथ में लिये हुए रास्ते भर सूत कातते हुए घर घर दरवाजे दरवाजे भीख माँग कर अपना गुजारा करती थी। जो साल में छह महीने अपने हाथ के काम पर ज़िन्दा रहती हो वह अपनी पतली सी बेटी को कैसे मोटा करे।

एक बार इस तरह से भीख माँगते माँगते उसने सूअर के माँस के सात टुकड़े उनकी खाल सहित इकट्ठा किये। उनको वह काफी

---

111 Translated for the word "Becafico" – a kind of bird

112 Translated for the Italian word "Cuccagna" – pronounced as "Kukana"

113 Macaroni is an Italian dish like pasta and spaghetti. See its picture above.

सारे भूसे और कुछ लकड़ी के साथ घर ले गयी जो उसने रास्ते में ही इकट्ठा किये थे।

घर ले जा कर उसने उनको अपनी बेटी को दिया और उससे उनको पकाने के लिये कहा और खुद वह कुछ मालियों के पास उनसे हरे पत्ते लेने के लिये चली गयी ताकि उनको वह उस मॉस के साथ के लिये पका सके। इस तरह से आज उसको अच्छा खाना मिलता।

उसकी बेटी ने उन टुकड़ों की खाल निकाली उनके बाल जलाये और उन खालों को एक बर्तन में पकने रख दिया। पर बर्तन में तो वे अभी ठीक से उबले भी नहीं थे कि वे उसके गले में उबलने लगे। क्योंकि उनमें से जो खुशबू उड़ रही थी वह उसकी भूख को बढ़ा रही थी और कह रही थी कि उनको खाया जाये।

कुछ देर तक तो उसने उनके खाने के लालच को रोका पर फिर जब उससे उस बर्तन में से आती खुशबू और ज़्यादा नहीं सही गयी तो अपने लालच की वजह से मजबूर हो कर उसने उसमें से कुछ निकाला और उसे चखा।

उसका स्वाद उसे अच्छा लगा तो उसने दूसरा टुकड़ा निकाला और खा लिया। फिर तीसरा फिर चौथा और इस तरह उसने सारे टुकड़े खा लिये।

जब उसने देखा कि उसने तो मॉस की खाल के सारे टुकड़े खत्म कर दिये तो उसको लगा कि यह तो उसने बहुत गड़बड़ कर

दी। जब उसको अपनी गलती महसूस हुई तो उसको लगा जैसे वे खालों के टुकड़े उसके गले में अटक रहे हैं तो उसने यह बात अपनी माँ से छिपाने की सोची।

इसके लिये उसने एक जूता लिया उसके तले के सात टुकड़े काटे और उनको बर्तन में रख दिया।

इस बीच उसकी माँ हरे पत्ते ले कर आ गयी। उसने उनको उनका कोई भी हिस्सा बिना बर्बाद किये छोटे छोटे टुकड़ों में काटा और यह देख कर कि बर्तन में पानी उबल रहा था उसने वे सारे हरे पत्ते उसमें डाल दिये। साथ में उसने वह चर्बी भी डाल दी जो उसको एक गाड़ी वाले ने भीख में दे दी थी जो उसके अपने पहियों में लगाने के बाद बच गयी थी।

उसके बाद उसने अपनी बेटी से लकड़ी के पुराने बक्से के ऊपर एक मोटा कपड़ा बिछाने के लिये कहा। फिर उसने एक थैले में से दो टुकड़े पुरानी डबल रोटी के निकाले एक आलमारी में से एक लकड़ी का बर्तन निकाला उस बर्तन में उनको रख कर काटा और उनके ऊपर जूते के टुकड़े जो हरे पत्तों के साथ पकाये गये थे डाल दिये और खाना शुरू कर दिया।

पहला कौर खाते ही उसको लगा कि उसके दाँत जूते का चमड़ा खाने के लिये नहीं बने। या फिर सूअर की खालों के वे टुकड़े किसी जादू से इतनी सख्त हो गये थे।

सो उसने अपनी बेटी से कहा — "तूने इस बार मुझसे धोखा किया है। भगवान तुझे शाप दे तूने इस बर्तन में कौन सी खराब चीज़ डाल दी है? या मेरा पेट पुराना जूता बन गया है? कि तूने मुझे पुराना चमड़ा खाने के लिये दिया। तू मुझे जल्दी बता कि तूने यह सब क्या किया है और यह सब कैसे हुआ नहीं तो मैं तेरे शरीर की कोई हड्डी साबुत नहीं छोड़ूँगी।"

सैपोरिता[114] ने उसको मना करना शुरू किया तो बुढ़िया का गुस्सा और बढ़ना शुरू हुआ। बेटी ने कहा कि शायद बर्तन में धुँआ घुस गया होगा और उसी की वजह से यह सब हो गया होगा। वही धुँआ उसमें से निकला होगा जिसने उसको अन्धा कर दिया होगा और फिर उसी की वजह से यह बुरा काम करने के लिये उसको मजबूर किया होगा।

बुढ़िया ने जब देखा कि उसका खाना तो जहर हो गया है तो उसने आव देखा न ताव और झाड़ू वाला डंडा उठा कर उससे बेटी को सात बार मारा जहाँ भी वह उसके शरीर पर लगा। बेटी इस मार से बेचारी बहुत ज़ोर से चीखी।

इसी समय उधर से एक व्यापारी गुजर रहा था। उसने उस लड़की की चीख सुनी तो वह घर में घुस आया। उसने देखा कि माँ अपनी बेटी के साथ बहुत ही बुरा व्यवहार कर रही है।

---

[114] Saporita – name of the daughter of the old woman

यह देख कर उसने माँ के हाथ से डंडा छीन लिया और उससे पूछा — "इस बेचारी बच्ची ने आपके साथ ऐसा क्या किया है जो आप इसको इस तरह से पीट रही हैं। लगता है कि आज तो आप इसको मार कर ही दम लेंगी।

क्या आपने इसको भाला चलाते हुए देखा या फिर अपने पैसों का डिब्बा तोड़ते देखा? इस बेचारी बच्ची के साथ ऐसा करते आपको शर्म नहीं आती?"

बुढ़िया बोली — "तुम नहीं जानते कि इसने मेरे साथ क्या किया है। यह बेशर्म लड़की। इसको मालूम है कि मैं भीख माँग कर गुजारा करती हूँ फिर भी इसको इस बात की कोई परवाह नहीं है। यह मुझे दवा खिला खिला कर मारना चाहती है।

हालाँकि मैंने इससे कहा कि इस समय गर्मी का मौसम है और तुझे इतना काम नहीं करना चाहिये कि तू बीमार पड़ जाये क्योंकि मेरे पास इतना नहीं है जो मैं तुझे फिर ठीक से खिला सकूँ।

पर यह सुनती ही नहीं। मेरे इतना कहने के बावजूद इस लड़की ने सात तकली सूत काता है। इससे इसके दिल को कोई बुरा रोग लग जायेगा और फिर यह दो महीने तक बिस्तर में पड़ी रहेगी तो मैं क्या करूँगी।"

व्यापारी ने जब यह सुना तो वह उस लड़की की मेहनत और चतुरायी देख कर बहुत खुश हुआ। उसने सोचा कि यह लड़की तो उसके घर को परियों का घर बना देगी सो उसने बुढ़िया से कहा —

“माँ जी अब इस पर अपना गुस्सा छोड़िये क्योंकि मैं अब आपको इस खतरे से बचाने वाला हूँ। मैं आपकी बेटी से शादी कर के इसे अपने घर ले जाऊँगा जहाँ मैं इसको राजकुमारी की तरह रखूँगा।

भगवान की दया से मैं अपनी मुर्गियाँ पालूँगा और अपने सूअरों को मोटा करूँगा। मैं अपने कबूतर पालूँगा। मेरा घर इतना भर जायेगा कि मैं उसमें मुश्किल से इधर उधर चल पाऊँगा।

भगवान ने ने मेरे ऊपर अगर कृपा की तो मुझे कोई बुरी नजर भी नहीं लगेगी क्योंकि मेरे भंडार मक्का से भरे रहेंगे। मेरे बर्तन आटे से मेरे घड़े तेल से और मेरे घड़े चर्बी से भरे रहेंगे।

मेरी रसोई नमक और मसालों से भरी रहेगी। मेरी आलमारियाँ लकड़ी कोयले और कपड़े से भरी रहेंगी। दुलहे के सोने लायक एक बहुत बढ़िया पलंग होगा। और इसके बाद भी मुझे किराया और ब्याज खाने के लिये मिलता रहेगा। मैं एक बहुत ही बड़े लौर्ड की तरह ज़िन्दगी गुजारता हूँ।

और अगर मेरा काम ठीक से चलता रहा तो दस डकैट[115] तो मुझे मिल ही जायेंगे सो मैं और अमीर हो जाऊँगा।”

बुढ़िया ने जब इस ख़ुशकिस्मती को इस तरह आते देखा जिसको उसने सपने में भी कभी नहीं सोचा था तो उसने सैपोरीता का हाथ पकड़ कर उठाया और उसे व्यापारी को थमा दिया और

[115] Ducket – the then curreny in use in italy

कहा — "लो अब यह तुम्हारी है। भगवान करे यह तुम्हारी बन कर बहुत साल तक खुश रहे तन्दुरुस्त रहे और इसके कई बच्चे हों।"

व्यापारी ने सैपोरिता को गले लगाया और उसको घर ले आया। अब वह उस दिन का बड़ी बेचैनी से इन्तजार कर रहा था कि जब वह अपनी पत्नी के कातने के लिये बाजार से अलसी की रुई ले कर आयेगा।

जब अगला सोमवार आया तो वह बाजार गया तो वह बहुत सवेरे ही उठ गया और उधर चला गया जहाँ देहातिनें अपना अपना सामान बेचने आती थीं।

उसने उनसे बीस दर्जन[116] गट्ठर अलसी की रुई खरीदी और सैपोरिता को देते हुए कहा — "अगर तुम्हारी कातने की इच्छा हो तो डरना नहीं क्योंकि तुमको यहाँ तुम्हारी माँ जैसा गुस्सा करने वाला और तुम्हारे शरीर की हड्डी तोड़ने वाला कोई और नहीं मिलेगा जो अगर तुम एक तकली सूत भी कातोगी।

बल्कि मैं तो तुमको अगर तुम दस तकली सूत कातोगी तो मैं तुमको उसके बदले में दस चुम्बन दूँगा। और अगर तुम एक अटेरन[117] भर कर सूत कातोगी तो मैं तुम्हें अपना दिल दे दूँगा।

[116] One Dozen is equal to 12, so 20 Dozens should be equal to 240.
[117] Translated for the word "Distaff"

जब तुम्हें अच्छा लगे तभी सूत कातना। अभी मैं बीस दिनों के लिये एक मेले में जा रहा हूँ। जब मैं वहाँ से वापस लौटूँगा तब तुम मुझे इसमें से दस दर्जन अलसी की रुई के गट्ठर कात कर दे देना। इसके बदले में मैं तुमको रूसी कपड़े का हरी मखमल के बौर्डर लगा एक कोट खरीद दूँगा।"

सैपोरिता ने अपने मन में कहा "तुम्हें जब जाना हो तब जाओ। तुमने तो मेरी अटेरन भर दी है। जाओ और जा कर आग जलाओ। और अगर तुम मेरे हाथ की बनी किसी कमीज की आशा कर रहे हो तो तुमको अपने लिये स्याही सोख्ता[118] तक तो मिलता नहीं। तुमने तो उसको पा लिया है, काली बकरी का दूध, बीस दर्जन अलसी की रुई के गट्ठर बीस दिन में।

भगवान करे कि जब तुम देश वापस लौट रहे हो तो तुम्हारी नाव के साथ कुछ बुरा हो जाये। जाओ क्योंकि तुम्हारे पास अभी समय है। जब जिगर पर बाल उग आयेंगे और बन्दर के पूँछ उग आयेगी तब तुमको यह रुई कती हुई मिल जायेगी।"

इस तरह उसको रुई दे कर उसका पति मेले चला गया। इस बीच उस लड़की ने जो लालची थी भूखी थी और बहुत आलसी भी थी बिल्कुल भी इन्तजार नहीं किया।

---

[118] Translated for the words "Blotting Paper" – this is a kind of paper which absorbs extra ink from the paper after writing with the ink.

तुरन्त ही उसने आटा बनाया तेल लिया और उसके पकौड़े तलने बैठ गयी। उसने सुबह से शाम तक बहुत सारे केक बनाये। उसने कुछ और नहीं किया सिवाय चूहे की तरह कुतरने के और सूअर की तरह खाने के।

अब उसके पति के आने का समय आने वाला था तो उसने बहुत बढ़िया सूत कातना शुरू किया। सूत कातने से होने वाले शोर का ख्याल रखते हुए जो जब व्यापारी वापस आयेगा तब होगा और देखेगा कि उसकी रुई तो अनछुई रखी है घड़े और बर्तन खाली रखे हैं उसने एक बड़ी सी डंडी ली और उस पर दर्जनों अलसी की रुई के गट्ठर लपेट दिये।

फिर उसको अपने छज्जे से निकले एक लोहे के डंडे से उसके ऊपर टॉग दिया और उस तकलियों के भी बाप को नीचे गिराना शुरू किया। अपने पास उसने पानी की बजाय मैकैरोनी के पानी का एक बहुत बड़ा कटोरा रख लिया और फिर जहाज़ की रस्सी की तरह से मोटा मोटा सूत कातना शुरू किया।

हर बार जब भी वह अपनी उॅगली उस पानी में भिगोती वह सड़क पर चलने वाले के साथ कार्निवाल का एक खेल खेलती।

उसी समय उधर से तीन परियॉ जा रही थीं। जब उन्होंने यह भद्दा दृश्य देखा तो उसको देख कर उनको इतना आनन्द आया कि वे इतना हॅसी इतना हॅसी कि हॅसते हॅसते दोहरी हो गयीं।

और इस वजह से वे चिल्लायीं — "भगवान करे इस घर की सारी अलसी की रुई तुरन्त ही कत जाये उसका कपड़ा बन जाये और वह धुल कर सफेद हो जाये।" और यह सब तुरन्त ही हो गया।

भगवान का यह भला काम देख कर सैपोरिता तो बहुत खुश हुई। लेकिन उसके पति को ऐसी खुशी फिर कभी हासिल न हो इसलिये उसने सोचा कि उसको उसे बिस्तर में लेटे मिलना चाहिये सो उसने अपने बिस्तर पर पहले कुछ हैज़ल नट बिछाये और फिर जा कर उस पर लेट गयी।

जब उसका पति आया तो वह दर्द से कराहने लगी। कभी वह इस करवट लेटती कभी दूसरी तरफ। इससे उसके नीचे पड़े हैज़ल नट चटकते तो उसकी आवाज ऐसी लगती जैसे उसकी हड्डियाँ चटक रही हैं।

जब उसका पति आया तो उसने उससे पूछा कि वह कैसी है।

उसने बड़ी दर्द भरी आवाज में कहा — "मैंने इतना बुरा समय पहले कभी नहीं देखा जैसा कि मेरे ऊपर अब है। मुझे लगता है मेरे शरीर में अब एक हड्डी भी साबुत नहीं बची है। जबकि तुमको लग रहा होगा कि यह तो भेड़ के लिये थोड़ी सी घास है।

बीस दर्जन अलसी की रुई बीस दिनों में कातना और साथ में उसका कपड़ा भी बुनना? तुम अपना रास्ता ढूँढो मेरे पति क्योंकि तुमने मेरी माँ को तो कुछ दिया नहीं है।

जब मैं मर जाऊँगी तो मेरी माँ मेरी जैसी कोई दूसरी बेटी पैदा नहीं करेगी। और फिर तुम इस गन्दे काम के लिये मुझे नहीं पकड़ पाओगे। मुझे इतनी सारी तकलियाँ भरने का कोई शौक भी नहीं है कि मैं अपने शरीर की तकली तोड़ दूँ।"

यह सुन कर उसके पति ने उसको प्यार से हजारों बार सहलाया और कहा — "तुम बस एक बार ठीक हो जाओ प्रिये। क्योंकि दुनियाँ के सारे कपड़ों से ज़्यादा मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। अब मुझे पता चला कि तुम्हारी माँ तुमको इतना सारा काम करने के ऊपर तुम्हें जो मार रही थी वह ठीक कर रही थी क्योंकि उतना काम करने के बाद तुम्हारी तन्दुरुस्ती वाकई खराब हो जाती।

इतना काम करने पर तो तुम्हारी चमक ही खत्म हो गयी है। अब तुम खुश हो जाओ। अब मैं तुम्हारा बहुत ख्याल रखूँगा कि अब फिर से तुम्हारी तबियत खराब न हो।

और हाँ ज़रा रुको। मैं अभी डाक्टर के पास जाता हूँ।"

यह कह कर वह तुरन्त ही डाक्टर कैटूपोलो के पास दौड़ गया। उसके जाने के बाद सैपोरिता ने अपने नीचे बिछे हुए चेस्टनट की सारी गिरियाँ खायीं और उनके छिलके खिड़की से बाहर फेंक दिये।

डाक्टर भी जल्दी ही आ गया। उसने उसकी नब्ज़ देखी उसका चेहरा देखा उसके कमरे में रखा बर्तन देखा रात वाले बर्तन में कुछ सूँघा और फिर यह नतीजा निकाला कि उसकी बीमारी उसके अन्दर ज़्यादा खून थी। इसके अलावा उसका कोई काम न करना था।

व्यापारी को लगा कि यह डाक्टर बेकार की बात कर रहा था सो उसने एक कारलीनो[119] उसके हाथ में रखा और उसे बाहर छोड़ आया।

अब वह किसी दूसरे डाक्टर के पास जाना चाहता था पर सैपोरिता बोली — "अब तुम्हें किसी दूसरे डाक्टर के पास जाने की कोई जरूरत नहीं है। मेरी बीमारी इस एक डाक्टर को देख कर ही ठीक हो गयी।"

यह देख कर उसके पति ने उसको गले लगाया और उससे कहा कि आगे से उसको कोई काम करने की कोई जरूरत नहीं है। वह कोई काम न करे बस आनन्द करे क्योंकि एक यूनानी और बन्द गोभी दोनों को रखना नामुमकिन है।[120]

[119] Carlino maybe was the then currency in use in Italy. A silver coin struck by Charles I from Angio. Worth 43 centesimi.
[120] It maybe a saying "It is impossible to have a Greek and cabbages together."

15 4–6 तीन ताज[121]

मारचैटा को हवा ने चुरा लिया और वह उसे एक गुल के घर ले गयी जहाँ कई घटनाओं के बाद उसे बहुत अच्छा खाना खाने को मिलता है। फिर वहाँ से वह एक आदमी के वेश में आगे बढ़ती है। वह एक राजा के महल पहुँचती है तो वहाँ रानी उस पर मोहित हो जाती है और क्योंकि राजा को उसे बहुत प्यार नहीं करता तो वह राजा से उसके ऊपर झूठा इलजाम लगाते हुए कहती है कि यह खराब काम उसी की वजह से हुआ है। इस बात पर मारचैटा को फाँसी की सजा मिलती है। पर गुल के दिये गये एक टोटके की वजह से वह बच जाती है और रानी बन जाती है।

पोपा ने जो कहानी सुनायी उससे लोग बहुत सन्तुष्ट थे। वे पोरज़ीला की अच्छी किस्मत पर बहुत खुश थे। फिर भी कोई उसकी किस्मत से जल नहीं रहा था जो इतनी मुश्किलों से उसे मिला था क्योंकि इस शाही राज्य तक आते आते उसे अपना राज्य खो देना पड़ा था।[122]

लेकिन टौला ने यह देखते हुए कि पोरज़ीला की बुरी किस्मत ने राजकुमार और राजकुमारी को कुछ परेशान सा कर दिया उनके उत्साह को बढ़ाना चाहा सो उसने यह कहानी सुनायी।

ओ मेरे लौर्ड। सच एक ऐसी चीज़ है जो तेल की तरह से हमेशा ऊपर तैरता रहता है और लैम्प एक ऐसी आग है जिसे

---

[121] The Three Crowns. Tale No 15. (Day 4, Diversion 6) Told by Tolla

[122] Read this story "The Dragon", story No 22 (4-5) told by Popa in "Il Pentamerone 17-32" by Sushma Gupta

छिपाया नहीं जा सकता बल्कि यह एक आजकल की बन्दूक की तरह से है जो उसी को मार देता है जो उसे चलाता है।

यही नहीं वह उन लोगों को झूठा भी कहता है जो अपनी बात के पक्के नहीं होते। यह केवल गुणों और किसी के भले विचारों को ही नष्ट नहीं कर देता बल्कि उस बटुए को भी नष्ट कर देता है जिनमें वे रखे रहते हैं।

अभी मैं जो कहानी आप सबको सुनाऊँगी वह इस बात को साबित करेगी।

पुराने समय की बात है कि वैले टैसकोसे[123] का एक राजा था जिसके कोई बच्चा नहीं था। वह हर समय जहाँ भी वह होता यही कहता "हे भगवान मुझे मेरे राज्य का एक वारिस दे दे ताकि मैं अपना घर अकेला न छोड़ सकूँ।"

एक बार वह एक बागीचे में खड़ा था कि वह ज़ोर से वही शब्द बोला तो एक झाड़ी में से आवाज आयी —

ओ राजा तुझे क्या चाहिये बेटी जो चली जायेगी या बेटा जो तुझे बर्बाद कर दे

राजा यह सुन कर परेशान हो गया और कुछ सोच न सका कि इसका वह क्या जवाब दे। उसने उस आवाज से कहा कि वह सोचने के लिये कुछ समय चाहता है उसे अपने दरबार के सलाहकारों से सलाह करनी है।

---

[123] Valle-tescosse – name of a place

वह तुरन्त ही घर लौट आया और अपने कमरे में चला गया। उसने अपने सलाहकारों को बुलाया और जब वे उसके सामने आ गये तो उसने उनसे इस मामले पर विचार करने के लिये कहा। तो कुछ ने कहा कि इज़्ज़त ज़िन्दगी से बढ़ कर है क्योंकि वही तो असली चीज़ है।

जबकि कुछ ने कहा कि ज़िन्दगी को इज़्ज़त से ऊँचा रखना चाहिये क्योंकि इज़्ज़त तो केवल बाहरी चीज़ है उसकी कीमत कम होनी चाहिये।

एक बोला कि ज़िन्दगी तो पानी है जो बह जाता है इसलिये उसकी कीमत कम है और इस तरह सारी चीज़ें ज़िन्दगी के खम्भे हैं जिन पर किस्मत का यह अस्थायी पहिया टिका हुआ है।

पर इज़्ज़त स्थायी चीज़ है जो प्रसिद्धि के कदमों के निशान छोड़ जाती है शान का प्रतीक है उसे तो हर तरह से सुरक्षित रखना चाहिये। प्यार से रखना चाहिये।

दूसरे ने कहा कि ज़िन्दगी से ही हमारी जाति सुरक्षित रहती है धन से हमारे घर का बड़ापन बना रहता है क्योंकि इज़्ज़त तो गुणों की वजह से केवल दूसरों की राय पर ही आधारित होती है।

कुछ ने राय दी कि इज़्ज़त स्त्रियों के पैटीकोट में नहीं होती पर स्त्री अपने पिता के घर में नफरत के भाव बहुत कम पैदा करती है जबकि बेटा अपने पिता के घर को ही नहीं बल्कि पूरे राज्य को आग भी लगा सकता है।

इस तरह बच्चे की इच्छा रखने वाले राजा को ये दो प्रकार के विचार रखे गये। उसे एक लड़की माँग लेनी चाहिये जो ज़िन्दगी और राज्य किसी के लिये भी खतरा नहीं होगी।

यह सुन कर राजा बहुत खुश हुआ और फिर से बागीचे गया और उसी झाड़ी के पास जा कर अपने वही शब्द दोहराने लगा। उसने फिर वही आवाज सुनी तो वह जवाब में बोला "लड़की लड़की।"

शाम को जब वह घर लौटा तो वह रात उसने अपनी पत्नी के साथ बितायी। समय आने पर उसकी पत्नी ने एक सुन्दर सी बेटी को जन्म दिया। जैसे ही बच्ची का जन्म हुआ तो उसने उसे एक अलग किले में उसे दूध पिलाने वाली आयाओं के साथ रख दिया। कई चौकीदार और देखने भााने वाले भी रख दिये।

उसने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की कि उसके ऊपर उसके जन्म की परिस्थितियों का कोई बुरा असर न पड़े। उसने उसकी बहुत परवाह के साथ देखभाल की और शाही घरानों के सब गुण उसे सिखाये।

जब वह बड़ी हो गयी तो उसने उसकी शादी राजा पीयरडीसैनो[124] से करने का विचार किया। राजा से बात पक्की कर के वह उसे राजा के साथ भेज सके इसलिये वह अपनी बेटी को लाने के लिये राजमहल गया।

---

[124] King Pierdisenno

राजकुमारी ने महल पहले कभी नहीं छोड़ा था। जब वह राजकुमारी को बाहर ला रहा था कि उसी समय एक बहुत ही ज़ोर की हवा बही और उसे ऊपर उठा कर उड़ा ले चली और इस तरह से राजकुमारी फिर कभी नहीं देखी गयी।

वह हवा उसे कुछ समय तक तो उड़ा कर ले चली फिर उसने उसे एक जंगल में जहॉ सूरज भी नही झॉक सकता था एक गुल के घर के सामने ला कर खड़ा कर दिया।

यहॉ उस लड़की को एक बुढ़िया मिली जिसे गुल ने अपने सामान की देखभाल करने के लिये छोड़ा हुआ था। बुढ़िया बोली — "ओह तुम्हारी ज़िन्दगी कितनी खराब है। तुम यहॉ कहॉ से आ गयी हो ओ नाखुश लड़की। अगर इस मकान की मालकिन गुल ने तुझे देख लिया तो मैं कह नहीं सकती कि तेरी खाल की तीन तॉबे के सिक्के जितनी कीमत भी होगी क्योंकि वह केवल आदमी का ही मॉस खाती है।

मेरी ज़िन्दगी तो यहॉ केवल इसलिये सुरक्षित है क्योंकि उसे मेरी सेवाओं की जरूरत है। पर तू जानती है कि तुझे क्या करना है। ले यह घर की चाभी ले। इससे तू घर में घुस जा और कमरों की सफाई कर।

और जब गुल आये तो कहीं छिप जाना जिससे तू उसे दिखायी न पड़े। खाना तुझे मैं देती रहूँगी। इस बीच कौन जानता है कि क्या हो जाये। भगवान तेरी सहायता करे इस बीच क्या कुछ बड़ा

हो जाये। बुद्धिमानी से काम ले और धीरज रख तू हर खाड़ी को पार कर लेगी और हर तूफान पर काबू कर लेगी।"

मारचैटा ने, यही उस लड़की का नाम था, जरूरत का फायदा उठा कर बुढ़िया से चाभी ले ली और घर के अन्दर चली गयी। वहाँ पहुँच कर उसने एक झाड़ू उठायी और सब जगह की सफाई करने लगी। उसने फर्श इतने साफ कर दिये कि कोई उस पर से मैकेरोनी उठा कर भी खा सकता था।

चिकनाई के एक टुकड़े से उसने अखरोट का बना फर्नीचर इतना चमका दिया कि कोई उसमें अपनी शक्ल भी देख सकता था। उसके बाद उसने बिस्तर ठीक किये।

जब उसने गुल के आने की आवाज सुनी तो वह एक बक्से में जा कर छिप गयी जो मक्का से भरा हुआ था। गुल जब अन्दर आयी और यह असाधारण काम देखा तो वह बहुत खुश हुई। उसने तुरन्त ही बुढ़िया को बुलाया और उससे पूछा — "यह कौन है जिसने सब चीज़ें इतनी तरतीबवार रखी हैं।"

बुढ़िया बोली कि यह सब उसी ने किया है। गुल बोली — "जिसने भी तेरे लिये यह सब किया है और जो कुछ भी तेरे लिये किया है उसने तुझे धोखा दिया है। तूने एक बहुत असाधारण काम किया है इसलिये तुझे आज बहुत अच्छा खाना मिलेगा।"

कह कर उसने खाना खाया। जब वह पेट भर कर खा चुकी तो फिर वहाँ से चली गयी। जब वह वापस लौटी तो उसने देखा

कि छत के शहतीर बिल्कुल साफ हो चुके हैं। उन पर न कोई धूल है न कोई जाला। उसके तॉबे के बर्तन भी साफ हो कर चमक चुके हैं और दीवार पर तरतीब से लटकाये जा चुके हैं। मैले कपड़े धोने के लिये रखे जा चुके हैं।

गुल यह सब देख कर बहुत खुश थी। उसने बुढ़िया को बहुत आशीर्वाद दिया — "भगवान तुझे हमेशा खुश रखे ओ मेरी पैन्टाटोला[125]। भगवान करे तू हमेशा राज करे और आगे बढ़े क्योंकि तूने मुझे बहुत खुश किया है।

इस तरह से घर को सॅवारा हुआ पा कर मैं बहुत खुश हॅू। यह तो ऐसा लग रहा है जैसे किसी गुड़िया का घर हो और यह बिस्तर तो ऐसा लग रहा है जैसे किसी दुलहिन का बिस्तर हो।"

इस तरह बुढ़िया को गुल की तारीफ मिल गयी थी। उसने भी मारचैटा को उस दिन बहुत अच्छा खाना दिया और उसे अपने हाथ से ऐसे खिलाया जैसे कोई किसी छोटे बच्चे को खिलाता है।

जब गुल फिर बाहर चली गयी बुढ़िया ने मारचैटा से कहा — "चुप रहना। इस मामले से हम तेरी किस्मत को ललचायेंगे। अब तू अपने हाथ से कुछ ऐसा स्वादिष्ट बना जो गुल के स्वाद का हो।

और अगर इसके बाद वह सातों दुनियॉओं की कसम खा लेगी तब भी तू उसका विश्वास न करना जब तक वह अपने तीन ताजों की कसम खा न ले। वह जब तीन ताजों की कसम खा ले तब तू

---

[125] Pentatola

बाहर आ जाना और उसे अपने आपको दिखा देना। क्योंकि तब तू जीत जायेगी और तुझे लगेगा कि मैं तेरे साथ तेरी माँ की तरह से बर्ताव कर रही थी।"

यह सुन कर मारचैटा ने एक मोटी सी बतख काटी और उसके कुछ हिस्सों का स्टू बनाया फिर बतख को चिकनाई प्याज और लहसुन से भरा और मैकेरोनी को उसके नीचे बिछा कर पका दिया। फिर उसने मेज पर मेजपोश बिछाया और उस पर गुलाब के फूल और सन्तरे के पत्ते बिछाये।

जब गुल घर वापस आयी और ये तैयारियाँ देखीं तो वह खुशी से आपे से बाहर हो गयी। उसने बुढ़िया को फिर बुलाया और उससे पूछा कि यह सब किसने किया है।

बुढ़िया बोली "आप खायें तो सही। आपके लिये यही ठीक है कि कोई आपकी सेवा कर रहा है और आपको सन्तुष्टि दे रहा है और कुछ जान कर आप क्या करेंगी।"

सो गुल खाना खाने बैठी तो उसने महसूस किया कि उस अच्छे खाने का हर कौर उसकी हड्डियों को ताकत दे रहा है। खाते हुए वह बोली — "अगर मुझे यह पता होता कि यह सब मेरे लिये कौन कर रहा है तो नैपिल्स के तीन शब्दों की कसम मैं उसे अपनी आँखें दे देती। मैं तीन तीर कमानों की कसम अगर मैं उसे जान पाती तो मैं उसे अपने दिल में बिठा लेती।

उन तीन मोमबत्तियों की कसम जो रात को किसी वसीयत लिखने के समय जलायी जाती हैं। उन तीन गवाहों की कसम जिनकी गवाही पर मौत की सजा दी जाती है। उन तीन फीट रस्सी की कसम जिससे मौत की सजा वाले की गर्दन में फन्दा लगाया जाता है।

उन तीनों चीज़ों की कसम जिनकी वजह से आदमी घर से भागता है – बदबू धुऑ और नीच पत्नी। उन तीन चीज़ों की कसम जिनसे घर बर्बाद होता है – पकौड़े, गर्म रोटी और मैकेरोनी। उस स्त्री और बतख की कसम जिनसे बाजार बनता है।

तीनों तरह की मछली की कसम – तली हुई मछली, ठंडी मछली और रसेदार मछली। नैपिल्स के पहले तीन गवैयों की कसम – जौन डी ला काराज़ौला, गौसिप जूनो और संगीत का राजा। तीन उन चीज़ों की कसम जो प्रेमियों के लिये जरूरी हैं – अकेली जगह, परवाह और भेद को छिपाने की ताकत।

उन तीन चीज़ों की कसम जो एक सौदागर के लिये जरूरी हैं – साख, शराब और अच्छी किस्मत। उन तीन तरह के लोगों की कसम जिन्हें कोई वेश्या पकड़ कर रखती है – शान बघारने वाले, सुन्दर नौजवान और नीच लोग।

उन तीन चीज़ों की कसम जो एक चोर के लिये जरूरी हैं – देखने के लिये अच्छी ऑखें, पकड़ने के लिये अच्छे हाथ और भाग

जाने के लिये अच्छे पॉव। उन तीन चीज़ों की कसम जो नौजवानों को बिगाड़ देती है – जुआ, स्त्रियॉ और सराय।

उन तीन गुणों की कसम जो एक अच्छा कानून पालन करने वाला बनाती हैं – दृष्टि चाल और सफलता। उन तीन चीज़ों की कसम जो एक दरबारी के लिये अच्छी होती हैं – धोखाधड़ी, थूक और किस्मत।

उन तीन चीज़ें की कसम जो एक दलाल के लिये अच्छी होती हैं – बड़ा दिल, बहुत बोलने की ताकत और बेशर्मी। उन तीन चीज़ों की कसम जो डाक्टर लोग देखते हैं – नाड़ी, चेहरा और रात का बर्तन।”

गुल यह सब कई दिनों तक बोल सकती थी पर मारचैटा अपनी जगह से टस से मस नहीं हुई। पर जब आखीर में उसने कहा “मेरे तीन ताजों की कसम अगर मैं इस अच्छी घर की देखभाल करने को जानती तो मैं उसके ऊपर इतना दया दिखाती कि वह सोच भी नहीं सकती थी।”

तब वह अपने छिपने की जगह से बाहर निकली और बोली “मैं यहाँ हूँ।” और जब गुल ने उसे देखा तो बोली — “तुझे तो मुझे एक ठोकर मारनी चाहिये क्योंकि तू तो मुझसे बहुत ज़्यादा जानती है। तूने तो यह बहुत ही बढ़िया काम किया है और मेरे शरीर के अन्दर पकने से अपने आपको बचा लिया है।

पर क्योंकि तू इतना सब कुछ करना जानती है और तूने मुझे खुश किया है तो मैं तुझे अपनी बेटी की तरह से रखूँगी। यह ले यह सब कमरों के चाभियाँ हैं। अब तू यहाँ की मालकिन बन जा। सबसे बड़ी ताकत बन जा।

पर बस इसमें एक चीज़ मेरी है। इसके आखिरी कमरे को तू कभी मत खोलना जिसकी यह चाभी है। क्योंकि अगर तूने ऐसा किया तो समझना कि तूने सरसों मेरे नाक तक पहुँचा दी है।

इसलिये तू बस घर के कामों का ध्यान रख। भगवान तुझे खुश रखें। मैं तुझसे वायदा करती हूँ कि मैं तेरी शादी किसी अमीर आदमी से करा दूँगी।"

मारचैटा ने उसका हाथ चूमा और उसे धन्यवाद दिया और उससे वायदा किया कि वह उसकी किसी दासी से भी ज़्यादा सेवा करेगी।

एक दिन जब गुल बाहर चली गयी तो मारचैटा को उत्सुकता हुई कि वह उस कमरे को खोल कर देखे जिसे गुल ने उसे खोलने से मना किया था। और उसने जा कर उस कमरे का दरवाजा खोल दिया।

उसने देखा कि उसमें तीन लड़कियाँ सुनहरे कपड़े पहने बन्द थीं। तीनों शाही गद्दियों पर बैठी हुई थीं और गहरी नींद में थीं। ये लड़कियाँ गुल की बेटियाँ थीं।

इनकी माँ ने इन पर जादू डाल रखा था क्योंकि इनके बारे में यह भविष्यवाणी थी कि अगर एक राजा की बेटी उनको वहाँ जगाने नहीं आयी तो उनके ऊपर कोई बड़ा खतरा आयेगा। इसी खतरे से बचने के लिये माँ ने उनके ऊपर जादू डाल दिया था और इस कमरे में बन्द कर दिया था।

जब मारचैटा अन्दर घुसी तो उसके पैरों से कुछ आवाज हुई जिससे वे जाग गयीं और उन्होंने खाना माँगा। उसने उन तीनों के लिये तीन तीन अंडे लिये और उनको गर्म राख में पकाया और जब वे पक गये तो उसने वे तीन तीन अंडे उन तीनों को दे दिये। उन्होंने वे अंडे खाये तो उनमें थोड़ी ताकत आयी।

तब उन्होंने यह इच्छा प्रगट की कि वे थोड़ी ताजा हवा में साँस लेना चाहती हैं सो वे बाहर बरामदे में आयीं।

पर जब गुल आयी और उसने उन तीनों को बाहर बैठा पाया तो वह बहुत दुखी और गुस्सा हुई कि उसने मारचैटा की बहुत पिटायी की। मारचैटा इस व्यवहार से इतनी शर्मिन्दा हुई कि उसने गुल से तुरन्त ही उसे छोड़ कर जाने के लिये विदा माँगी। उसने गुल से कहा कि वह बाहर निकल कर अपनी किस्मत आजमा लेगी।

इससे गुल को उसे अपने शब्दों और कामों से शान्त करना पड़ा कि वह तो केवल उससे खेल रही थी और अब वह उसे फिर कभी नहीं छुएगी। पर सब बेकार। वह उसे किसी तरह भी रोक नहीं सकी सो गुल को उसे जाने देने पर मजबूर होना पड़ा।

पर जाने से पहले गुल ने उसे एक ॲगूठी दी और कहा कि वह उसे हमेशा पहने रहे। जब भी वह अपने आपको किसी बड़ी मुसीबत में पड़ा पाये तो वह उसमें जड़े पत्थर को अपनी हथेली की तरफ कर ले और अपना नाम गूॅजता हुआ सुने। इसके अलावा उसने उसे आदमी के पहनने वाली एक बहुत बढ़िया पोशाक भी दी जिसे मारचैटा ने उससे माॅगा था।

मारचैटा ने वह पोशाक पहनी और वहाॅ से चल दी। चलते चलते वह एक जंगल में आयी जहाॅ उसे रात हो गयी थी। वहाॅ उसकी मुलाकात एक राजा से हुई जो शिकार के लिये निकला था।

राजा ने एक सुन्दर नौजवान देखा तो उससे पूछा कि वह कहाॅ से आया था और किधर जा रहा था और इस समय वहाॅ उस जंगल में क्या कर रहा था।

मारचैटा बोली कि वह एक सौदागर का बेटा था। उसकी माॅ मर गयी थी और सौतेली माॅ के बुरे व्यवहार की वजह से उसे घर से भागना पड़ा। राजा को मारचैटा की बोली सुन कर बहुत अच्छा लगा वह बिल्कुल फर्राटे से बोल रहा था।

वह अपने निजी नौकर की हैसियत से उसको अपने घर ले गया। जब रानी ने उसे देखा तो वह भी उसकी सुन्दरता से बहुत आकर्षित हो गयी और उसकी इच्छाऐं आसमान छूने लगीं।

हालाॅकि कुछ दिनों तक तो जैसा कि सुन्दरता के साथ होता है कुछ तो डर की वजह से और कुछ घमंड की वजह से उसने अपनी

इच्छाओं को दबा कर रखा पर फिर रानी अपनी बेलगाम इच्छाओं पर काबू नहीं पा सकी।

तो एक दिन उसने मारचैटा को एक तरफ बुलाया और उसे अपने दुखों और इच्छाओं के बारे में बताने लगी। उसने उसे यह भी बताया कि जिस दिन से उसने उसे देखा है वह उससे उसी दिन से प्यार करने लगी है। इसलिये वह अगर उसकी इच्छाओं को शान्त नहीं करेगा तो वह मर जायेगी।

और फिर उसने उसके चेहरे की सुन्दरता की बहुत बहुत प्रशंसा की और कहा कि अगर प्यार के स्कूल में उसने कोई गलती की होती तो वह उसे घोड़ा[126] बना देती। फिर उसने सब ग्रहों की कसम देते हुए कहा कि वह उसके साथ इतनी सख्ती का बर्ताव न करे।

उसने उससे यह भी वायदा किया कि वह अगर उसकी तरफ एक अंगुल आगे बढ़ेगा तो वह उसको एक फुट भर फायदा देगी। वह उसे हर तरह का आनन्द देने की कोशिश करेगी।

आखीर में उसने उससे यह भी कहा कि वह यह न भूले कि वह एक रानी है और जब वह उसके जहाज़ में चढ़ ही गयी है तो वह उसे बीच समुद्र में बिना किसी सहायता के नहीं छोड़ सकता क्योंकि वह तुरन्त ही चट्टान से टकरा कर उसका नुकसान कर सकती है।”

[126] This “horse” is like that in olden days in India children were made “cock” if they made any mistake.

मारचैटा ने यह कोमल और प्यारे शब्द सुन कर वायदे और धमकियाँ सुन कर उसे यह जवाब दिया कि उसकी खुशी और आनन्द का दरवाजा खोलने के लिये चाभी चाहिये।

अपने आपको दिखाने के लिये वह कह सकती थी कि उसको खुशी और शान्ति देने के लिये वह बुध नहीं है और न ही उसके पास बुध का सर्पदंड है। पर क्योंकि अभी वह अपने आपको दिखाना नहीं चाहती थी सो उसने उससे कहा कि उसे यह विश्वास ही नहीं था कि वह इतने गुणों वाले राजा के बारे में ऐसा क्यों सोचती है।

और अगर वह अपने घर की इज़्ज़त को दाँव पर लगाना नहीं चाहती है तो उसे इतने अच्छे मालिक के साथ जो अपने नौकर को इतना चाहता है कोई गलत व्यवहार नहीं करना चाहिये।

रानी ने जब नौकर से अपने प्रेम का यह पहला जवाब सुना तो वह बोली — "जाओ तुम यहाँ से सीधे चले जाओ और इस बारे में फिर से सोचना कि मेरे लोग जब वे तुमसे विनती कर सकते हैं तो तुम्हें हुक्म भी दे सकते हैं। और जब वे घुटनों के बल झुक सकते है तो तुम्हें ठोकर भी मार सकते हैं।

इसलिये अपना हिसाब किताब ठीक रखो ताकि तुम सोच सको कि इस चीज़ को खरीदने में तुम कैसे सफल हो सकते हो। मैं तुमसे एक बात और साफ साफ कह देना चाहती हूँ फिर इसके बाद मैं चली जाऊँगी कि जब कोई मेरे दर्जे की स्त्री अपने आपको

नजरअन्दाज हुआ पाती है तो वह अपराधी का खून तक अपने चेहरे पर मलने के लिये तैयार रहती है।"

और इस तरह कह कर वह गुस्से में भर कर वहाँ से चली गयी। बेचारी मारचैटा वहीं जमी सी परेशान खड़ी रह गयी। कुछ दिन और रानी ने इस मजबूत किले को तोड़ना चाहा और फिर यह देख कर कि उसकी कोशिशें बेकार जा रही हैं हवा में बिखर रही हैं तो उसने हवा में ही अपने शब्द कहने शुरू कर दिये। खाली उसाँसें भरनी शुरू कर दीं।

उसका प्यार घृणा में बदल गया। उसकी प्यारी चीज़ अब बदले में बदल गयी। और इस विचार के साथ उसने अपनी आँखों में नकली आँसू भरे हुए अपने पति के पास पहुँची और उससे बोली — "आपसे किसने कहा था कि हम अपनी आस्तीन में एक साँप पालें। यह किसने सोचा था कि नीच आलसी छोटे छोटे टुकड़े भी इतनी हिम्मत करने लगेंगे।

पर इस सबमें दोष आपका है जो आप उसे इस तरह सहलाते हैं। एक किसान के ऊपर भी कोई अगर उँगली उठाता है तो वह उसका सारा हाथ ले लेता है। पर जैसी सजा का वह अधिकारी है अगर आपने उसे वैसी सजा नहीं दी तो मैं अपने पिता के घर चली जाऊँगी। फिर न कभी मैं आपको देखूँगी और न कभी आपका नाम सुनूँगी।"

राजा बोला — "पर क्या किया है उसने।"

रानी बोली — "केवल कुछ नहीं। वह छोटा दुष्ट मुझसे मेरी शादी का कर्जा लेने आया था जो मैंने आपसे लिया है। वह भी बिना किसी आदर के बिना किसी डर के बिना किसी शर्म के मेरे सामने आने की हिम्मत कर सका।

और उसकी जबान यहाँ तक चल गयी कि वह मुझसे बिना कुछ दिये आपके राज्य में घुसने की इजाज़त माँगने लगा जहाँ आपने इज़्ज़त के साथ बीज बोये हैं।"

यह सुन कर राजा ने तो आव देखा न ताव और मारचैटा को गाँव के लोगों से पकड़वा दिया और बिना उसे कोई सफाई का मौका दिये हुए उसे फाँसी देने वाले के हवाले कर दिया। उसे सजा देने की जगह ले जाया गया।

उसे यह भी पता नहीं था कि उसका अपराध क्या है या उसने क्या बुरा काम किया है। सो उसने ज़ोर ज़ोर से रोना चिल्लाना शुरू कर दिया — "हे भगवान मैंने क्या किया है जिससे कि मेरी बेचारी गर्दन काटी जा रही है और मेरे इस अभागे शरीर को इतना कष्ट दिया जा रहा है।

यह बात मुझे यहीं खड़े खड़े कौन बता सकता है कि मैं इस मौत की जगह क्यों लाया गया हूँ जहाँ तीन फीट की रस्सी मेरी गर्दन के चारों तरफ है। अफसोस इतने बड़े दुख के समय कौन मुझे तसल्ली देगा। इस खतरे के समय कौन मेरी सहायता करेगा। इस फाँसी से मुझे कौन बचायेगा।"

तभी एक गूॅज सुनायी दी “इबिट”।

मारचैटा ने जब यह सुना तो उसे गुल की दी हुई अॅगूठी याद आयी और जब वह वहॉ से आ रही थी तो उसके शब्द याद आये उसने उसमें जड़े रत्न की तरफ देखा जो उसने आज तक नहीं देखा था तो उसको हवा में गूॅजती हुई एक आवाज तीन बार सुनायी दी “इसे जाने दो यह एक लड़की है।”

और यह इतनी तेज़ थी कि न तो पुलिस न सिपाही न दूकान वाले उस न्याय की जगह खड़े रह पाये। राजा ने जब इस आवाज को सुना जिसने महल की नींव तक को हिला दिया था तो उसने मारचैटा को अपने सामने लाने के लिये कहा।

और जब वह राजा के सामने आ गयी तो राजा ने उससे सच बताने के लिये कहा। उससे पूछा कि वह कौन है और इस देश में कैसे आयी।

और कोई चारा न देख कर उसने राजा को सब बता दिया कि कैसे वह पैदा हुई कैसे उसे महल में बन्द रखा गया कैसे उसे हवा उड़ा लायी कैसे उसने उसे एक गुल के घर के सामने ला कर उतार दिया। फिर कैसे वह गुल के घर से भागी जाते समय उससे गुल ने उससे क्या कहा। और फिर उसके और रानी के बीच क्या क्या हुआ।

और फिर यह न जानते हुए कि उससे क्या गलती हो गयी थी उसने अपने आपको खतरों से घिरा पाया – फॉसी के फन्दे के नीचे पाया।

राजा ने यह कहानी सुनी तो उसको बहुत पहले की एक कहानी याद आ गयी जो उसके दोस्त वैलेसकोसे[127] के राजा के साथ घटी थी।

उसने मारचैटा को भी पहचान लिया कि वह असल में कौन थी और अपनी पत्नी की बुराइयों को भी जान लिया जिसने उस बेचारी भोली भाली लड़की से इस तरह का व्यवहार किया। उसने तुरन्त ही उसके लिये हुक्म दिया कि उसके पैरों में पत्थर बॉध कर उसे समुद्र में फेंक दिया जाये।

फिर उसने मारचैटा के माता पिता को बुलवाया और उससे शादी कर ली जिसने सारी समस्या ही हल कर दी।

तूफान में फॅसे हुए जहाज़ के लिये भगवान अपने आप ही सुरक्षित बन्दरगाह ढूंढ लेते हैं

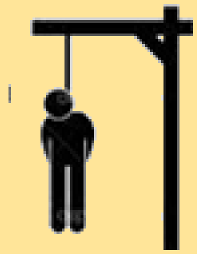

[127] Valletescosse – name of a place

16 4–10 घमंडी को सजा[128]

सरकोलुंगो के राजा की बेटी बैलो पीज़ के राजा को गद्दी से उतार देती है तो वह उससे बदला लेने का इरादा करता है। वह उसे बहुत बुरी हालत में ले आता है पर बाद में उससे शादी कर लेता है।

यह तो बहुत अच्छा हुआ कि सियोमैटैला जादूगर को बहुत जल्दी से ले आयी जिससे जलते हुए कहानी सुनने वालों पर पानी पड़ गया जिनकी लिवीला पर दया करने के लिये साँस तक रुक गयी थी। जब वह बच्ची खुश हुई तो कहानी सुनने वाले भी खुश हो गये।[129]

अब हर एक सुनने वाला सावधान हो गया था कि अब जाकोवा इस मुकाबले में उतरेगी। उसने भी अपनी कहानी को ज़िन्दादिल रखने के लिये अपनी कहानी शुरू की —

जो रस्सी को बहुत ज़्यादा कस कर खींचता है उसकी वह रस्सी टूट जाती है। जो अपना दुर्भाग्य ढूँढता है उसको बदकिस्मती और मुसीबतें और ज़्यादा मिलती हैं। जो पहाड़ की चोटी पर चढ़ना चाहता है वह अगर नीचे गिर जाता है तो उसी का नुकसान होता है।

ऐसा ही कुछ आप लोग इस कहानी में सुनेंगे जो मैं आपको अभी सुनाने जा रही हूँ कि एक लड़की के साथ क्या हुआ जिसने

---

[128] Pride Punished. Tale No 16. (Day 4, Diversion 10) Told by Jakova

[129] Read this story No 25 (4-9) "Raven" in my "Il Pentamerone 17-32" book

ताज और राजदंड का अपमान किया और वह घुड़साल तक आ गयी। पर जो भगवान सिर तोड़ता है वह उसके लिये मरहम भी देता है वही जो सजा देता है वह प्यार भी देता है और अगर मारता है तो मिठाई भी देता है।

यह बहुत पुरानी बात है कि सुरको लुंगो के राजा की एक बेटी थी जिसका नाम थ सिन्टीला।[130] वह चाँद की तरह सुन्दर थी पर उसके पास एक बूँद भी ऐसी सुन्दरता नहीं थी जिस पर उसे घमंड न हो।

उसे घमंड इतना ज़्यादा था कि वह किसी दूसरे को तो कुछ समझती ही नहीं थी। इसी लिये उसके पिता को उसके लिये ठीक दुलहा मिलना मुश्किल हो रहा था। चाहे वह कितना भी अच्छा कितना भी बहादुर क्यों न होता पर वह उसे खुश नहीं कर पाता।

बहुत सारे राजकुमार जो उसका हाथ माँगने आये थे उनमें से एक बैलो पैज़ का राजा[131] भी था। उसने कोई चीज़ करने से ऐसी नहीं छोड़ी जिसे वह सिन्टीला को खुश कर सकता हो। बल्कि वह जितना उसको खुश करना चाहता वह उससे उतनी ही नफरत करती जाती।

---

[130] Cintiella was the daughter of the King of Surco-lungo

[131] King of Bello-paese

जितना सस्ता वह उसे प्यार देता उतने ही बुरे ढंग से वह उसकी इच्छाओं के साथ खेलती। जितनी ज़्यादा वह उसकी प्रशंसा करता उसका दिल उसे उतना ही ज़्यादा माँगता।

ऐसा कोई दिन नहीं जाता जिस दिन राजा उससे यह न कहता हो — "ओ बेरहम। आशाओं के जितने तरबूज मैंने तुझे दिये जो सब सब्जियों में बदल गये पर यह तो बता कि मुझे लाल तरबूज कब मिलेगा। ओ जंगली और बेरहम स्त्री। तेरे बेरहमी के ये तूफान कब थमेंगे। कब मैं अनुकूल हवा पा कर अपने जहाज़ को तेरे सुन्दर बन्दरगाह पर लगा पाऊँगा। इतना सारी विनती करने के बाद मैं कब तेरे किले पर अपने प्यार का झंडा लगा पाऊँगा।"

पर ये सब शब्द तो हवा में उड़ जाते थे। उसकी आँखें इतनी तेज़ थीं कि वह पत्थर को भी भेद सकती थीं पर उसकी आहें सुनने के लिये उसके पास कान नहीं थे जो उसके प्यार में घायल और मारा हुआ था। बल्कि वह तो उसे गुस्से से देखती थी जैसे उसने कोई बुरा काम कर दिया हो या फिर उसको बागीचे से अंगूर तोड़ लिये हों।

आखिर जब राजा ने देखा कि सिन्टीला तो बिल्कुल ही पत्थर दिल है उसमें मिठास तो बिल्कुल ही नहीं है वह उसकी ज़रा भी परवाह नहीं करती तो वह अपने लोगों और अपना सामान ले कर यह कह कर वहाँ से अपने राज्य चला गया कि "मैं इस प्रेम के खेल से हमेशा के लिये दूर हटता हूँ।"

पर उसने कसम खायी कि वह इस लड़की से अपने अपमान का बदला जरूर लेगा जिसका दिल एक लड़की का दिल नहीं था बल्कि एक सैरासैन मूर का दिल था। वह उसे उसके साथ बुरा व्यवहार करने और उसकी हॅसी उड़ाने के लिये पछताने पर मजबूर कर देगा।

राजा उस देश से चला गया। वहॉ से जाने के बाद उसने अपनी दाढ़ी बढ़ा ली और अपना चेहरा और हाथ किसी गहरे रंग से रंग लिये और कुछ महीने बाद एक किसान के रूप में वहॉ आया और राजा के महल में माली के रूप में काम करने लगा। वह अपने नये काम को बड़ी वफादारी से करता।

कि एक दिन उसने सिन्टीला की खिड़की के नीचे एक ट्रे रखी जिसमें एक शाही पोशाक रखी हुई थी जो सोने के तारों से बुनी हुई थी और हीरे जड़ी थी। राजकुमारी की दासियों ने उस पोशाक को देखा तो वे जल्दी से दौड़ कर राजकुमारी के पास पहुॅचीं और जा कर उसे बताया कि उन्होंने क्या देखा था।

तो उसने माली के पास खबर भेजी कि क्या वह उस पोशाक को बेचने के लिये तैयार है। तो उसने जवाब दिया कि वह कोई सौदागर नहीं था और न ही पुराने कपड़े बेचता था। पर वह उसे उसे बिना किसी कीमत के दे देगा अगर राजकुमारी उसे अपने कमरे के बाहर एक रात सोने दे।

राजकुमारी की दासियों ने आ कर यह बात राजकुमारी से कही और कहा कि उसे केवल इस बात पर इस पोशाक को नहीं छोड़ना चाहिये। वे माली को सन्तुष्ट कर देंगी। वे इस सुन्दर पोशाक को ले कर ही रहेंगी जो एक रानी के पहनने के लायक है।

सिन्टीनैला अब उस आदमी की पकड़ में आ ही गयी थी जो उससे ज़्यादा अक्लमन्द था। उसने वह पोशाक ले ली और माली को उसकी इच्छा पूरी करने की इजाज़त दे दी।

अगली सुबह उसने फिर से वैसी ही एक नयी पोशाक राजकुमारी की खिड़की के नीचे रख दी। जैसे ही राजकुमारी ने उसे देखा तो फिर अपनी दासियों को उसके पास भेजा कि क्या वह उसे उसे बेचने के लिये तैयार है। वह उसे उसकी मुँहमाँगी कीमत देगी।

माली ने कहा कि वह उसे बेचेगा तो नहीं पर वह उसको ऐसे ही बिना किसी कीमत के दे देगा अगर वह उसे उसके अपने कमरे के बराबर वाले कमरे में एक रात सोने देगी। सिन्टीनैला ने वह पोशाक खरीदने के लिये उसे अपने कमरे के बराबर वाले कमरे में सोने की इजाज़त दे दी।

तीसरी सुबह सूरज निकलने से पहले ही राजा ने एक बहुत ही कीमती वेस्ट कोट राजकुमारी की खिड़की को नीचे रख दिया जो वैसे ही कपड़े का बना हुआ था जैसे कपड़े की उसकी पिछली दोनों पोशाकें बनी हुई थीं।

उसको देखते ही सिन्टीला को लगा कि यह वेस्ट कोट तो मेरे पास होना ही चाहिये। अगर यह मेरे पास नहीं है तो मैं सन्तुष्ट नहीं रह सकती। सो उसने फिर माली को बुलवाया और उससे कहा कि यह बहुत जरूरी है कि तुम वह वेस्ट कोट मुझे बेच दो जिसे मैंने बागीचे में देखा था और उसके लिये तुम मेरा दिल ले लो।

माली ने फिर वही जवाब दिया कि मैं इसे बेचूँगा नहीं मैं इसे और इसके साथ एक हीरों का हार आपको मुफ्त भेंट दे सकता हूँ अगर आप मुझे एक रात अपने कमरे में सोने दें।

चिन्टीला बोली "तुम तो बहुत ही शरारती आदमी हो। तुम्हें बाहर वाले कमरे में सोने से सन्तोष नहीं मिला तो तुम मेरे बराबर वाले कमरे में सोये और अब मेरे अपने कमरे में सोने की माँग कर रहे हो। और इसके बाद तुम मुझसे मेरे बिस्तर में सोने के लिये कहोगे।"

माली बोला — "ओ माई लेडी। मैं अपना वेस्ट कोट रखता हूँ और आप अपना कमरा रखिये। अगर आपकी इच्छा बदले तो आपको पता है कि आपको क्या करना है। मुझे जमीन पर सोने में कोई परेशानी नहीं है। अगर आपने वह हीरे का हार देखा होता जो मैं आपको दूँगा तो आप मेरे कहे की कीमत समझतीं।"

राजकुमारी कुछ तो अपने फायदे के लिये और कुछ अपनी दासियों के कहे में आ कर जिन्होंने कुत्ते को ऊपर चढ़ने में मदद की थी उसे अपनी इच्छा पूरी करने की इजाज़त दे दी।

जब शाम आयी और रात का अँधेरा चारों तरफ फैल गया माली वेस्ट कोट और हीरों का हार ले कर राजकुमारी के कमरे की तरफ चला और जा कर वे चीज़ें उसे दे दीं।

राजकुमारी ने उसे अपने कमरे में बुला लिया और एक कोने में बैठ जाने के लिये कहा और कहा — "अगर तुम मुझसे कुछ अच्छा व्यवहार चाहते हो तो बस अब तुम यहाँ बिल्कुल बिना हिले डुले बैठे रहो।"

और कोयले से फर्श पर एक निशान बना कर कहा — "अगर तुम इस निशान के बाहर आये तो बस तुम फिर देख लेना।"

फिर उसने अपनी दासियों से अपने बिस्तर के चारों तरफ परदे लगाने के लिये कहा और वह सोने चली गयी।

राजा माली तब तक इन्तजार करता रहा जब तक राजकुमारी सोयी। उसके सोने के बाद उसने सोचा कि अब प्रेम की दुनियाँ में काम करने का समय आ गया है। सो वह अपनी जगह से उठा और जा कर राजकुमारी के पास सो गया। इससे पहले कि राजकुमारी जागती उसने अपने प्रेम का फल तोड़ लिया।

जब वह जागी और उसने जाना कि उसके साथ क्या हो गया है तो एक गलती के लिये दो गलतियाँ करने की बजाय और माली को उसका बागीचा बर्बाद करने की सजा के लिये इस सबको स्वीकार कर लिया। उसे इस गलती में आनन्द महसूस हुआ।

जहाँ उसने ताज वाले सिरों को मना कर दिया था वहाँ एक बालों वाले पैर ने उसे हरा दिया। क्योंकि राजा को भी ऐसा लगा और राजकुमारी को भी ऐसा ही लगा। यह खेल चलता रहा और सिन्टीला को बच्चे की आशा हो गयी।

उसने देखा कि उसका पेट तो रोज ब रोज बड़ा और गोल होता जा रहा है। एक दिन माली से उसने कहा कि अगर उसके पिता को पता चल गया तो वह तो बर्बाद हो जायेगी। इसलिये उनको इस खतरे का जल्दी ही कोई उपाय सोचना चाहिये।

राजा माली ने कहा कि वह इसके अलावा और कोई उपाय नहीं सोच सकता सिवाय इसके कि वे यह देश छोड़ दें। वह उसे अपनी पुरानी पत्नी के पास ले चलेगा जहाँ वह उसे रहने की जगह देगी और वहीं उसके बच्चे की भी देखभाल करेगी।

सिन्टीला यह देख कर कि वह किस बुरी हालत में पहुँच गयी है अपने घमंड के पाप में दब कर रह गयी। वह दर दर की ठोकरें खाने पर मजबूर हो रही थी। उसने राजा माली की बात मान ली उसने अपना घर छोड़ा और अपने आपको अपनी किस्मत के सहारे छोड़ दिया।

राजा माली बहुत दूर तक ले जाने के बाद उसे अपने घर ले गया। उसने अपनी सारी कहानी अपनी माँ को बतायी और उससे कहा कि वह अभी इन सब बातों को छिपा कर रखे क्योंकि

सिन्टीला के उसके साथ किये गये व्यवहार का बदला वह खुद उसे देना चाहता था।

सो उसने उसे महल में एक घुड़साल में रख दिया जहाँ उसने उसे बड़ी खराब हालत में रखा। वहाँ उसको रोटी भी मुश्किल से मिलती थी।

एक दिन राजा ने अपनी दासियों से कहा कि जब वे रोटी के लिये आटा मलें तो सिन्टीला को अपनी सहायता के लिये बुला लें। और इस बीच उसने सिन्टीला से कहा कि वह किसी तरह अपनी और उसकी रोटी का इन्तजाम करे।

बेचारी सिन्टीला जब रोटी का आटा मलवाने के लिये महल में गयी तो वहाँ से वह एक अच्छा बड़ा रोटी का टुकड़ा चुराने में सफल हो गयी।

उसने उसे अपनी जेब में रखा ही था कि राजा अपने शाही कपड़े पहन कर वहाँ आ पहुँचा और अपनी दाासियों से पूछा कि इस स्त्री को महल के अन्दर किसने आने दिया। क्या उनको पता नहीं था कि वह तो एक दुष्ट के समान थी। और अगर मेरा कहना सच है तो तुम इसकी जेब में हाथ डाल कर देखो तुम्हें इसके अपराध का सबूत मिल जायेगा।

जैसा राजा ने कहा उन्होंने वैसा ही किया तो उन्हें उसकी जेब में रोटी का एक टुकड़ा मिल गया तो वे उसे शर्मिन्दा करने के लिये

उस पर चिल्लायीं। इस तरह का हॅसी मजाक सारा दिन चलता रहा।

जब रात आयी तो राजा ने एक बार फिर अपना वेश बदला और उसके पास गया। उसे दुखी देख कर वह बोला कि वह इस सबकी चिन्ता न करे क्योंकि जरूरत ही आदमी का बेरहम गुरू है। जैसा कि किसी टस्कन कवि ने कहा है —

कि एक भूखे भिखारी को ऐसा कुछ करना पड़ जाता है
जो अच्छी हालत में अगर दूसरे लोग करें तो वे अपने आपको ही अपराधी कहेंगे

इसलिये अगर भेड़िये को भूख लगती है तो वह जंगल से बाहर भागता है तो उसे ऐसा कुछ भी करने के लिये माफ कर देना चाहिये जो दूसरे लोग नहीं करते हों।

अब वह घर की मालकिन के पास जाये जो कई तरह के कपड़े काट रही थी और वहॉ जा कर उसकी कपड़ा काटने में सहायता कराये। अब क्योंकि उसके बच्चे के जन्म का समय पास आ रहा था तो वहॉ से वह अपने होने वाले बच्चे के लिये एक कपड़ा ही ले आये। क्योंकि बच्चे के लिये तो उसे बहुत सारी चीज़ें चाहिये।

सिन्टीला अब पति की कही बात का उल्लंघन तो नहीं कर सकती थी सो वह वहॉ चली गयी और जा कर दासियों की कपड़ा काटने में सहायता करने लगी। उसने उनमें से कुछ नैपकिन्स कमीजें टोपियॉ आदि उठा कर अपनी पोशाक में छिपा लीं।

पर राजा एक बार फिर वहाँ अपने शाही कपड़े पहने आ गया और उसने अपनी दाासियों को जैसे पहले रोटी बनवाने पर डॉटा था इस बार उससे कपड़ा कटवाने पर भी डॉटा।

उसने फिर से उसकी तलाशी लेने के लिये कहा तो फिर से उसकी पोशाक में चोरी किये गये कपड़े मिल गये। इस पर उसे फिर से अपमानजनक शब्द सुनने पड़े। वह अपनी घुड़साल में रोती हुई चली आयी।

तब राजा ने अपना रूप फिर से बदल कर माली का रूप रखा और उसके पीछे पीछे भागा गया तो उसे बहुत ही निराशा की हालत में पाया। उसने कहा कि वह इतनी दुखी न हो उसे तीसरी बार बच्चे के लिये कुछ लाने की कोशिश करनी चाहिये।

इसके लिये अब यह अच्छा मौका है क्योंकि रानी ने अपने बेटे की शादी किसी विदेशी लड़की से कर ली है तो रानी कुछ अच्छे कपड़े मँगवा कर उसे भेजने वाली है जैसे ब्रोकेड – सोने के तारों से बुने कपड़े। लोगों का कहना है कि दुलहिन बिल्कुल तुम्हारे साइज़ की है तो उनका विचार है कि वह कपड़े तुम्हारे साइज़ के काटें।

इसलिये अब तुम्हारे लिये काम आसान हो जायेगा। तुम अपने हाथ में कुछ चीज़ें ले कर देखना और कुछ कपड़े के टुकड़े ले आना तो उन्हें हम बेच लेंगे इससे हमारा काम काफी दिनों तक चलेगा।

सिन्टीला ने अपने पति का कहा माना और एक फुट सोने के तारों से बुना हुआ कपड़ा चुरा लिया। वह कपड़ा उसने छिपाया ही

था कि राजा फिर वहाँ आ गया और अपनी दासियों से उसकी तलाशी लेने के लिये कहा।

तलाशी लेने पर जब उसके पास ब्रोकेड का कपड़ा निकला तो राजा ने उसे फिर से शर्मनाक हालत में घर से बाहर निकलवा दिया।

फिर तुरन्त ही उसने माली का रूप रखा और उसे तसल्ली देने गया क्योंकि अगर एक रूप में वह उसे सजा दे रहा था तो दूसरे रूप में उसको तसल्ली देना भी तो उसी का काम था ताकि वह बिल्कुल ही निराश न हो जाये।

पर सिन्टीला ने जो उसके साथ हुआ था उसे देखते हुए सोचा कि यह सब उसके जिद्दीपने और घमंड की सजा उसे भगवान ही दे रहा था। सारे राजाओं और राजकुमारों को अपने पैरों के नीचे का बिछा कपड़ा बता कर उसको भी अब वैसी ही सजा मिल रही थी क्योंकि उसने अपने पिता का अपमान किया था उन राजाओं का अपमान किया था।

नौकरों के इस व्यवहार से उसका चेहरा लाल पड़ गया। उसका गुस्सा और दुख इतना बढ़ा कि उसके बच्चा होने का समय आ गया और वह चारपायी पर लेट गयी। रानी माँ को इस बात की तुरन्त ही खबर दी गयी तो उसने मारचैटा को अपने कमरे में बुला लिया और उसकी इस दयनीय हालत में उसे तसल्ली दी।

अब सिन्टीला मोती जड़े सोने के पलंग पर लेटी थी। अपनी घुड़साल को उस कमरे में बदला देख कर बहुत आश्चर्य हुआ और उसने इसकी बहुत तारीफ भी की। उसने देखा कि उसका भूसे का बिस्तर एक शाही बिस्तर में बदल गया था। उस कमरे में सोने के तारों से बुने हुए कपड़े टॅगे हुए थे।

उसे यही नहीं पता था कि उसे क्या हो गया था। उसको अच्छे अच्छे पेय और खाने के लिये ताकत वाली चीज़ें दी जा रही थीं। भगवान की कृपा से बिना किसी परेशानी के उसने दो बेटों को जन्म दिया। वैसे बच्चे पहले कभी किसी ने नहीं देखे होंगे।

जैसे ही उसके बच्चे हो गये तो राजा वहॉ आया और बोला — "और तुम सब लोगों की अक्ल को क्या हो गया है कि इस नीची जाति की स्त्री को तुम लोगों ने इतना बढ़िया राजसी पलंग दे दिया। अब इसे जल्दी से यहॉ से इसकी जगह भेज दो और इस कमरे में रोज़मैरी की खुशबू छिड़को ताकि इस कीड़े की बदबू यहॉ न आ सके।"

यह सुन कर रानी बोली — "अब बस भी करो मेरे बेटे। तुम्हारा गुस्सा और इसे सताना अब काफी हो गया जो तुमने इस बच्ची को दिया। अब तो तुम्हें सन्तुष्ट हो जाना चाहिये। तुम तो उसे चिथड़ों तक ले आये हो।

तुमने उसके बहुत इम्तिहान लिये हैं जो अब तक तुमने उन सब अपमानों के बदले में लिये है जो इसने अपने पिता के महल में

तुम्हारे किये थे। उसका कर्जा तो इन दोनों प्यारे बच्चों को चुका देना चाहिये जो उसने तुम्हें दिये हैं।”

कह कर उसने बच्चों को बुलवाया जो दुनियाँ में बहुत सुन्दर थे और उन्हें उसके गले से लगाने के लिये आगे बढ़ा दिया। राजा ने जब उन सुन्दर बच्चों को देखा तो उस दिल पिघल गया तो उसने अपनी छाती से लगाया और सिन्टीला को चूम लिया।

उसने भी उसकी असलियत पहचान ली कि वह कौन था। राजा ने उससे कहा कि यह सब उसने उसके अपमान के बदले में उसे पाठ पढ़ाने के लिये किया। अबसे वह उसे अपने ताज में जड़ कर रखेगा। रानी ने भी उसको अपनी बेटी की तरह गले से लगाया। सिन्टीला भी अपने दोनों बेटों को देख कर बहुत खुश थी। अब वह अपना पुराना गुस्सा भूल गयी थी। अब उसने सोच लिया था कि अबसे वह अपनी नाव के मस्तूल नीचे कर के खेयेगी।

घमंड की बेटी तो बरबाद ही होती है

चौथे दिन की कहानियाँ खत्म हो चुकी थीं। राजकुमार सिन्टीला की कहानी सुन कर कुछ दुखी था।

17 5–1 बतख[132]

लीला और लौला बाजार से एक बतख खरीदती हैं जो सोने के सिक्के देती है। एक पड़ोसन उस बतख को उधार मॉगती है पर वहॉ तो वह सोने के सिक्के नहीं देती तो वह उसको मारने की कोशिश करती है और उसे खिड़की से बाहर फेंक देती है। बतख मरती नहीं है वह एक राजकुमार का पिछवाड़ा पकड़ लेती है जो प्रकृति की पुकार का जवाब दे रहा था। वह बहुत ज़ोर से सहायता के लिये चिल्लाता है पर वहॉ का कोई भी आदमी उसको खींच कर छुड़ाने में नाकामयाब रहता है। तब लौला ही उसको वहॉ से छुड़ा पाती है। बाद में राजकुमार लौला से शादी कर लेता है।

अक्लमन्दों की कही यह कहावत बहुत सच है कि "दस्तकारी वाले से ताला बनाने वाले तक, गवैयों से गवैयों तक, पड़ोसी से पड़ोसी तक और भिखारी से भिखारी तक" दुनियॉ की कितनी भी बड़ी इमारत में कहीं कोई ऐसा छेद नहीं है जिसमें से जलन नाम का मकड़ा अपना जाला नहीं बुनता। जो अपने पड़ोसी की बर्बादी पर ही ज़िन्दा रहता है। जैसा कि आप लोग अभी इस कहानी में सुनेंगे जो मैं आपको अभी सुनाने जा रही हूॅ।

एक बार की बात है कि कहीं दो बहिनें रहा करती थीं जो बहुत गरीब थीं। वे इतनी गरीब थीं कि वे अपना गुजारा सुबह से शाम तक सूत कात कर ही करती थीं। उस सूत को वे बाजार में बेच देती थी और उससे जो कमाई होती थी बस वही उनकी आमदनी थी।

---

[132] The Goose. Tale No 17. (Day 5, Tale No 1) Told by Zeza.

इस तरह की ज़िन्दगी वे किसी तरह खींचे जा रही थीं पर धीरे धीरे अब यह नामुमकिन सा होता जा रहा था। कि उस दिन जरूरत की गेंद उनको कुछ इज़्ज़त दिलवाने वाली थी। इस वजह से भगवान ने जो अच्छे कामों का अच्छा बदला देता है और बुराइयों की सजा देने में बहुत आलसी है इन दोनों लड़कियों के दिमाग में यह घुसाया कि आज वे बाजार जायें और अपना कुछ सूत बेच कर आयें।

उन्होंने ऐसा ही किया। वे बाजार गयीं और अपने सूत बेच कर जो उनको पैसे मिले उससे एक बतख खरीद लायीं। बतख को वे घर ले आयीं।

वे उस बतख को बहुत प्यार करती थीं। बहुत अच्छे से खाना खिलाती थीं और अपने पास अपने बिस्तर में ही सुलाती थीं जैसे कि वह उनकी बहिन हो।

पर आज को जाने दो कल की तरफ देखो। एक दिन अच्छा दिन आया कि बतख ने सोने के सिक्के देने शुरू कर दिये।[133] और वह ये सिक्के कुछ ऐसे देती रही कि उन लड़कियों के पास ये सिक्के एक बड़ा बक्सा भर कर इकट्ठे हो गये।

अब वे लड़कियाँ सिर उठा कर चलती थीं। अच्छी खाती पीती लगती थीं और खुश दिखायी देती थीं। उनकी यह अमीरी इतनी

[133] Through its shit.

ज़्यादा दिखायी देने लगी थी कि लोग उनके बारे में बात करने लगे थे।

एक दिन कुछ लोगों ने मिल कर बात की — "तुमने देखा ओ वास्ता[134]। ये लीला और लौला जो कुछ दिन पहले तक भूख से मर रही थीं अब कितनी अच्छी खाती पीती और अच्छे कपड़े पहने दिखायी देती हैं। वे तो इतने आराम से रहती दिखायी देती हैं जैसे कुलीन स्त्रियाँ रहती हैं।

क्या तुमने उनकी खिड़कियाँ देखी हैं जो हमेशा चिड़ियों और गाय के माँस से सजी रहती हैं जो तुम्हारे चेहरों की तरफ घूरती रहती हैं। यह सब क्या हो सकता है। या तो उनके हाथ कोई खजाना लग गया है या उनको कोई भंडार मिल गया है।"

वास्ता बोली — "मुझे तो खुद ही उनकी इस बढ़ती हुई शान पर बहुत आश्चर्य हो रहा है। पर्ल[135] जब वे डूबने जा रही थीं तब मैंने उनको इस शानदार हालत में देखा। यह तो मुझे एक सपना सा लगता है।"

उन्होंने आपस में ये बातें कीं और जलन की वजह से यही उन्होंने दूसरों से भी कहा। सो उन्होंने उस मकान के एक कमरे में जिसमें वे दोनों लड़कियाँ रहती थी एक छेद बनाया ताकि वे अपने

[134] Vasta – name of an Italian female

[135] Pearl – name of an Italian female

घर में क्या क्या करती हैं इसकी खबर रख सकें और अपनी उत्सुकता शान्त कर सकें।

उन्होंने अपनी यह निगरानी इतने दिनों तक जारी रखी कि एक दिन उनको यह पता चल ही गया। एक शाम जब सूरज दिन को आराम देने के लिये अपनी किरनों को इन्डियन सागर से मार मार कर भगा रहा था तो उन्होंने देखा कि लीला और लौला दोनों फर्श पर एक चादर बिछा रही थीं।

फिर वे बतख को वहाँ ले कर आयीं और चादर के ऊपर ले गयीं। जैसे ही बतख चादर पर आयी कि उसने सोने के सिक्के देने शुरू कर दिये जब तक कि उसकी आँखों के गोले बाहर नहीं निकल आये।

जब सुबह हुई और अपोलो[136] अपनी सुनहरी छड़ी के साथ सायों को भगाने के लिये बाहर आया तब वास्ता लीला और लौला से मिलने के लिये उनके घर आयी। काफी देर तक घुमा फिरा कर बात करने के बाद ही वह अपने उद्देश्य पर आयी।

उसने उनसे उनकी बतख दो घंटों के लिये उधार माँगी ताकि वे अपने घर के लिये बतख के कुछ बच्चे पैदा कर सकें। उसने उनसे इतनी भीख माँगी इतनी प्रार्थना की और इतनी जिद की कि वे दोनों सीधी सी लड़कियाँ उसे मना नहीं कर सकीं।

[136] Apollo is the Greek god of music, poetry, light, prophecy, and medicine. He is one of the Twelve Olympian gods who live on Mount Olympus. Artemis, the Greek goddess of hunting, is his twin sister. He was the patron god of the city of Delphi.

कुछ तो इस वजह से कि उनको मना करना आता नहीं था और कुछ इस वजह से कि उनको लगा कि फिर सारे गॉव में बातें होंगी। सो उन्होंने बतख को उसे इस शर्त पर दे दिया कि नियत समय पर वे उसे वापस दे जायेगी।

वास्ता बतख को ले कर घर चली गयी जहॉ उसके दूसरे दोस्त उसका इन्तजार कर रहे थे। वास्ता के आने पर उन सबने वहॉ एक साफ चादर बिछायी औत बतख को उस पर घूमने के लिये छोड़ दिया। पर लो वहॉ तो सिक्का निकलने की बजाय गन्दगी निकल पड़ी। जिससे उनकी चादर पर सारे गहरे पीले रंग का बदबूदार पदार्थ निकल पड़ा जिससे उनका सारा घर महक गया।

जब उन्होंने यह सब देखा तो उसे ठीक से खिलाना चाहा ताकि वह उनके लिये लैपिस लज़ूली[137] बना सके जो उन्हें चाहिये थी। अब उन्होंने उसे इतना अच्छा और इतना सारा खिलाया कि वह उसके गले तक आ गया।

उसके बाद उन्होंने उसे फिर से एक साफ चादर पर रख दिया। पर बतख को पहले दस्त लग रहे थे तो उसे अबकी बार एक और तरह के दस्त लग गये। वह उन सबको पचा गयी थी।

यह देख कर वास्ता और उसकी दोस्तों को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने उसकी गर्दन मरोड़ कर उसे एक ऐसी गली में फेंक

[137] Lapis Lazuli – a kind of valuable gem

दिया जहाँ वे अपना कूड़ा फेंकते थे और जहाँ से वह बाहर नहीं जा सकती थी।

पर होता तो वही है जो किस्मत में लिखा रहता है। बीन वहाँ भी उग आती है जहाँ उसके उगने की आशा भी नहीं होती। उधर से एक राजा का बेटा जा रहा था जो शिकार खेलने और चिड़ियें मारने के लिये निकला था।

रास्ते में उसने अपने सईस से घोड़े को और उसकी तलवार को थामने के लिये कहा क्योंकि उसे दीर्घशंका के लिये जाना था। सो वह उस गली में घुसा और अपना काम खत्म कर के अपनी जेब में हाथ डाला तो उसे वहाँ सफाई के लिये कोई कागज नहीं मिला तो उसे वह मरी हुई बतख दिखायी दे गयी। उसने उसी को इस काम के लिये इस्तेमाल कर लिया।

वह बतख अभी तक मरी नहीं थी सो उसने अपना सिर घुमाया और राजकुमार के पिछवाड़े का माँस वाला हिस्सा अपनी चोंच से पकड़ लिया और उसे छोड़ ही नहीं रही थी। राजकुमार बहुत ज़ोर से चिल्लाया तो उसका एक नौकर उसकी सहायता के लिये वहाँ दौड़ा दौड़ा आया।

उसने बतख को खींच कर उससे राजकुमार को छुड़ाने की कोशिश की पर बेकार। उसने तो अपना शिकार ऐसे पकड़ रखा था जैसे हल्के पंखों को पकड़ रखा हो।

राजकुमार से अब दर्द सहा नहीं जा रहा था। उसने देखा कि उसका नौकर भी कई बार कोशिश कर चुका था पर उससे कुछ हो नहीं पा रहा था तो उसने उनसे कहा कि वे उसे उठा लें और उसे उसके राजमहल ले चलें। जहाँ पहुँच कर उसने कई डाक्टरों और साधु सन्तों को बुलाया ताकि वे उसे बतख से मुक्ति दिला सके।

उन्होंने उसके घाव पर कई तरह का पाउडर छिड़का मरहम लगाया पर फिर भी उसे आराम नहीं आया। उन्होंने देखा कि बतख तो एक जोंक की तरह थी और उसको इतनी आसानी से छोड़ने वाली नहीं थी।

उन्होंने सिरका भी डाला पर वह जोंक तो वहाँ से हटे ही नहीं। तब राजकुमार अपने देश में यह ढिंढोरा पिटवा फिया कि जो कोई भी राजकुमार को इस बतख से छुटकारा दिलवा देगा अगर वह कोई आदमी होगा तो वह उसे अपना आधा राज्य दे देगा और अगर कोई स्त्री होगी तो वह उससे शादी कर उसे अपनी रानी बना लेगा।

सारे लोग उसका यह ऐलान सुन कर महल के दरवाजे पर शहद की मक्खियों की तरह इकट्ठे हो गये। अब लोग जितना ज़्यादा उसको छुड़ाने की कोशिश करते वह उतना ही ज़्यादा उसके पिछवाड़े से चिपकी हुई थी और वहाँ दर्द कर रही थी।

ऐसा लग रहा था जैसे गैलैन के सारे नुस्खे हिप्पोक्रेट्स की सारी दवाऐं और मैसोक की दवाऐं सभी कुछ राजकुमार के ऊपर कोशिश

कर ली गयीं पर फिर भी वह बतख राजकुमार का पिछवाड़ा नहीं छोड़ रही थी।

भगवान के विधान से बहुत सारे लोगों के साथ छोटी बहिन लौला भी इस काम के लिये राजकुमार के महल आयी तो जैसे ही उसने बतख को देखा तो वह उसे पहचान गयी और चिल्लायी "ओ मेरी निओफाटैला ओ मेरी निओफाटैला।"

बतख ने जैसे ही अपनी प्यारी मालकिन की आवाज सुनी तो उसने अपना शिकार छोड़ दिया और मालकिन से मिलने के लिये उसे सहलाने के लिये उधर की तरफ भाग ली। वह राजकुमार का पिछवाड़ा छोड़ कर उस देहातिन लड़की के पास जाने में बहुत खुश थी।

राजकुमार ने जब यह आश्चर्यजनक दृश्य देखा तो वह यह जानने के लिये उत्सुक हो उठा कि यह सब कैसे हुआ। तब लौला ने उसे शुरू से ले कर आखीर तक की कहानी सुनायी। जब वह यह बताने पर आयी कि उसने दोस्तों पर चाल कैसे खेली तब तो वह हॅसते हॅसते लोटपोट ही हो गया।

फिर उसने लोगों से कहा कि वे उसके उन दोस्तों को पकड़ लें उन्हें कोड़े लगायें और उन्हें राज्य से बाहर निकाल दें। उसने लौला से शादी कर ली। उसके साथ में वह बतख भी आ गयी जो दहेज में बहुत सारा सोना ले कर आयी थी और लीला की शादी उसने एक

बहुत ही अमीर आदमी से करा दी। फिर वे सब बहुत खुशी खुशी रहे।

दोस्तों के उनके अमीर बनने के रास्ते में बाधा बनने के बावजूद जो भगवान ने उनके लिये खोला था उन्होंने उनके लिये दूसरा रास्ता खोल दिया जिनमें से एक तो रानी ही बन गयी। आखीर में यह पता चलता है कि —

बाधाऐं अक्सर ही सहायक होती हैं

18 5–6 बुद्धिमान स्त्री[138]

एक बैरन की बेटी सैपिया एक राजा के बेटे सैनज़ूलो को उसको होशियार बनाने के लिये पढ़ाती है जो वर्णमाला के अक्षर तक अपने दिमाग में नहीं रख पाता। इसलिये वह उससे डॉट खाता है तो वह उससे बदला लेने की सोचता है और बदला लेने के लिये उससे शादी कर लेता है। सैपिया उसे उसको बिना बताये कई बार गुस्सा दिलाती है और उससे तीन बच्चे पैदा करती है। बाद में वे एक दूसरे से मेल कर लेते हैं और एक साथ रहने लगते हैं।

राजकुमार और राजकुमारी दोनों बहुत खुश थे कि इतने दुखों के बावजूद तालिया का अन्त अच्छा रहा क्योंकि उनको यह विश्वास ही नहीं था कि इतनी परेशानियों के बाद भी उसकै नैया पार लग जायेगी। अब उन्होंने ऐन्टोनैला को उसका काम करने के लिये कहा और उसे उसकी कहानी सुनाने के लिये कहा तो उसने यह कहानी सुनायी —

इस दुनियॉ में तीन प्रकार के अज्ञानी पाये जाते हैं जिनको ओवन में रखना किसी और से ज़्यादा जरूरी है। पहला तो वह जो जानता ही नहीं है। दूसरा वह जिसे जानना चाहिये पर वह जानना भी नहीं चाहता। और तीसरा वह जो केवल दिखाता है कि वह सब कुछ जानता है।

मैं यहॉ दूसरे किस्म के आदमियों की बात कर रही हूॅ क्योंकि जो अपने दिमाग में किसी तरह का ज्ञान अन्दर नहीं घुसने देता वह

---

[138] The Wise Woman. Tale No 18. (Day 5, Diversion 6) Told by Antonella

हर उस आदमी से नफरत करता है जो उसे सिखाना चाहता है और नये नीरो[139] की तरह से रोटी कमाने के साधन से अपने आपको वंचित रखना चाहता है।

एक बार की बात है कि कैस्टीलो च्यूसो का एक राजा था। उसका एक बेटा था जो बिल्कुल ही खरदिमाग था। उसको ए बी सी भी नहीं सिखायी जा सकी थी। क्योंकि अगर उससे कोई अक्षरों की या कुछ सीखने की बात करता तो वह बहुत ही परेशान हो जाता और पागलों की तरह से बर्ताव करने लगता और फिर उसके ऊपर न तो पिटायी न कुछ कहना और न कोई धमकी ही काम करती।

इस बात से उसका पिता बहुत दुखी रहता था और इस दुख और गुस्से से वह सूज सूज कर मेंढक जैसा हो गया था। उसकी समझ में ही नहीं आता था कि वह उसकी अक्ल को कैसे जगाये क्योंकि वह अपना राज्य एक ऐसे बेपढ़े लिखे आदमी के हाथ में छोड़ कर जाना नहीं चाहता था। क्योंकि वह यह भी जानता था कि अज्ञानता और राज्य कभी एक साथ नहीं रह सकते।

उसी समय उसके राज्य की एक बैरनैस सैन्ज़ा[140] की बेटी थी जो बहुत होशियार थी। उसने 13 साल की उम्र में ही काफी नाम

[139] Nero

[140] Baroness Cenza – Baron (Baroness feminine) is a respectable status in Imperial kingdoms.

कमा लिया था और सैपिया के नाम से मशहूर हो गयी थी जिसका मतलब होता है अक्लमन्द लड़की।

उसमें और भी बहुत से गुण थे जिनकी चर्चा राजा तक पहुँच चुकी थी। तो राजा ने सोचा कि वह अपने बेटे को इस विश्वास के साथ बैरनैस के पास भेजेगा कि संगत कुछ असर तो लायेगी ही जब वह उसके बेटे को अपनी बेटी के साथ बड़ा करेगी। शायद वह वहाँ कुछ अच्छा सीख सके। सो उसने उसे बैरनैस के महल भेज दिया।

जब वह वहाँ पहुँचा तो सैपिया ने उसे सबसे पहले क्रौस का निशान बनाना सिखाया। पर यह देख कर कि उसके पीछे वह उसके लिये कुछ अच्छा नहीं सोच रहा था और एक कान से सुन रहा था और दूसरे कान से निकाल रहा था एक दिन उसने उसे एक थप्पड़ मार दिया।

इस बात पर कारलूचो[141] को बहुत बुरा लग गया। जो उसने उसकी मेहरबानियों के लिये नहीं किया वह उसने अपनी शर्मिन्दगी के लिये किया। कुछ महीनों में वह पढ़ना सीख गया। और कुछ समय बाद उसे व्याकरण भी आ गयी और वह उसके सारे नियम भी सीख गया।

यह देख कर उसका पिता बहुत खुश हुआ और उसने उसे बैरनैस के घर से बुला लिया और उसे दूसरी चीज़ें पढ़ने के लिये

---

[141] Carluccio – name of the Prince

भेज दिया। समय के साथ साथ वह अपने राज्य का सबसे अक्लमन्द आदमी बन गया।

पर जो थप्पड़ उसने सैपिया से खाया था वह उसे नहीं भूला था। वह जब सोता तभी भी उसके सपने में आता। उसने तय कर लिया कि या तो वह उसका बदला लेगा या फिर अपनी जान दे देगा।

इस बीच सैपिया भी अपनी शादी की उम्र तक पहुँच गयी थी और राजकुमार ने जो अब पलीते में आग लगाने के लिये तैयार खड़ा था इस मौके का फायदा उठाया।

एक दिन उसने अपने पिता से कहा — "ओ माई लौर्ड। मैं इस बात को मानता हूँ कि मैंने अपना यह शरीर आप ही से पाया है और इसके लिये मैं आपका बहुत ऋणी भी हूँ। पर सैपिया जिसने मेरे व्यक्तित्व और योग्यता को बनाया और उभारा है उसके प्रति भी मैं बहुत ऋणी हूँ।

मैं उसका यह कर्जा चुकाने का कोई और साधन तो नहीं देख पाता सिवाय इसके कि अगर आप खुश हों तो मैं उससे शादी कर लूँ। इससे आपको भी यह विश्वास रहेगा कि आपने मेरे ऊपर एक अच्छा संरक्षक नियुक्त कर दिया है।"

राजा ने जब उसका यह प्रस्ताव सुना तो वह बोला — "मेरे बेटे। हालाँकि सैपिया तुम्हारे बराबर के दर्जे की नहीं है फिर भी उसके अन्दर जो गुण हैं वह हमारे खून के बराबर के हैं वह हमारे

घर में शादी करने लायक है। सो अगर तुम खुश हो तो मैं भी खुश हूँ और इस तरह मैं समझूँगा कि मैंने उसका कर्जा उतार दिया।"

उसके बाद बैरनैस को बुलवाया गया उससे शादी की बात पक्की की गयी और शादी की दावत का इन्तजाम हो गया। उसके बाद राजकुमार ने अपने पिता राजा से कहा कि वह उसे अपनी पत्नी के साथ अपने अलग महल में रहने की इजाज़त दें।

राजा ने अपने बेटे को खुश रखने के लिये उसके लिये अपने महल से अलग एक बहुत सुन्दर महल बनवा दिया जहाँ वह अपनी पत्नी के साथ अकेला रह सके।

राजकुमार अपनी पत्नी को वहाँ ले गया और ले जा कर एक कमरे में बन्द कर दिया जहाँ वह उसे बहुत कम खाना देता था। इसके अलावा उसको बुरी तरह से रखने के लिये वह और जो कुछ भी कर सकता था वह वह सब करता था।

उसने उसके साथ इतना खराब व्यवहार किया कि वह स्त्री बेचारी बहुत निराश हो गयी। उसको बेचारी को तो यह भी पता नहीं था कि उसके साथ किये जाने वाले इस बुरे व्यवहार की जो उसके साथ घर में घुसते ही शुरू कर दिया था वजह क्या थी। उसका कुसूर क्या था।

एक दिन राजकुमार की यह बहुत ज़ोर की इच्छा हुई कि वह सैपिया को देखे सो वह उसके कमरे में आया और उससे पूछा कि वह कैसी है।

तो सैपिया बोली — "अपना हाथ मेरे पेट पर रख कर देखो तब तुम्हें पता चलेगा कि मैं कैसे रहती हूँ। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है। तुम मेरे साथ कुत्ते से भी गया बीता बर्ताव क्यों कर रहे हो। तुमने मुझसे शादी ही क्यों की। क्या इसलिये कि तुम मेरे साथ एक दासी की तरह बर्ताव कर सको।"

यह सुन कर राजकुमार बोला — "क्या तुम नहीं जानती कि जो आदमी अपराध करता है वह तो उसे रेत पर लिखता है। पर उसका क्या जिसे वह संगमरमर के पत्थर पर लिखा हुआ मिलता है।

क्या तुम्हें याद नहीं है कि जब तुम मुझे पढ़ना सिखाना चाहती थीं तो मैंने तुम्हें अपनी पत्नी इसी लिये बनाया ताकि मैं तुम्हें ज़िन्दगी भर बदले की चटनी में रखना चाहता था क्योंकि तुमने मुझे थप्पड़ मारा था।"

सैपिया बोली — "तो इसका मतलब यह हुआ कि अगर मैंने अच्छाई बोयी तो मैं बुराई काटूँ। अगर मैंने तुम्हें एक थप्पड़ मारा तो केवल इसलिये कि तुम एक गधे थे और मुझे तुम्हें अक्लमन्द बनाना था। तुमको पता होना चाहिये कि जो तुम्हें प्यार करता है वह तुम्हें रुला भी सकता है और जो तुमसे नफरत करता है वह तुम्हें हॅसा सकता है।"

अगर राजकुमार पहले उसके थप्पड़ मारने पर गुस्सा था तो अब वह और ज़्यादा गुस्सा हो गया क्योंकि वह अपनी अज्ञानता के लिये डॉटा जा रहा था। क्योंकि वह सोच रहा था कि सैपिया खुद इस

गलती की जिम्मेदार थी। बजाय इसके उसने देखा कि वह एक शिकारी मुर्गे की तरह उसकी हर बात का जवाब दे रही थी।

सो वह उसे पहले से भी बुरे हाल में छोड़ कर वहाँ से चला गया। पर कुछ दिन बाद वह फिर लौटा तो उसने उसे फिर उसी मूड में पाया। उस बार वह उससे और ज़्यादा गुस्सा हो कर गया। अबकी बार उसने सोच लिया था कि उसको अपने काम का फल भुगतना ही चाहिये।

इस बीच राजा शहीद हो गया था सो अब राजकुमार अकेला ही सारे राज्य का मालिक बन गया था। सो वह उसे खुद देखने के लिये गया। उसने नाइट्स कुलीन लोग और सिपाहियों को अपने साथ आने का हुक्म दिया और उनको साथ ले कर चला गया।

इधर बैरनैस को पता चला कि उसकी बेटी कितनी मुश्किल की ज़िन्दगी जी रही है सो इस बुराई का इलाज करने के लिये उसने राजा के महल के नीचे एक सुरंग बनाने का हुक्म दिया जिसमें से हो कर अब वह उसको खाना ला सकती थी।

उसको पता चला कि राजकुमार तो किसी यात्रा पर जाने वाला है तो उसके जाने से कुछ दिन पहले ही उसने कुछ नयी गाड़ियाँ और नये कीमती कपड़े तैयार करवाये फिर अपनी बेटी को लौर्ड और उनकी पत्नियों के साथ एक छोटे रास्ते से वहीं भेज दिया जहाँ

उसका पति जा रहा था। उसने अपनी बेटी के लिये जहाँ उसका पति ठहरने वाला था वहीं एक महल का इन्तजाम भी कर दिया।

अब सैपिया अपने बढ़िया कपड़े पहन कर उस महल की खिड़की में खड़ी हो गयी। जब राजा अपने महल में आया तो उसने इस फूल को देखा तो वह तो पहली ही बार में उससे प्यार कर बैठा।

उसने उसे अपने काबू में करने के लिये हर सम्भव कोशिश की पर ऐसा न हो सका और वह उसे एक बच्चे के साथ छोड़ गया। जाने से पहले वह उसे अपने प्यार की निशानी के रूप में गले का एक हार दे गया। फिर वह वहाँ से अपने राज्य के दूसरे शहर को देखने चला गया।

सैपिया वहाँ से अपने घर चली गयी। नौ महीने बाद उसने एक बेटे को जन्म दिया। उधर राजा घूम फिर कर अपने राज्य की राजधानी लौटा।

उसने सोचा कि सैपिया तो अब तक मर गयी होगी सो वह उसे देखने आया पर उसने देखा तो वह तो पहले से भी ताजा और सुन्दर दिखायी दे रही थी। बल्कि वह पहले से और ज़्यादा जिद्दी भी हो गयी थी।

उसने फिर कहा कि वह थप्पड़ तो उसे अक्लमन्द बनाने के लिये था। जब वह एक गधा था तब उसने उसके गाल पर अपनी पाँचों उँगलियों का निशान छोड़ा था।

राजा फिर से गुस्से में भर कर वहाँ से अपने लोगों को साथ ले कर अपने राज्य की दूसरी जगहों को देखने के लिये चला गया। सैपिया ने भी अपनी माँ की सलाह पर फिर से वैसा ही किया जैसा उसने पिछली बार किया था।

एक बार फिर उसने अपने पति के साथ आनन्द किया तो उसके पति ने उसे एक बहुत ही कीमती रत्न दिया जिसे वह अपने सिर में लगा सकती थी। इस बार भी उसको बच्चे की आशा हो गयी और उसने एक और बेटे को जन्म दिया और अपने घर वापस आ गयी।

ऐसा ही उसके साथ तीसरी बार भी हुआ। इस बार उसके पति ने उसे कीमती रत्न जड़े एक सोने की मोटी सी जंजीर दी और उसने एक बेटी को जन्म दिया।

राजा अपनी यात्रा से वापस लौट आया था। उसने सुना कि वे लोग उसकी पत्नी को दफ़नाने जा रहे थे। वास्तव में बैरनैस ने अपनी बेटी को ऐसा कुछ पिला दिया था जिससे वह सो गयी थी और यह घोषित कर दिया गया कि वह मर गयी।

जब वे लोग उसे दफ़ना चुके तो वह बाद में अपनी बेटी के शरीर को वहाँ से निकाल लायी और उसे अपने महल में छिपा लिया।

कुछ समय बाद राजा के महल में एक त्यौहार मनाया गया जिसमें एक बहुत बड़ी स्त्री से उसकी शादी की बात तय की गयी।

वह भी महल में आयी हुई थी। इस मौके पर बहुत सारी दावतें हुई बहुत आनन्द किया गया।

इन दावतों में से एक दावत में सैपिया एक कमरे में अपने तीनों बच्चों के साथ खड़ी हुई थी जो खुद ही तीन रत्नों के समान थे। वह वहाँ राजा के पैरों पर गिर कर माफी माँगने लगी और न्याय की दुहाई देने लगी कि उसके तीनों बच्चों से उनके शाही अधिकार न छीने जायें क्योंकि वे उसी का माँस और खून थे।

राजा तो उन्हें आश्चर्य से देखता हुआ खड़ा का खड़ा रह गया जैसे कोई सपना देख रहा हो। यह देख कर कि सैपिया का ज्ञान उससे कहीं ज़्यादा था और तारों तक पहुँच रहा था और तीन सुन्दर बच्चों को देख कर जो उसके बुढ़ापे का सहारा बनते उसका दिल पिघल गया।

उसने वह स्त्री अपने भाई को दे दी और साथ में उसको बहुत बड़ा राज्य भी दे दिया। फिर उसने सैपिया को गले लगा लिया और दुनियाँ को यह बता दिया कि —

अक्लमन्द आदमी सितारों पर राज करता है

19 5–7 पॉच बेटे[142]

पैश्योने अपने पॉच बेटों को दुनियॉ कोई कला सीखने के लिये भेजता है। उसका हर बेटा कुछ न कुछ अनुभव ले कर लौटता है। वे एक राजा की बेटी को गुल के चंगुल से छुड़ाने के लिये जाते हैं। लौटते समय आपस में लड़ते हैं कि किसने सबसे ज़्यादा बड़ा काम किया जो उसका पति बन सके। पर राजा उसे उनके पिता को दे देता है क्योंकि वे सब उसी तने की टहनियॉ थे।

जैसे ही ऐन्टोनैला ने अपनी कहानी खत्म की चूल्ला[143] अपनी कुर्सी पर सीधी बैठ गयी और चारों तरफ देखने के बाद कि सब लोग उसकी तरफ ध्यान दे रहे हैं या नहीं उसने बोलना शुरू किया —

जो कोई भी राख पर बैठता है वह बहुत ही बेवकूफ और भूलने वाला होता है। जो चलता नहीं है वह देखता नहीं। जो देखता नहीं है वह जानता नहीं है। जो दुनियॉ में चारों तरफ घूमता है वह होशियार हो जाता है।

अगर वह उसका अभ्यास कर लेता है तो बहुत ही होशियार डाक्टर हो जाता है। जो अपने घर से बाहर निकलता है वह तेज़ चतुर और फुर्तीला हो जाता है। इसे मैं अपनी कहानी की सहायता से आपको समझाती हूॅ जो मैं अभी सुनाने वाली हूॅ।

---

[142] Fove Sons. Tale No 19. (Day 5, Diversion 7) Told by Ciulla

[143] Ciulla – name of the female storyteller

एक बार की बात है सबका भला चाहने वाला एक आदमी रहता था जिसका नाम पैश्योने[144] था जिसके पाँच बहुत बेकार के बेटे थे। बेचारा पिता इतना गरीब था कि वह उनको खाना भी नहीं खिला सकता था।

सो एक दिन उसने उनसे छुटकारा पाने के लिये उनसे कहा — "मेरे बेटों। यह तो मैं नहीं जानता कि मैं तुम्हें प्यार करता हूँ या नहीं क्योंकि तुम सब मेरे ही बेटे हो। पर अगर मैं बूढ़ा हूँ और ज़्यादा काम नहीं कर पाता हूँ। और तुम लोग ज़्यादा खाते हो तो मैं अब तुम्हें उस तरह से नहीं पाल सकता जैसे पहले पाल सकता था।

सो अब तुम लोग दुनियाँ में जाओ और अपने अपने गुरू ढूँढो और उनसे कोई न कोई कला सीखो। पर ध्यान रहे कि किसी काम को सीखने में एक साल से ज़्यादा नहीं लगाना। जब तुम लोग घर लौटोगे तो मैं आशा करता हूँ कि तुम लोग किसी न किसी कला में जरूर ही होशियार हो कर लौटोगे।"

पाँचों बेटों ने अपने पिता को विदा कहा और कुछ सीखने की आशा में एक एक जोड़ी कपड़े ले कर चल दिये। हर एक अपने अपने रास्ते चल दिया।

एक साल खत्म होने पर वे सब अपने पिता के घर पर मिले जहाँ उनके पिता ने उनका बड़े प्यार से स्वागत किया। वे सब थके हुए और भूखे थे सो सब खाना खाने बैठे।

---

[144] Pacione – name of the man

जब वे करीब करीब अपना आधा खाना खा चुके तो उन्होंने एक चिड़िया के गाने की आवाज सुनी। उन पाँचों में से सबसे छोटा भाई उठा और चिड़िया को मारने के लिये गया। जब वह वापस लौटा तो मेज पर से खाना उठ चुका था।

पैश्योने ने अपने बेटों से पूछना शुरू किया — "तुम सबको देख कर मेरा दिल खुश हो गया। पर अब तुम मुझे यह बताओ कि तुम लोगों ने इस साल में क्या क्या सीखा।"

पैश्योने का सबसे बड़ बेटा लूचो[145] बोला — "पिता जी। मैंने एक दुष्ट की कला सीखी है जहाँ मैं दुष्टों का सरदार बन गया था और चोरों का हैडमास्टर बन गया था।"

चौथा बोला — "मैंने पिता जी लूटने की कला सीखी है। आपको मेरे जैसा लूटने वाला कोई नहीं मिलेगा। मैं कई तरह की गाँठें खोल सकता हूँ शाल चुरा सकता हूँ जेब काट सकता हूँ दूकान बक्से बटुए खाली कर सकता हूँ। जहाँ तक मैं पहुँच सकता हूँ वहाँ वहाँ से चीज़ें उठा सकता हूँ।"

पिता बोला — "अरे तुम तो बहुत बहादुर हो। तुमने तो व्यापार की कला सीख ली है तुमने तो उँगलियों की कला सीख ली है। चाभी घुमाना खिड़कियों को नापना और रस्सियों को लम्बा करना सीख लिया है।

---

[145] Luccio – the eldest son of Pacione

अफसोस है मुझे। यह ज़्यादा अच्छा होता अगर मैं तुझे चरखा चलाना सिखाता। वह इससे कहीं ज़्यादा अच्छा होता क्योंकि अब तो मैं तुझे कागज का टोप पहन कर अदालत के चक्कर ही लगाते देखता रहूँगा कि तू झूठा है और फिर एक दिन तेरे गले में फाँसी की रस्सी भी देखनी पड़ेगी।"

फिर वह अपने दूसरे बेटे टिटिल्लो[146] की तरफ घूम कर बोला — "और तुमने कौन सी बढ़िया कला सीखी।"

टिटिल्लो बोला — "पिता जी मैंने नाव बनानी सीखी।"

पिता बोला — "यह अच्छा है। यह अच्छी और जानी पहचानी कला है। तुम अपनी इस कला के सहारे सारी ज़िन्दगी बिता सकते हो। और तुमने रैनज़ोने[147]। रुमने इतने दिनों में क्या सीखा।"

उसका तीसरा बेटा रैनज़ोने बोला — "मैं अपने तीर कमान से इतना सीधा निशाना लगा सकता हूँ कि वह मुर्गे को भी अन्धा कर सकता है।"

पिता बोला — "बहुत अच्छे। कम से कम तुमने कुछ तो अच्छा सीखा। तुम कम से कम शिकार कर के और चिड़ियें मार कर ही अपना गुजारा कर सकते हो।"

फिर वह अपने चौथे बेटे की तरफ घूमा और उससे भी वही सवाल पूछा।

---

[146] Titillo – name of the second son

[147] Ranzone – name of the third son

तो उसका चौथा बेटा घियाकूचो[148] बोला — "पिता जी मैं एक ऐसी बूटी जानता हूँ जो मरे हुए को भी ज़िन्दा कर सकती है।"

पिता बोला — "बहुत अच्छे घियाकूचो बहुत अच्छे। तुम तो पादरी बन गये। अब हम लोगों को किसी चीज़ की कमी नहीं रहनी चाहिये। इसके अलावा अब हम लोगों को कापुआ के वरलासचो से भी ज़्यादा दिन ज़िन्दा रख सकेंगे।"

अब पिता ने अपने सबसे छोटे बेटे जिसका नाम मैनैकूचो[149] था से पूछा — "और तुमने क्या सीखा बेटे।"

वह बोला — "मैंने चिड़ियों की भाषा सीखी पिता जी।"

पिता ने कहा — "जब हम खाना खा रहे थे तो तुम चिड़िया की बोली सुनने के लिये उठ गये थे। और जैसा कि तुम कह रहे हो कि तुम चिड़िया की बोली समझते हो तो तुम मुझे बताओ कि वह चिड़िया क्या कह रही थी।"

मैनैकूचो बोला — "पिता जी वह कह रही थी कि एक गुल औटोगोल्फ़ो के राजा[150] की बेटी को उठा कर एक पहाड़ी की चोटी के ऊपर ले गया है जहाँ से उसकी कोई खबर नहीं सुनी जा सकती। राजकुमारी के पिता ने यह घोषणा करवा दी है कि जो कोई उनकी बेटी को उस गुल से छुड़ा कर लायेगा वह अपनी बेटी उसे दे देंगे।"

---

[148] Ghiacuccio – name of the fourth son
[149] Menecuccio – name of the fifth son
[150] King of Autogolfo

लूचो चिल्लाया — “अगर यह सच है जैसा कि तुम कह रहे हो तब तो हम बहुत अमीर हो जायेंगे। क्योंकि गुल के हाथों से उसे छीन कर लाने के लिये तो मैं अकेला ही काफी हूँ।”

पिता बोला — “अगर तुम्हारा विश्वास है कि तुम यह काम अकेले कर सकते हो तो हमको तुरन्त ही राजा के पास चलना चाहिये। और अगर वह हमसे यह वायदा करे कि हम अगर उसे बचा लायेंगे तो वह अपनी बेटी हमें दे देगा तो हमें उससे कहना चाहिये कि हम उसका यह काम करने के लिये तैयार हैं।”

सो सब एक राय हो गये। टिटिल्लो ने बहुत जल्दी एक नाव बनायी जिसमें सब बैठ गये और जल्दी ही औटोगल्फ़ो आ पहुँचे जहाँ उन्होंने राजा से मिलने की इच्छा प्रगट की। जब वे उसके सामने गये तो उन्होंने उससे कहा कि वे उसकी बेटी को छुड़ा कर लायेंगे। क्या राजा अपना वायदा निभाने के लिये तैयार है।

राजा ने हामी भर दी तो वे सब तुरन्त ही उस पहाड़ी की तरफ चल दिये जहाँ राजकुमारी कैद थी।

उनकी किस्मत अच्छी थी उनको उस पहाड़ी पर गुल मिल गया। वह धूप में पड़ा सो रहा था। उसका सिर चन्ना[151] की छाती पर रखा हुआ था। चन्ना ने जब एक नाव पानी में आती देखी तो उसे देख कर वह बहुत खुश हो गयी। पर पैश्योने ने उसे इशारे से चुप रहने के लिये कहा।

---

[151] Cianna – name of the Princess

जमीन पर अपनी नाव लगाने और गुल के सिर के नीचे एक बड़ा पत्थर लगाने के बाद उन्होंने चन्ना से खड़े होने के लिये और अपने साथ नाव पर चलने के लिये कहा। फिर जैसे ही सब उसमें बैठ गये तो उन्होंने पतवार से नाव खेनी शुरू कर दी।

वे अभी बहुत दूर नहीं गये थे कि गुल की आँख खुल गयी। चन्ना को अपने पास न देख कर उसने समुद्र के किनारे की तरफ देखा तो उसे एक नाव उसे ले जाती दिखायी दे गयी।

उसने अपने आपको एक काले बादल में बदला और हवा में उड़ता हुआ नाव के ऊपर पहुँच गया। चन्ना ने जो गुल की चालाकियों को अच्छी तरह जानती थी बादल में छिपे हुए गुल को पहचान लिया।

यह देख कर वह बहुत डर गयी। उसकी इतनी भी हिम्मत नहीं पड़ी कि वह पैश्योने और उसके बेटों को सावधान कर दे। बस वह तो बेहोश हो गयी।

रैनज़ोने ने जब बादल को पास आते देखा तो उसने अपना तीर कमान उठाया उसकी रस्सी खींची और गुल की आँख में तीर मार दिया। इससे वह अन्धा हो गया। इससे उसे इतना दर्द हुआ कि वह ऊपर से नीचे पानी में गिर पड़ा। और वे खड़े बादल की तरफ देखते रहे।

जब गुल पानी में गिर पड़ा तो उन्होंने चन्ना की तरफ देखा तो वह तो सफेद और ठंडी उनके पैरों के पास पड़ी थी। वह मर गयी

थी। यह देख कर पैश्योने ने अपना चेहरा पीट लिया और दाढ़ी नोच ली – देखो सोना और तेल दोनों खो गये हैं।

हमने जो इतनी मुश्किलें उठायीं हैं वह सब बेकार चली गयीं। हमारी सब आशाऐं समुद्र में डूब गयीं। वह तो स्वर्ग चली गयी। अब हम भूखे मर जायेंगे। उसने तो हमें गुड नाइट कह दी ताकि हमारा दिन खराब गुजरे। उसकी तो ज़िन्दगी का धागा टूट गया और हमारी आशाओं का धागा टूट गया।

अब तो यह साफ ही हो गया कि गरीब लोगों के सपने और प्लान कभी सफल नहीं होते। अब तो यह भी साबित हो गया है कि जो कोई बदकिस्मत पैदा होता है वह मरता भी बदकिस्मत ही है।

देखो राजा की बेटी आजाद तो हो गयी है हम औटोगल्फ़ो भी वापस जा रहे थे हमने पत्नी भी जीत ली थी यह सब जान कर लोग कितने खुश होते अगर हमने यह राजदंड भी जीत लिया होता पर देखो तो हम लोग कैसे पीठ के बल नीचे गिर पड़े हैं।

घियाकूचो ने सब दुखी लोगों का रोना सुना पर यह देखते हुए कि अब ये लोग काफी देर तक रो धो चुके तो उसने धीरे से अपने पिता से कहा — "पिता जी। धीरे से। हम औटोगल्फ़ो जायेंगे और जैसा कि आप सोच रहे हैं उससे ज़्यादा अच्छी तरह से रहेंगे।"

पैश्योने बोला — "भगवान करे सुलतान को धीरज मिले जब हम यह लाश उसे देंगे। वह तो अपनी बेटी की आशा लगाये बैठे होंगे। वह हमारे ऊपर मुकदमा तो ठोक देंगे पर हमें पैसे नहीं देंगे।

जबकि अनुकूल हवा से इस खाड़ी में से जहाज़ पार हो जाते हैं और हम तो इस खाड़ी में डूब जायेंगे।"

घियाकूचो बोला — "पिता जी। चुप हो जाइये। आपने अपने दिमाग कहाँ चरने के लिये भेज दिया है। क्या आपको याद है कि मैंने कौन सी कला सीखी है। मैं अपनी बूटी अभी निकालता हूँ जिसे मैंने अपने दिमाग में रखी हुई है और फिर आप उसका कमाल देखेंगे।"

पिता ने उसके ये शब्द सुन कर उसे गले से लगा लिया अपना दिल मजबूत किया और जल्दी ही पतवार चला चला कर किनारे पर आ पहुँचा। वहाँ पहुँच कर घियाकूचो नाव में से उतरा और उस बूटी को ढूँढने लगा।

जब वह उसे मिल गयी तो वह उसे ले कर नाव में आ पहुँचा। उसका रस निचोड़ चैना के मुँह में डाला तो वह जैसे किसी कुत्ते के मुँह में पड़ी हुई थी उस हालत से अब ज़िन्दा हो कर उठ कर बैठ गयी थी।

फिर वे वहाँ से राजा के महल की तरफ चले। राजा ने सबका बहुत ही खुशी से स्वागत किया। वह अपनी बेटी को गले से लगाते और चूमते थक नहीं रहा था। उसने अपनी बेटी को अपने पास लाने के लिये इन लोगों को भी बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

पर जब उससे अपना वायदा पूरा करने के लिये कहा गया तो उसने पूछा — "इनमें से किसको मैं अपनी बेटी दूँ। यह कोई बाजरे

की खीर तो है नहीं जो मैं एक एक टुकड़ा सबको दे दूँ। इसे तो कोई एक ही लेगा।"

सबसे बड़ा बेटा जो बहुत चालाक था बोला — "इनाम हर एक को उसकी मेहनत के अनुसार मिलना चाहिये। इसलिये आप अपने आप निश्चय कीजिये कि किसने इस सुन्दर राजकुमारी को लाने में सबसे ज़्यादा मेहनत की है। उसके बाद ही आप न्याय कीजिये ताकि हम सब भी खुश रहें।"

राजा बोला — "तुम तो रोलैंड की तरह बड़ी होशियारी से बोल रहे हो। तो मुझे बताओ कि किसने क्या किया ताकि मैं किसी को गलत न जॉच लूँ और न्यायपूर्वक फैसला कर सकूँ।"

तो सबने अपने अपने काम बताये कि उन्होंने क्या क्या किया। आखीर में राजा ने पैश्योने से पूछा — "और इस सब में तुमने क्या किया।"

पैश्योने बोला — "सरकार मुझे लगता है कि मैंने तो इसमें बहुत कुछ किया है। मैंने अपने इन बेटों को जो कला इन्हें आती है वह सिखा कर आदमी बनाया नहीं तो ये लोग तो बिल्कुल ही बेवकूफ थे। ये ऐसा फल कहॉ से ला सकते थे।"

राजा ने दोनों तरफ की बातें सुन कर अपने मन में दोनों को तौला और चैना को उसकी ज़िन्दगी और तन्दुरुस्ती के लिये पैश्योने को दे दिया। और जब यह सब कुछ हो गया तो बेटों को उनकी मेहनत का पैसा दे दिया गया।

पिता इस सबसे इतना खुश हुआ कि वह तो अपने आपको सोलह साल का नौजवान समझने लगा और उसको एक कहावत याद आ गयी —

दो आदमियों की लड़ाई में तीसरे का फायदा

Translations of Il Pentamerone

This Italian collection of folk-tales, now known as Il Pentamerone was first published at Naples, and in a Neapolitan dialect that kept it out of northern European tradition for two centuries, by Giambattista Basile, Conte di Torrone, who is believed to have collected them chiefly in Crete and Venice, and to have died in the 1630s.

Originally it was called Lo Cunti de li Cunto (The Story of Stories, 1634). Published posthumously, it became known as the Pentamerone by 1674 and eventually influenced the form of fairy tales in Europe. The frame-story is of a group of people passing time by sharing stories, as in the Decameron and other European collections of tales. The Pentamerone tells 50 tales over five nights.

The following illustrated version only contains 32 of the tales, follows the translation by John Edward Taylor published in 1847, and was published by Macmillan and Co, London, in 1911. The Pentamerone, despite being an influential classic, seems to have been largely ignored by translators and publishers, and no public domain full text is yet available online.

First Published in Neapolitan language in 1634 and 1636 by Giambattista
First translation in German language, in 1846, by Felix Liebrecht
Second translation in English language, in 1847, by John Edward Tayor – 32 tales
Third Translation in English language, in 1893, by Sir Richard Burton – 50 tales
Fourth translation in Italian language in 1925, by Benedetto Croce
Fifth translation in English language in 1934, by Norman Penzer (from Croce's version)
Sixth translation in modern English in 2007, by Nancy L Canepa
later released as Penguin Classics in 2016
Seventh translation in Hindi language in 2022, by Sushma Gupta

Thus its four English translations are available. These Italian tales predate Charles Perrault by at least 50 years and the Grimm Brothers tales by 200 years. The book is not as well known today since it was originally written in the difficult Neapolitan dialect and was not translated into English until 1847 by John Edward Taylor. Its first two parts were translated from John Edward Taylor's translation of 1847 from the Web Site - http://www.surlalunefairytales.com/pentamerone/index.html which contains only 32 tales.

To add to this book Sir Richard Burton's book was found and remaining 19 tales were translated from that collection taken from the Web Site –

http://burtoniana.org/books/1893-Pentamerone/burton-1893-Pentamerone-2in1-fixed.pdf Thus the whole collection appears in three volumes.

Full List of Stories of Il Pentamerone

The Red titles are in volume 1,
the Blue titles are in volume 2, and
the Black titles are in volume 3.

The First Day

1. "The Tale of the Ogre"
2. "The Myrtle"
3. "Peruonto"
4. "Vardiello"
5. "The Flea"
6. "Cenerentola" – translated into English as Cinderella
7. "The Merchant"
8. "Goat-Face"
9. "The Enchanted Doe"
10. "The Flayed Old Lady"

The Second Day

1. "Parsley" – a variant of Rapunzel
2. "Green Meadow" – author says that this title was changed to "Three Sisters"
3. "Violet"
4. "Pippo" – a variant of Puss In Boots
5. "The Snake"
6. "The She-Bear" – a variant of Allerleirauh
7. "The Dove" – a variant of The Master Maid
8. "The Young Slave" – a variant of Snow White
9. "The Padlock"
10. "The Buddy"

The Third Day

1. "Cannetella"
2. "Penta of the Chopped-off Hands" – a variant of The Girl Without Hands
3. "Face"
4. "Sapia Liccarda"
5. "The Cockroach, the Mouse, and the Cricket"
6. "The Garlic Patch"
7. "Corvetto"
8. "The Booby"
9. "Rosella"
10. "The Three Fairies" – a variant of Frau Holle

The Fourth Day

1. "The Stone in the Cock's Head"
2. "The Two Brothers"
3. "The Three Enchanted Princes"
4. "The Seven Little Pork Rinds" – a variant of The Three Spinners
5. "The Dragon"
6. "The Three Crowns"
7. "The Two Cakes" – a variant of Diamonds and Toads
8. "The Seven Doves" – a variant of The Seven Ravens
9. "The Raven" – a variant of Trusty John
10. "Pride Punished" – a variant of King Thrushbeard

The Fifth Day

1. "The Goose"
2. "The Months"
3. "Pintosmalto" – a variant of Mr Simigdáli
4. "The Golden Root" – a variant of Cupid and Psyche
5. "Sun, Moon, and Talia" – a variant of Sleeping Beauty
6. "Sapia" – given under the title "The Wise Woman"
7. "The Five Sons"
8. "Nennillo and Nennella" – a variant of Brother and Sister
9. "The Three Citrons" – a variant of The Love for Three Oranges

Classic Books of European Folktales in Hindi
Translated by Sushma Gupta

1353 **Il Decamerone.**
No 33 By Giovanni Boccaccio.
Translated in 3 volumes

1550 **Nights of Straparola**
No 21 By Giovanni Francesco Straparola. 1550, 1553. 2 vols.
First Translator : HG Waters. London : Lawrence and Bulletin.

1634 **Il Pentamerone.**
No 9 By Giambattista Basile. 50 tales. Translated in 3 volumes
First two volumes from John Edward Taylor – 32 tales
The third volume from Sir Richard Burton – remaining 19 tales

1874 **Serbian Folklore.**
No 2 By Madam Csedomille Mijatovies. London : W Ibisters. 26 tales.
"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich.
London : George and Harry. 1914 (1916, 1921).
It contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

1885 **Italian Popular Tales.**
No 27 By Thomas Frederick Crane. 109 tales. 4 volumes

1894 **Georgian Folk Tales**.
No 18 Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales.
Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तकों की पूरी सूची के लिये इस पते पर लिखें ः :
hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **1901**। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंग्रेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न्। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारी डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales**.**
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। तीन भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। दो भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। चार भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियाँ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। दो भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियॅा या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales.
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियॅा – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898)** 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales.
किस्सये चार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियॅा — थोमस फैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियॅा — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. Translated in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911.
Under the Title “The Enchanted Parrot”.
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights’ Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

33. Il Decamerone
By Giovanni Boccaccio. **1353**. 100 Tales.
इल डैकामिरोन — जिओवानी बोकाकिओ। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Punjab
By Charles Swynnerton. Collected from his two books “Romantic Tales of the Panjab” and “Indian Nights’ Entertainment”. **1903 and 1892** respectively.

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाअें की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022